"सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि तथा विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति का तुलनात्मक अध्ययन"

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

की

पी-एच० डी० (शिक्षाशास्त्र)

उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबंध

2007

शोधकर्त्री

श्रीमती ममता चन्देल

एम.ए., एम.एड.

मार्गदर्शक

प्रो. डी.एस.श्रीवास्तव

पूर्व संकायाध्यक्ष

विभागाध्यक्ष, शिक्षक शिक्षा विभाग
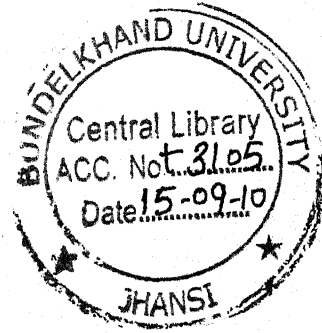
अतर्रा कालेज, अतर्रा (बाँदा)

शिक्षा संस्थान

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि प्रस्तुत शोध कार्य प्रो0 डी0एस0 श्रीवास्तव, पूर्व संकायाध्यक्ष एवं विभागाध्यक्ष शिक्षक शिक्षा विभाग अतर्रा कालेज, अतर्रा (बाँदा) के कुशल निर्देशन में पूर्ण किया गया है। यह मेरी मौलिक कृति है, तथा किसी भी विश्वविद्यालय की किसी भी परीक्षा के आँशिक/पूर्ण पूर्ति हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया।

मैंने शोध केन्द्रों में 200 दिन उपस्थित रहकर विधिवत् ढंग से मैने यह कार्य पूर्ण किया है।

दिनांक– 21.02.2007

शोध कर्त्री

ममता चन्देल

(श्रीमती ममता चन्देल)

Prof. D.S. Srivastava
Head & Dean Faculty of Education
Director
Institute of Education
Bundelkhand University, Jhansi

Tel.: (O) 2320496 (PP)
(O) 2321158 (PP)

University Campus
BUNDELKHAND UNIVERSITY
JHANSI- 284 128

Ref.
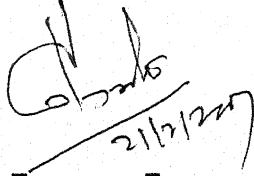
Date........................

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्रीमती ममता चन्देल ने मेरे निर्देशन में "सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि तथा विद्यार्थियो की शैक्षिक सम्प्राप्ति का तुलनात्मक अध्ययन।" विषय पर शोध कार्य सम्पन्न किया है। इनका शोध कार्य मौलिक है तथा इनके स्वयं के परिश्रम का परिणाम है।

श्रीमती ममता चन्देल द्वारा 200 दिन उपस्थित रहकर अपना शोध कार्य पूर्ण किया है। यह शोध ग्रन्थ बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के शोध-अध्यादेश के सम्पूर्ण प्राविधानों की पूर्ति करता है।

21/2/2007

दिनांक - 21.02.2007

(प्रो0 डी0एस0 श्रीवास्तव)
पूर्व संकायाध्यक्ष

अनुक्रमणिका

अध्याय-चतुर्थ

अध्याय-पंचम्

सारिणी-सूची

प्राक्कथन

शिक्षा देश के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं कला व विज्ञान सम्बन्धी विकास का महत्वपूर्ण घटक है। शिक्षा से किसी देश की भावनाओं और सामाजिक मूल्यों का अनुमान लगाया जाता है। शिक्षा वास्तविक जन शक्ति निर्माण का साधन है, स्वस्थ जनतंत्र का नियामक है और जनतंत्रात्मक प्रणाली का संचालक है। किन्तु वर्तमान समय में व्यक्ति तथा समाज दोनों काफी जटिल एवं संघर्षपूर्ण संक्रमण से गुजर रहे हैं।

शिक्षा एवं शिक्षण व्यवस्था की प्रक्रिया शिक्षकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। पहले की तुलना में शिक्षक के दायित्व एवं कार्य अधिक जटिल बन गये हैं तथा इनकी कठिनाइयाँ और जटिलतायें समय परिवर्तन के साथ-साथ बढ़ती ही जा रही हैं। शिक्षक, शिक्षा प्रक्रिया की मुख्य धुरी है। हम देखते हैं कि आज के शिक्षकों को वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास के प्रति जागरूक रहना आवश्यक हो गया है। आधुनिक समय में विकास की द्रुत गति से उत्पन्न सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं शैक्षिक समस्याओं के निराकरण हेतु शिक्षकों को तैयार करना आवश्यक हो गया है। परिवर्तन के फलस्वरूप उत्पन्न सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं आर्थिक परिस्थितियों का व्यापक प्रभाव शिक्षक पर पड़ता है किन्तु इसके साथ मानवीय मूल्यों एवं आदर्शों के प्रति सजगता भी उसे बनाये रखनी पड़ती है।

शिक्षक विद्यालय की व्यवस्था समिति द्वारा चुना गया वह व्यक्ति है जो छात्रों का शारीरिक, मानसिक, सांवेगिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास करने में संलग्न रहता है। छात्रों को सिखाने की प्रक्रिया में उसे कई प्रकार की भूमिका निभानी पड़ती है। इस प्रक्रिया में छात्रों के अधिगम को वह निर्देशित करता है। शिक्षक विद्यालय की परिस्थितियों के अनुसार एक या एक से अधिक विषयों को बढ़ाता है, वह विद्यालय में पाँच या छः घंटे रहता है। वह कक्षा में अध्यापन कार्य के अलावा विद्यालय के अन्य कार्यो को भी करता है। आवश्यकता पड़ने पर उन्हें बहुत से संस्थागत एवं

प्रशासनात्मक कार्य करने पड़ते हैं, जैसे स्कूल की समय-सारिणी निर्धारित करना, परीक्षा लेना, अंक पत्र बनाना, विभिन्न प्रतियोगी परीक्षा कराना, विभिन्न रिकार्ड रखना, छात्रों-शिक्षकों एवं अभिभावकों के साथ सम्पर्क स्थापित रखना इत्यादि। अतः अध्यापन कार्य को प्रभावकारी बनाने हेतु आवश्यक है कि शिक्षक इन कार्यो में रूचि लें, इनके प्रति वे समर्पित हों तथा उनमें व्यावसायिक संतुष्टि हो। देश अथवा समाज के उत्थान के लिए यह आवश्यक है कि उसमें जो भी व्यक्ति जिस कार्य को कर रहा हो, उसके अन्दर उस कार्य के प्रति लगन, निष्ठा, ईमानदारी, पर्याप्त क्षमता एवं कर्तब्य परायणता विद्यमान हो अथवा वह अपना कार्य ठीक से नहीं कर सकेगा। परिणामस्वरूप वह देश और समाज पिछड़ जायेगा। इतना ही नहीं अनेक प्रकार की कुरीतियाँ मनोशारीरिक रोग व भावना ग्रन्थियाँ भी बन जायेगी। मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में कार्य-संतुष्टि एक प्रकार की अभिप्रेरणा है, जिसके फलस्वरूप कार्यकर्ता अपना कार्य सम्पादित करने में आनन्द की अनुभूति करता है।

ऐसा देखने में आता है कि व्यक्ति जिस भी व्यवसाय में रहता है, उस व्यवसाय के प्रति कभी-कभी उसमें अनास्था पैदा हो जाती है। चूँकि जीविकोपार्जन का कोई दूसरा विकल्प उसके सामने नहीं रहता, इसलिए विवश होकर वह अपने मनचाहे व्यवसाय में ही लगा रहता है। गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालय के शिक्षकों में शोधकर्ता को बहुत कुछ यही तथ्य प्राप्त हुए हैं। व्यक्तिगत सम्पर्क करने पर यह ज्ञान हुआ कि अनेक ऐसे शिक्षक हैं जो अपने अध्यापन के कार्य से संतुष्ट नहीं हैं यदि कुछ संतुष्ट हैं तो केवल आंशिक रूप से, केवल कुछ ही शिक्षक ऐसे हैं जिन्हें अपने अध्यापन के कार्य व्यवसाय में पूर्ण संतुष्टि है। इसी निरीक्षण के फलस्वरूप शोधकर्ता के मन में जिज्ञासा हुई कि एक ऐसा शोध कार्य किया जाये, जिससे यह पता चल सके कि शिक्षकों में किस सीमा तक संतुष्टि है तथा संतुष्टि को प्रभावित करने वाले कौन-कौन से मुख्य कारक हैं। प्रस्तुत कार्य इस दिशा में एक प्रयास किया गया है।

अनुसंधाता के लिए अपनी हृदयस्थ भावनाओं एवं अनुभूतियों को कुछ शब्दों में समेट कर व्यक्त करना एक बहुत ही कठिन कार्य हैं फिर भी आभार की दृष्टि से औपचारिकता के निर्वाह क्रम में शोधकर्त्री पूर्ण विनम्रता सहित उन सभी के प्रति आभार व्यक्त करना अपना नैतिक कर्तब्य समझती है। जिनके सहयोग एवं शुभकामनाओं से प्रस्तुत कार्य पूर्ण हो सका है।

सर्वप्रथम शोधकर्त्री इस शोधकार्य के निर्देशक परमपूज्य प्रो0 डी0एस0श्रीवास्तव के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती है, जिनका उचित मार्ग-निर्देशन, प्रोत्साहन एवं असीम स्नेह प्राप्त कर शोध-प्रबन्ध को पूर्ण किया।

शोधकर्त्री अतर्रा कालेज, अतर्रा के प्राचार्य श्रद्धेय श्री ए0सी0निगम के प्रति विशेष आभार एवं कृतज्ञता प्रदर्शित करती है, जिनके आशीर्वाद, श्रेष्ठ मार्गदर्शन, निरन्तर प्रोत्साहन एवं उदार सहयोग से अध्ययन के विभिन्न पदों पर उत्पन्न समस्याओं के निराकरण, परिमार्जन एवं परिष्करण में सहायता मिली है। उनकी प्रेरणा के बिना मैं शोध प्रबन्ध को पूरा करने के विषय में सोच नहीं सकती थी, इसलिए मैं उनकी जीवनपर्यन्त चिर ऋणी रहूँगी।

शोध प्रबन्ध की पूर्णता के लिए मैं अपने विभाग के समस्त गुरूजनों की सदैव आभारी रहूँगी। उनके सहयोग एवं समय-समय पर मिलने वाले सुझावों ने प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को पूरा करने में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान की है।

शोधकर्त्री अपने प्राध्यापक श्रद्धेय प्रो0 शशिकान्त शर्मा, डा0 जे0पी0 शर्मा एवं डा0 एस0एस0कुशवाहा तथा श्रीमती मन्जरी सिन्हा की भी हृदय से आभारी है जिनके यथोचित मार्गदर्शन एवं सहयोग से यह शोध कार्य पूर्ण हो सका है।

शोधकर्त्री अपनी परमपूज्या माता श्रीमती शान्ती देवी एवं परमपूज्य पिता श्री चुनकू राम, अनुज श्री सुनील कुमार सिंह एवं अनुजा कु0 सुमन एवं कु0 कल्पना के प्रति किन शब्दों में कृतज्ञता ज्ञापित करें, समझ में नहीं आता क्योंकि इनके

प्रोत्साहन, सहयोग प्रेरणा एवं असीम स्नेह के कारण ही वह इस स्तर तक की शिक्षा ग्रहण कर पायी है।

शोधकर्त्री अपने पति श्री रामनरेश सिंह को धन्यवाद ज्ञापित करती है, जिन्होंने प्रदत्तों के संकलन, अंकन व भाषा परिष्करण में सहयोग देकर शोध कार्य पूर्ण कराया। शोधकर्त्री अपने ससुर श्री महन्त प्रसाद सिंह के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करती है जिनके ध्यानाकर्षण, प्रोत्साहन, प्रेरणा के कारण शोध कार्य पूर्ण हो सका। साथ ही अपनी बेटी भूमिका के प्रति हार्दिक प्यार प्रदर्शित करती है, जिनकी चुलबुली हरकतों से अवसाद के क्षणों में भी मनोरंजन कर शोधकर्त्री की कार्य क्षमता में वृद्धि की है।

शोधकर्त्री उन सभी प्राचार्यों एवं शिक्षकों के प्रति अपना आभार प्रदर्शित करता है जिन्होंने प्रदत्तों के संकलन में सहायता प्रदान की एवं उन सभी लेखकों एवं विद्वानों के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करती है, जिनके ग्रन्थों, शोध-पत्रों तथा परीक्षणों से इस शोध कार्य में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सहायता प्राप्त हुई है। अन्त में शोधकर्त्री श्री पंकज कुमार सिंह, श्री तुलसी टाइप सेंटर एवं कम्प्यूटर्स, अतर्रा (बाँदा) के प्रति आभार प्रकट करती है जो अल्पावधि में स्वच्छ एवं त्रुटिरहित टंकण करके शोध प्रबन्ध को पूर्ण किया।

ममता चन्देल

दिनांक : 21 फरवरी, 2007 **(श्रीमती ममता चन्देल)**

अध्याय–प्रथम

प्रस्तावना

1.1 भूमिका :

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय से ही हमारा देश अपनी जनता के जीवन स्तर से समुन्नत बनाने हेतु प्रयत्नशील है। किसी देश की जनता के रहन-सहन का स्तर उच्च बनाने के प्रयासों की सफलता किस सीमा तक वहाँ के लोगों के गुणों, क्षमताओं, विशेषताओं पर आधारित होती है और ये गुण वस्तुतः उस देश में प्रचलित शिक्षा व्यवस्था के स्तर से ही प्रभावित रहते हैं। भारत विश्व का सबसे बड़ा प्रजातांत्रिक देश है। स्तंत्रता प्राप्ति के बाद जनतंत्र की जड़े निश्चित रूप से मजबूत हुई हैं, किन्तु इसके परिणाम सुखद ही रहे हैं, ऐसा कहना उचित नहीं है। आज के परिवेश में हमारा जनतांत्रिक ढ़ाँचा बिल्कुल विकृत हो गया है। जनतंत्र का संचालन एवं नेतृत्व करने वाले आज देश को जाति एवं धर्म का सहारा लेकर विखंडित करना चाह रहे हैं। जातीय एवं सामुदायिक गतिशीलता के साथ-साथ क्षेत्रवाद के विषैला वातावरण ने लोगों के बीच की दूरी को बढ़ा दिया है। देश चारित्रिक पतन के कगार पर खड़ा है। देश में जनतंत्र के चलाने वाले बड़े-बड़े राजनेता यहाँ तक देश के प्रधानमंत्री एवं राज्यों के बहुत से मुख्यमंत्री, घोटाला करने के जुर्म में जेल गये। क्या यही जनतांत्रिक समृद्धि है? क्या यही जनतंत्र की चेतना है? क्या यही जनतंत्र का उद्देश्य है? ये सभी प्रश्न आज के जनतंत्र के लिए चुनौती है। **'जनतंत्र'** या **'प्रजातंत्र'** दो शब्दों के मेल से बना है (जन) या (प्रजा) और (तंत्र) जिसका सामान्य अर्थ है- जनता का शासन। जनतंत्र जनता के सुख-सुविधाओं एवं उसके विकास एवं समृद्धि के लिए होता है। जबकि आज के सन्दर्भ में जनतंत्र जनता का तंत्र न होकर व्यक्ति के तंत्र के रूप में बदल गया है। राजनैतिक परिवेश गन्दा हो गया है और इसने व्यवसायिक रूप धारण कर लिया है। यह प्रजातंत्र की सफलता के लिए केवल ऐसे नागरिकों की आवश्यकता नहीं है जो मतदान स्थल पर जाकर अपने मत पेटिका

में डाल दें। प्रजातंत्र तभी सफल होगा जब यहाँ के नागरिकों में अपने अधिकार के प्रति जागरूकता आएगी, वे अपने कर्तब्य को समझेगें, वे सही एवं गलत में विभेद करने के साथ-साथ वैज्ञानिक, आर्थिक एवं राजनैतिक एवं राजनैतिक मुद्दों पर अपना स्वतंत्र विचार रख सकें एवं स्वतन्त्र निर्णय ले सकें।

अस्तु किसी देश के भविष्य की रूप रेखा शिक्षा पर निर्भर करती है। शिक्षा ही एक सबल माध्यम है जिससे प्रबुद्ध नागरिकों को तैयार कर केवल जनतंत्र ही नहीं, वरन् देश एवं विश्व में चेतना नवीनता एवं प्रबुद्धता का संचार किया जा सकता है। शिक्षा एक दिव्य ज्योति है जो व्यक्ति के अन्तःकरण को प्रकाशित करने के साथ-ही-साथ वाह्य जगत को भी अपने प्रकाश से आलोकित करती है। यह व्यक्ति की मूल क्षमता (शारीरिक, मानसिक एवं अन्य) जो पैदा होने के साथ मिलती है, के सम्बर्द्धन का कार्य करती है। शिक्षा के माध्यम से प्रत्येक समाज अपनी सामाजिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों को एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी तक पहुँचाने का कार्य करती है। शिक्षा के चलते ही मनुष्य अन्य जीवों से अलग है। अगर मनुष्य को शिक्षा से मुक्त या विरत कर दिया जाये तो वह अन्य प्राणियों के सदृश हो जायेगा। मनुष्य से शिक्षा का अलग होना प्रकाश का सूर्य से अलग होने के सदृश है। अगर शिक्षा का स्वरूप सशक्त है, तो वह सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, नैतिक एवं वैयक्तिक परिवर्तन को सही दिशा प्रदान करने में सक्षम होगी, अतः अगर हम चाहते हैं कि प्रजातंत्र की जड़े मजबूत हो और सब जगह सुख, समृद्धि एवं सुख, शान्ति एवं समृद्धि उसी अनुपात में होगी। यहाँ शिक्षा के गहराई का अर्थ है-शैक्षिक स्तर से, शैक्षिक अन्तर्गत प्राथमिक शिक्षा, उच्च माध्यमिक शिक्षा एवं विश्व विद्यालयी शिक्षा आता है, जहाँ प्राथमिक शिक्षा व्यक्ति को अपने व्यक्तिगंत जीवन की आधारशिला रखने में सहायक सिद्ध होती है वही माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक शिक्षा व्यक्ति को वृहद सामाजिक सम्बन्धों समायोजित होने की क्षमता प्रदान करती है और जीवनयापन के लिए दृष्टि भी प्रदान करती है। माध्यमिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है-व्यक्ति को उसके क्षमता के अनुरूप उच्च शिक्षा के लिए तैयार करना और उसे व्यवसायिक जगत में प्रवेश

करने को तैयार करना। वहीं पर उच्च शिक्षा अर्थात् महाविद्यालयी शिक्षा व्यक्ति को वृहद् सामाजिक सम्बन्धों के समायोजित होने की क्षमता के साथ व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में सहायक सिद्ध होता है। इस स्तर पर पहुंचते-पहुंचते छात्रों का मानसिक एवं शारीरिक विकास चर्मोत्कर्ष पर होता है। इसी समय छात्र के अन्तर्गत सम्मान, सहयोग, सहिष्णुता, सहनशीलता, संवेदनशीलता, आचार, विचार कर्तब्य एवं अधिकार आदि का भान हो चुका रहता है। अतः यह कहना अनुचित नहीं होगा कि इस स्तर पर व्यक्ति के व्यक्तित्व, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक गुणों का विकास होता है। प्रजातंत्र की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति में समन्वय, सहयोग, सम्मान, सहिष्णुता एवं सहनशीलता जैसे गुणों का विकास हो। इन सभी गुणों का विकास मुख्यतः उच्च स्तर पर किया जा सकता है। यह व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन का मार्गदर्शन करता है। बिना महाविद्यालयी शिक्षा को मजबूत किये जीवन के सर्वांगीण विकास की कल्पना करना दिन में तारे देखने के सदृश है।

उच्च (महाविद्यालयीय) शिक्षा को सुधारने के लिए भारत सरकार ने समय-समय पर शिक्षा आयोगों एवं शिक्षा-नीतियों का गठन किया। इनके प्रयासों एवं परिणामों से सभी परिचित हैं इन प्रयासों से उच्च शिक्षा के गुणवत्ता में कोई मूल परिवर्तन नजर नहीं आता है। दुःख के साथ कहना पड़ता है कि भारत की स्वतंत्रता के इस स्वर्ण जयंती के समय भी उच्च शिक्षा जर्जर, गतिहीन एवं दिशाहीन स्थिति में है। आज महाविद्यालयी शिक्षा की अनेक समस्याएं हैं। जो सुरसा के सदृश अपना विकराल मुँह दिन दूना, रात-चौगुना बढ़ाती जा रही है। छात्रों की तुलना में शिक्षकों की संख्या घटती जा रही है। शैक्षिक नीतियों में राजनैतिक घुसपैठ से शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा हैं प्रबन्ध एवं प्रशासन में भ्रष्टाचार व्याप्त है। पाठ्यक्रम की अनियमितता, दोषपूर्ण शिक्षा एवं परीक्षा, प्रणाली, गलत तरीके से शिक्षकों का चयन, निम्न स्तरीय शैक्षिक सुविधा, व्याख्यान, केन्द्रित शिक्षण शिक्षा जगत में मूल्य एवं चरित्र की कमी आदि मुख्य समस्याएँ हैं जो उच्च शिक्षा को गहरे गर्त के तरफ ले जा रही है।

किसी भी समाज और देश के विकास का अवलोकन वहाँ के व्यक्तियों की योग्यता के आधार पर किया जाता है। व्यक्तियों की योग्यता उनके ऐश्वर्य और आर्थिक सम्पन्नता पर न निर्भर करके उनके शिक्षा पर निर्भर करती है। शिक्षा एवं शिक्षा व्यवस्था वहाँ के शिक्षकों पर निर्भर करती है। शिक्षक एक प्रकाशमान दीपक है, जो छात्रों को सत्य एवं उचित रास्ता दिखाता है। यदि शिक्षक छात्रों का पथ प्रशस्त करने में सक्षम नहीं है तो वह छात्रों के साथ-साथ पूरे समाज और देश के लिए वरदान सिद्ध होकर अभिशाप हो सकता है। इस प्रकार शिक्षा एवं शिक्षक पर ही देश का भविष्य निर्भर करता है।

शिक्षा जनतन्त्र की रीढ़ समझी जाती है। यह सत्य है कि बिना व्यापक शिक्षा के जनतंत्र का प्रत्यय और प्रयोग समझा नहीं जा सकता। श्रीमान् डी0वी0 का कहना है कि :-

"There is nothing to which Education is subordinate, gave more Education".

इस कथन से यह स्पष्ट है कि शिक्षक समाज का निर्माता है। यह आधारभूत राजनीतिक और सामाजिक आदर्शों का प्रदाता है। अमेरिका के इण्डियाना में "अध्यापक शिक्षा की अभ्युक्ति", विषय पर सम्पन्न हुई कार्यशाला में जनतंत्रात्मक पद्धति में अध्यापक के महत्व एवं उसकी कार्य पद्धति के बारे में निम्नलिखित विचार व्यक्त किये गये :-

आज के समाज में हमें ऐसे अध्यापकों की आवश्यकता है जो शिक्षण और अधिगम के प्रति अपना उत्तरदायित्व समझते हों। निम्नलिखित प्रकार के अध्यापकों की आज के युग में आवश्यकता है :-

1. जिनमें जनतंत्रात्मक प्रत्यय की पृष्ठिभूमि में व्यक्ति के प्रति आदर की भावना हों।

2. जो अपनी अधिक क्षमता से कार्य कर सकें तथा समाज को स्वास्थ्य बनाने में योगदान कर सके।

3. जो गुणात्मक एवं संख्यात्मक दृष्टिकोण से युक्त होकर अपने कार्य को उचित दिशा का निर्धारण कर सके।

4. जिसका व्यक्तित्व छात्रों के सर्वांगीण विकास में सहायक हो।

5. जो अपनी तथा अन्य संस्कृतियों के विभिन्न मूल्यों से अवगत हो तथा उन मूल्यों को अपने अनुभवों पर नई परिस्थितियों में व्याख्यापित कर सकें।

6. जो विद्यालय तथा सामुदायिक कार्यो में प्रभावपूर्ण ढंग से भाग लेने में रूचि रखें।

7. जो विभिन्न प्रकार की सूचनाओं से अवगत हो तथा उत्साहपूर्वक उन सूचनाओं की शैक्षिक दृष्टि से व्याख्या कर सके।

8. जो अपने विषय में पूर्ण रूप से विख्यात हो तथा उस विषय को सरलतापूर्वक छात्रों को अवबोध करा सके।

9. जो अधिगम के लिए उचित दशा का सृजन कर सके तथा जो मानव विकास के उपयुक्त पक्षों से अवगत हों।

10. जो शिक्षा के लिए विभिन्न साधनों में से विद्यालय को भी एक उपयुक्त साधन के रूप में समझे।

उपर्युक्त सिद्धान्तों में आदर्श के सम्पूर्ण क्षेत्र तथा नैतिक मूल्यों का समावेश हो जाता है तथा ये सिद्धान्त और मूल्य जनतंत्रात्मक् पद्धति में एक योग्य शिक्षक के लिए परमावश्यक है। अध्यापक को प्रगतिशील दृष्टिकोण का होना चाहिए तथा प्रत्येक प्रासांगिक वस्तु समाहारक के रूप में होना चाहिए वाकर का कथन है :-

"योग्य शिक्षक वह है जो किसी भी सामाजिक प्रकरण में जीवन की आवश्यकताओं पर बल दे। प्रत्येक समाज में मूल्यों का एक केन्द्रीय बिन्दु होता है, जिसके बिना एक संगठित समाज अपनी सत्ता को प्रतिष्ठापित नहीं कर सकता। एक व्यक्ति जो बहुत है, वह एक विद्वान, एक ऋषि तथा एक सेवक हो सकता है, किन्तु आवश्यक नहीं कि वह एक शिक्षक भी हो। केवल वह व्यक्ति सही माने में शिक्षक कहा जा सकता है जो ज्ञानवान होने के साथ ही शिक्षा देने के तरीके को भी जानता हो।"

हुमायूँ कबीर ने कहा है कि "वे राष्ट्र के भाग्य-निर्णायक हैं, यह कथन प्रत्यक्ष रूप से सत्य प्रतीत होता है, परन्तु अब इस बात पर अधिक बल देने की आवश्यकता है कि शिक्षक ही शिक्षा के पुनर्निर्माण की महत्वपूर्ण कुंजी हैं। यह शिक्षक वर्ग की योग्यता ही है जो कि निर्णायक है।"

शिक्षक विद्यालय तथा शिक्षा पद्धति की वास्तविक गत्यात्मक शक्ति है। यह सत्य है कि विद्यालय भवन, पाठ्यक्रम, सहभागी क्रियाऐं, निर्देशन, कार्यक्रम, पाठ्य पुस्तकें आदि सभी वस्तुएं, शैक्षिक कार्यक्रम में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखती है, परन्तु जब तक उनमें अच्छे शिक्षकों द्वारा जीवन शक्ति प्रदान नहीं की जायेगी, तब तक वे निरर्थक रहेंगी। **कोठारी आयोग** (1964-66) ने भी शिक्षक को सम्मानित स्थान देते हुए कहा है :-

"Of all the different factors which influence the quality of education and its contribution to national development, the quality competence and character of teachers are undoubtedly the most significant, Nothing is more important than securing a sufficient supply of high quality recruits to the teaching profession, providing them with the best possible professional preparation and creating satisfactory conditions of work in which they can be fully effective."

उपर्युक्त आधार पर कहा जा सकता है कि नयी पीढ़ी का चरित्र निर्माण का दायित्व शिक्षकों का ही है। वास्तव में शिक्षक राष्ट्र का निर्माण है। अतएव शिक्षक का कर्तब्य है कि वह समाज और राष्ट्र को सन्मार्ग पर लाने के लिए अधिक से अधिक प्रयत्न करें और उसके प्रति अपना उत्तरदायित्व समझें। साथ ही साथ राज्य का यह कर्तब्य है कि वह उनकी सामाजिक और आर्थिक स्तर पर ध्यान दें उन्हें दिन प्रतिदिन की चिन्ताओं से मुक्त करें ताकि वे संतुष्ट एवं सम्मानित जीवन व्यतीत कर सकें।

शिक्षक, शिक्षा प्रणाली का प्राण है। शिक्षक के ऊपर ही उच्च शिक्षा की सफलता का सारा दारोमदार है। शिक्षक ही छात्रों के मानसिक, शारीरिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक गुणों का विकास करता है। यह तभी सम्भव है जब शिक्षक गुणों का खान हो एवं उसमें सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का प्रवाह हो। इन सभी के होते हुए भी शिक्षक निष्प्रभावी होता है, जब वह अपने कार्य या व्यवसाय से संतुष्ट नहीं होता। आधुनिक युग में समस्त मानवतावादी लक्ष्यों में व्यवसायिक संतुष्टि (Job Satisfaction) को सर्वोपरि लक्ष्य माना गया है, क्योंकि इसके प्राप्ति की कामना न सिर्फ कार्यकर्ता ही करते बल्कि प्रबन्धक और प्रशासक में भी समान रूप से होती है। यदि शिक्षक अपने कार्य सम्पादन से संतुष्ट है, तो वह परिश्रम, उत्साह एवं समर्पण भाव से कार्य करता है जो सम्पूर्ण शिक्षण व्यवस्था के लिए वरदान सिद्ध हो सकती है। ठीक इसके विपरीत व्यवसाय या कार्य से असंतुष्ट शिक्षक शिक्षण व्यवस्था को चौपट करने में अहम् भूमिका अदा कर सकते हैं जो शिक्षण व्यवस्था के लिए अभिशाप सिद्ध होगा। अतः आज के इस जटिल सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक एवं शैक्षिक स्थित को ध्यान में रखकर उच्च शिक्षा के शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का अध्ययन करना आवश्यक है ताकि व्यावसायिक असंतोष के कारणों को जाना जा सके एवं उसमें सुधार लाया जा सके। महाविद्यालय स्तर की शिक्षा चूँकि सम्पूर्ण शिखा व्यवस्था की दिशा निर्देशक हैं, अतः इस स्तर के विद्यालयों की व्यवसायिक संतुटि तथा उनमें छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि की आवश्यकता अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत अध्ययन का चयन किया गया है जिसमें सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों की शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना एवं इनमें अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति का एक तुलनात्मक अध्ययन करना है।

1.2 शोध की आवश्यकता एवं महत्त्व :

शिक्षक का समाज में महत्वपूर्ण स्थान है। प्राचीन काल से ही शिक्षक को समाज का मार्गदर्शक माना जा रहा है। शिक्षण-प्रक्रिया में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान है। सामान्यतः हर व्यक्ति शिक्षक के अन्तर्गत एक शिष्ट, आदर्श एवं प्रभावशाली, व्यक्तित्व देखना चाहता है। शिक्षण, प्रक्रिया में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षण पद्धति आकर्षक, भवन संतुलित पाठ्यक्रम या अन्य सुविधाओं के होते हुए भी अगर शिक्षक चरित्रवान, योग्य एवं व्यवहार कुशल नहीं है तो उक्त सम्पूर्ण सुख-सुविधाएं निरर्थक है। अगर शिक्षक योग्य है तो इन सुविधाओं के अभाव में भी विद्यार्थियों को उत्तम शिक्षा प्रदान कर सकता है। परतंत्र भारत में सुख-सुविधाओं के अभाव में सभी क्षेत्रों (साहित्य, विज्ञान इत्यादि) में ज्ञान का प्रकाश विखेर रहा था, जबकि आज स्वतंत्र भारत में सभी साधनों के रहते हुए भी उतने उच्च कोटि के विद्वान नहीं हो पा रहे हैं। इसका मूल कारण शिक्षक ही है। शिक्षक समाज, राष्ट्र एवं विश्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। उसके महत्व को कोई भी समाज या देश नहीं भुला सकता है। प्राचीनकाल से ही यह पद गौरव का प्रतीक रहा है। प्राचीन के शिक्षक तपस्वी एवं ऋषि होते थे जिनके जाने के बाद सम्राट भी अपना सिंहासन छोड़कर खड़े हो जाते थे। आज शिक्षकों की स्थिति उससे भिन्न है। शिक्षक व्यवसायीगण की तरह दौड़ लगा रहा है। शिक्षक खुद अपने आचार संहिता का पालन नहीं कर पा रहे हैं। उसमें चारित्रिक एवं मूल्यों की कमी आ गयी है जिसके कारण समाज में वह प्राचीन काल के सदृश प्रतिष्ठा नहीं पा रहा है।

शिक्षक का कार्य केवल विषय-शिक्षा तक ही नहीं सीमित है बल्कि वह अपने आचरण के द्वारा छात्रों में मानवीय गुणों का विकास करता है जिसके कारण उसे आचार्य की उपाधि से विभूषित किया गया है। यदि हम अपने शिक्षा को भारतीय संस्कृति के ढ़ाँचे में ढ़ालना चाहते हैं तो हमें शिक्षकों के मान मर्यादा, प्रतिष्ठा एवं उनके व्यवसायिक संतुष्टि का ध्यान रखना होगा। अतः शिक्षक अपने व्यवसाय से संतुष्ट रहेगा तो वह मन लगाकर शिक्षक कार्य करेगा। एक शिक्षक की संतुष्टि बहुत से ब्च्चों के जीवन के लिए वरदान् सिद्ध हो सकता है जो देश क़े विभिन्न संस्थानों, प्रतिष्ठानों आदि में जाकर देश के निर्माण में सहयोगी सिद्ध हो सकते हैं। अगर वही शिक्षक अपने व्यवसाय से संतुष्ट नहीं होंगे तो कार्य भी अच्छी तरह से नहीं करेंगे। जिसके कारण छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होने के साथ ही हजारों छात्रों के भविष्य के साथ खिलवाड़ होगा जिससे राष्ट्र का विकास अवरूद्ध होगा। अतः इस दृष्टिकोण से शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि का अध्यन करना एवं विद्यार्थियों के शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन करना शोध का महत्वपूर्ण कार्य है।

शोधकर्त्री बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय से सम्बद्ध गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालय का शिक्षक है साथ ही अनेक सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालय के शिक्षकों को नजदीक से देखने का सदैव अवसर मिलता रहता है, इनका जीवनस्तर, विचार व भविष्य की योजनाओं से भी अनवरत रू-ब-रू होने की स्थिति बनी हुयी है साथ ही तमाम ऐसे भी छात्र सम्पर्क में आये जो विभिन्न प्रकार के महाविद्यालयों में अध्ययनरत हैं या अध्ययन कर रहे हैं, ऐसे शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के वैभिन्न्य स्तरों के अवलोकन से शोधकर्ता के मन में प्रस्तुत अध्याय की जिज्ञासा उत्पन्न हुई। यह भी विचार उठा कि ऐसे शिक्षकों और विद्यार्थियों की व्यवसायिक संतुष्टि व शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन करके सम्पूर्ण उच्च शिक्षा के स्तरों को जाना जाय तथा शैक्षिक सुधार के क्रम में यथोचित सूचनाएं प्राप्त करके सुझाव दिया जाये।

शिक्षक का पद बहुत गरिमापूर्ण होता है, क्योंकि सच्चे अर्थों में राष्ट्र का निर्माता होता है। शिक्षक को सच्चरित्र एवं सर्वगुण सम्पन्न होना चाहिए। शिक्षकों को यह समझकर कार्य करना चाहिए कि अध्ययन एक आजीविका नहीं है, वह एक तपस्या है। तपस्या का अर्थ यह नहीं कि कोई राष्ट्र अपने शिक्षकों को दरिद्रता का जीवन व्यतीत करने के लिए विवश करें। शिक्षक की महत्ता स्वीकार करने के पश्चात् यह पता लगाना आवश्यक है कि वे अपने व्यवसाय में कहाँ तक संतुष्ट हैं? इस तथ्य का वैज्ञानिक रीति से पता लगाने के लिए समीक्षात्मक अध्ययन की आवश्यकता है। शिक्षक पूर्ण रूप से तभी सफल हो सकता है जबकि वह अपने व्यवसाय से संतुष्ट हो।

यदि शिक्षक अपने व्यवसाय से संतुष्ट रहता है तो इसका प्रभाव उनके कार्य निष्पादन (अध्यापन) पर पड़ता है। अतः यह आवश्यक है कि इस तथ्य का पता लगाया जाय कि सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति किस स्तर की है।

उपरोक्त तथ्यों को दृष्टिकोण रखते हुए शोधकर्त्री ने यह महसूस किया कि सहायता प्राप्त गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि एवं उन महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया जायेगा।

इस अनुसंधान के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया जायेगा कि सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि में उनकी आय, शिक्षण, अनुभव, योग्यता आदि का क्या महत्व है और इसके साथ ही इसमें अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति पर शिक्षकों के अध्यापन का क्या प्रभाव पड़ रहा है, इसका भी अध्ययन किया जायेगा।

1.3 शोध का शीर्षक :

प्रस्तुत शोध का शीर्षक निम्न है :-

"सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि तथा विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति का तुलनात्मक अध्ययन।"

1.4 शोध में प्रयुक्त पदों का परिभाषीकरण :

प्रस्तुत शोध पदों का परिभाषीकरण निम्नवत् है :-

1. **सहायता प्राप्त महाविद्यालय-** प्रस्तुत शोध में सहायता प्राप्त महाविद्यालयों से तात्पर्य ऐसे महाविद्यालय से है जिन्हें सरकारी अनुदान प्राप्त होते हैं एवं उनमें कार्यरत शिक्षकों को सरकारी खजाने से वेतन प्राप्त होता है।

2. **गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालय-** प्रस्तुत शोध में गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालय से तात्पर्य ऐसे महाविद्यालय से है जिन्हें सरकार से अनुदान प्राप्त नहीं होता एवं उनमें कार्यरत शिक्षकों को वेतन भुगतान प्रबन्ध तन्त्र द्वारा किया जाता है।

3. **शिक्षक-** शिक्षकों से तात्पर्य बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी परिधि में चित्रकूट धाम मण्डल, बाँदा एवं झाँसी मण्डल, झाँसी में सम्बद्ध सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों में अध्यापन कार्य कर रहे शिक्षकों से हैं।

4. **विद्यार्थी-** विद्यार्थियों से तात्पर्य बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी से सम्बद्ध चित्रकूट धाम मण्डल, बाँदा एवं झाँसी मण्डल, झाँसी के मण्डल में उन सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र/छात्राओं से है।

5. **व्यावसायिक संतुष्टि–** "व्यावसायिक संतुष्टि" इस पद का विश्लेषण करने से पूर्व व्यवसाय और संतुष्टि शब्दों को अलग–अलग विश्लेषण करना समीचीन होगा। वर्तमान सामाजिक प्रणाली में व्यवसाय एक प्रमुख तत्व के रूप में देखा जा रहा है और उस व्यवसाय के परिणाम स्वरूप प्राप्त होने वाला पुरस्कार व्यक्ति के निजी स्तर को निर्धारित करता है।

व्यावसायिक संतुष्टि की परिभाषा–

लूकस के अनुसार– "व्यवसाय व्यक्ति के लिए अपने साध्य नहीं, बल्कि यह एक क्रिया है, जिसके द्वारा विभिन्न लक्ष्य जैसे जीवन स्तर और सांस्कृतिक विकास की पूर्ति होती है।"

जार्ज थामसन के अनुसार– "व्यवसाय विभिन्न कार्यो का एकत्रीकरण है जो मानव को कार्यो में व्यस्त रखने के लिए अंगीकृत किया जाता है उसका कोई एक प्रमुख व्यवसाय हो सकता है साथ ही साथ गौण व्यवसाय भी हो सकते हैं।"

संतुष्टि व्यक्ति की एक ऐसी स्थिति है जिसका झुकाव अपने लक्ष्य पर पहुंच जाने का होता है।

बुलक के अनुसार– "Job satisfaction is the result of various attitudes possessed by an employee towards his job. these attitudes are related with specific factors such as salary, service conditions, advancement apportunities, fair treatment by employers and other fringl benefits."[2]

इस प्रकार व्यवसाय संतुष्टि की परिभाषा निम्न प्रकार से की जा सकती हैः–

यह एक अभिवृत्ति है जो व्यवसाय से सम्बन्धित वांछित और अवांछित अनुभवों का संतुलन एवं संयोग का परिणाम है। व्यवसाय संतुष्टि का सम्बन्ध व्यवसाय के प्रति कर्मचारी की दक्षता से तथा कर्मचारी की वैयक्ति प्रसन्नता से है। इसलिए मनोवैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी से सम्बन्धित लोगों का ध्यान व्यवसाय–संतुष्टि प्रत्यय

की ओर निरन्तर आकर्षिक होता जा रहा हैं संतुष्टि किसी भी व्यवसाय का एक आवश्यक पक्ष है। जब तक व्यक्ति अपने व्यवसाय से संतुष्ट नहीं होता तब तक समुचित रूप से अपने कर्तब्य का निर्वाह करना उसके लिए कठिन रहता है।

1931 में **फिशर** और **होना** ने प्रस्तावित किया कि असंतोष अधिकांश रूप में संवेगात्मक कुसमायोजन से उत्पन्न होता है। व्यक्ति असंतुष्ट इसलिए रहता है, क्योंकि उनका कार्य उन्हें संतुष्टि नहीं दे पाता और वह सोचता है कि उसका कार्य ही ठीक नहीं है। **राबार्ट हपाक** (1937) का कहना है-

"वह वस्तु अथवा कार्य जिसमें रूचि है वह मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक, भौतिक और वातावरणीय परिस्थितियों का संयोग है। यदि व्यक्ति की रूचि, उस कार्य या वस्तु में तो वह कहता है कि मैं अपने व्यवसाय से संतुष्ट हूँ।"

उपर्युक्त परिभाषा द्वारा यह सम्भव है कि व्यक्ति संतुष्ट तथा असंतुष्टि के संतुलन द्वारा एक सुव्यवस्थित संतुष्टि की ओर पहुंच जाय।

1951 में **जिन्ज वर्ग** ने व्यवसाय संतुष्टि के प्रत्यय का बहुत ही सुन्दर ढंग से विश्लेषण किया है-

"संतुष्टि तीन प्रकार की होती है, प्रथम अन्तः संतुष्टि-जो कार्य व्यस्तता से उत्पन्न प्रसन्नता के द्वारा तथा उसमें प्राप्त सफलता के द्वारा होती है, द्वितीय जो व्यक्ति के कार्य की भौतिक एवं मनोवैज्ञानिक स्थितियों से सम्बन्धित रहती है और जिसके तीन वाह्य कारण होते हैं जैसे- पुरस्कार, वेतन, बोनस आदि।"

इस प्रकार यह आख्या की जा सकती है कि एक ओर अंतःसंतुष्टि है और दूसरी ओर वाह्य संतुष्टि। इन दोनों प्रकार की संतुष्टियों के समुचित संतुलन से व्यक्ति को अपने व्यवसाय के प्रति संतुष्टि मिलती है। स्मिथ ने व्यवसाय संतुष्टि को अपेक्षाकृत व्यापक ढंग से परिभाषित करते हुए कहा है-

"व्यवसाय संतुष्टि एक ओर कर्मचारी के वर्तमान व्यवसाय का फलन है दूसरी ओर वर्तमान व्यवसाय से उसके समायोजन का फलन है।"

व्यवसाय संतुष्टि पद को और स्पष्ट करने के लिए निम्नलिखित सम्बन्धित पदों की व्याख्या भी अभीष्ट है-

व्यावसायिक संतुष्टि और संलग्नता-

व्यवसाय में संलग्न होना तथा व्यवसाय में सतुष्टि दोनों एक नहीं है। व्यवसाय में संलग्न होने का अर्थ है कि व्यवसाय विभिन्न पहलुओं से अपने को जोड़ना। जबकि व्यवसाय संतुष्टि के उद्देश्यों और स्वयं को जोड़ने, दोनों से सम्बन्धित है। संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि व्यवसाय में संलग्नता वह डिग्री है जिसमें व्यक्ति किसी व्यवसाय में लगा रहता है और उसी के द्वारा उसकी पहचान होती है जबकि व्यवसाय-संतुष्टि वह लगभग अन्तिम डिग्री है, जिस पर व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति होती रहती है।

व्यावसायिक संतुष्टि और व्यावसायिक अभिवृत्ति -

प्रायः व्यवसाय संतुष्टि और व्यवसाय अभिवृत्ति का प्रयोग एक दूसरे के स्थान पर किया जाता है, क्योंकि मनुष्य के कार्य करने की पद्धति की प्रभावशाली दिशा में ये दोनों ही बतलाते हैं। धनात्मक अभिवृत्ति व्यवसाय संतुष्टि के समान ही समझी जा सकती है तथा ऋणात्मक अभिवृत्ति व्यवसाय के प्रति असंतोष को प्रकट करती है। किसी कर्मचारी की व्यवसाय के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति से यह पता चलता है कि उसमें कार्य के प्रति तत्परता है, जबकि व्यवसाय संतुष्टि व्यवसाय के प्रति विभिन्न प्रकार की अभिवृत्तियों का परिणाम है।

व्यावसायिक संतुष्टि और आकांक्षा-

आकांक्षा से यह पता लगता है कि वह व्यक्ति उचित दिशा में कुछ कार्य करके सुन्दर परिणाम चाहता है। इस प्रकार आकांक्षा का सम्बन्ध व्यवसाय अभिवृत्ति

तथा व्यवसाय संतुष्टि दोनों से है। उदाहरण के लिए **लिकर्ट** और **विलिथ** 1940 ने बतलाया है कि व्यवसाय आकांक्षा एक व्यक्ति की कार्य के प्रति तथा विभिन्न सहकर्मियों के प्रति मानसिक अभिवृत्ति की ओर संकेत करती है। आकांक्षा की परिभाषा करते हुए **ग्वुयन** (1958) ने कहा है-

"जिस सीमा तक व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती है तथा व्यवसाय की सम्पूर्ण स्थित से जिस सीमा तक उसे संतुष्टि का आभास मिलता है उसे आकांक्षा कहते हैं।"

आकांक्षा मनुष्य की नैतिकता भी बतलाती है, क्योंकि अनैतिक व्यक्ति को न तो सदाकांक्षा होगी और वह न किसी कार्य से संतुष्ट ही होगा। इसलिए व्यवसाय संतुष्टि के लिए नैतिकता का होना परम अनिवार्य है।

व्यावसायिक संतुष्टि और व्यवसायिक अभिप्रेरण-

यह तथ्य है कि बिना आन्तरिक अभिप्रेरण के मनुष्य व्यवसाय की ओर उन्मुख नहीं होगा और जब तक उन्मुख नहीं होगा तब तक उसे व्यवसाय-संतुष्टि नहीं मिल सकती। पर कुछ शोधकर्त्री व्यवसाय संतुष्टि और व्यवसाय अभिप्रेरण को एक ही मानते हैं। उदाहरण के रूप में व्यवसाय संतुष्टि सम्बन्धी शोध तथा कर्मचारी अपने व्यवसाय से क्या चाहता है इसके कई उत्तर हो सकते हैं और इन उत्तरों के महत्व के अनुसार क्रम में रखा जा सकता है जबकि व्यवसाय संतुष्टि का उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में ही प्राप्त किया जा सकता है। इसके कारण अनेक हो सकते हैं। विद्यालय के शिक्षकों में आन्तरिक अभिप्रेरण क्या है? इसके सम्बन्ध में महत्व के क्रम में कतिपय बिन्दु इस प्रकार हैं-

नये कौशलों का सीखने का अवसर, सहाध्यायियों के साथ मित्रवत् व्यवहार, उत्तरदायित्व वहन करने की स्वतन्त्रता, अच्छे व्यवसाय की सुरक्षा, प्रगति के लिए अच्छे अवसर, जीवन बीमा एवं सेवा निवृत्ति सम्बन्धी विभिन्न लाभ अच्छा वेतन। ये

बिन्दु आन्तरिक अभिप्रेरण की ओर इंगित करते हैं जो व्यवसाय संतुष्टि के कारक समझे जा सकते हैं।

व्यावसायिक संतुष्टि और शक्ति स्फुरण-

स्ट्राँग (1958) तथा अन्य लोगों ने यह संकेत किया है कि संतुष्टि केवल परिणाम के लिए प्रयुक्त की जाती है या व्यक्ति के अच्छे अनुभव की ओर इंगित करती है। बून ने इस प्रसंग में **'बैलेन्स'** शब्द का प्रयोग किया है, जबकि ग्रेन इसके स्थान पर **"बैलेन्स"** के लिए **"आकर्षण"** शब्द का प्रयोग किया है, दोनों के अनुसार संतुष्टि भविष्य के लिए मुख्य रूप से आनन्द की द्योतिका है। कुछ लोगों के अनुसार शक्ति स्फुरण और शक्ति के लिए आकर्षण कार्य करने में प्रेरणा देती है तथा कार्य-संतुष्टि की ओर अग्रसर करती है। जबकि संतुष्टि आनन्द देने वाली एक विद्या है।

इस प्रकार व्यवसाय संतुष्टि की व्याख्या के प्रसंग में जिन विभिन्न शब्दों एवं पदों का प्रयोग किया जायेगा। ये सब व्यवसाय संतुष्टि के विभिन्न सहायक कारक माने जा सकते हैं, क्योंकि व्यवसाय संतुष्टि एक बहुआयामी प्रत्यय है। संक्षेप में व्यवसाय संतुष्टि निर्णय के स्तर, व्यवसायिक स्तर तथा कतिपय कारक जैसे सुरक्षा, प्रगति के अवसर, सूचना प्रसारण के सामाजिक पक्ष, अपने व्यक्तित्व के आधार पर समीक्षा आदि से सम्बन्धित हैं।

व्यावसायिक संतुष्टि के कारक-

व्यवसाय संतुष्टि के कारकों को दो मुख्य भागों में बाँटा जा सकता है-

1. **कर्मचारियों के लिए विभिन्न अपेक्षित साधन।**
2. **व्यवसाय का प्रकार एवं विशेषताएं।**

1. **कर्मचारियों के लिए विभिन्न अपेक्षित साधन**- इसके अन्तर्गत शैक्षिक स्तर, बुद्धि, लिंग, अनुभव तथा व्यक्तित्व के विभिन्न अपेक्षित पक्ष सम्मिलित किये जाते हैं।

शैक्षिक स्तर और बुद्धि-

शोध द्वारा यह पाया गया कि यदि व्यवसायिक स्तर को स्थिर माना जाय तो व्यक्ति के शैक्षिक स्तर और व्यवसाय संतुष्टि के बीच ऋणात्मक सम्बन्ध होता है। यहाँ पर व्यवसाय संतुष्टि से विशेष अभिप्राय उसकी वेतन संतुष्टि से है, **(गांगुली, 1954)** किन्तु **कपूर** (1967) का निष्कर्ष है कि फैक्ट्री के कर्मचारियों में व्यवसाय संतुष्टि और शैक्षिक सतर में धनात्मक सम्बन्ध है। जबकि **सिन्हा** और **शर्मा** (1962) की सूचनानुसार इन कर्मचारियों में शैक्षिक स्तर व्यवसाय संतुष्टि में कोई विशेष सम्बन्ध नहीं है।

लिंग-

पुरुष शिक्षक एवं स्त्री शिक्षिकाओं ने व्यवसाय संतुष्टि से सम्बन्धित प्रश्नों का उत्तर भिन्न-भिन्न प्रकार से दिया है। इसका कारण यह भी हो सकता है कि उनकी परिस्थितियां भिन्न-भिन्न हैं। कम समय का अध्यापन काल अथवा अधिक छुट्टियां महिलाओं के लिए पुरुषों की अपेक्षा अधिक संतुष्टि प्रद हो सकती है। फिर भी व्यवसायिक स्तर को स्थित रखते हुए यह कोई ठोस प्रमाण नहीं मिल पाया है कि महिलाओं में पुरुषों की अपेक्षा व्यवसाय संतुष्टि अधिक है। कुछ शोधकर्त्रीओं के अनुसार महिलाओं के व्यवसाय के प्रति आकांक्षा स्तर निम्न होता है। इसलिए यह हो सकता है कि उनमें संतुष्टि की मात्रा पुरुषों की अपेक्षा अधिक हो। फिरभी शोधों से यह प्रमाणित नहीं हो सका है कि महिलाओं की आकांक्षा स्तर पुरुषों की अपेक्षा निम्न होता है। **ब्रीफ** तथा **अलीवर** (1976) के प्रतिवेदन के अनुसार पुरुष और महिला की व्यवसायिक संतुष्टि की मात्रा में कोई नहीं पाया गया, जबकि दोनों के व्यवसाय तथा व्यवसाय देने वाले संगठन एक ही हैं।

अनुभव तथा वरिष्ठता–

हर्जवर्ग (1957) का कथन है कि व्यवसाय में नवीनता कर्मचारी में उचच आकांक्षा उत्पन्न होती है। यदि व्यवसाय में अनिश्चितता है तथा सुरक्षा की स्थिति नहीं है तो दो वर्षों के पश्चात् संतुष्टि का स्तर नीचे आने लगता है। यदि कर्मचारी को अच्छे कार्य के प्रति उचित पुरस्कार की आशा रहती है तो संतुष्टि की मात्रा क्रमशः बढ़ने लगती है। फिर भी हाल में किये गये कतिपय अध्ययनों से इस प्रकार के सम्बन्धों की पुष्टि नहीं होती। **फोनेन** (1978) का कहना है कि व्यवसाय संतुष्टि और वरिष्ठता में "यू" आकार का सम्बन्ध है जो एक वर्ष के पश्चात् नीचे आने लगता है। फोनेन ने वरिष्ठता के आधार पर व्यवसाय संतुष्टि के दो कारण बताये हैं–

1. वरिष्ठ होने पर व्यक्ति को स्वतंत्र होकर कार्य करने की छूट मिलती है।
2. वरिष्ठ होने पर व्यक्ति अपने अनुभवनों का लाभ उठाते हुए समुचित ढंग से कार्य कर सकता है, अतएव उसे व्यवसाय संतुष्टि मिलती है।

व्यक्तित्व के पक्ष–

कार्मन (1967) के अनुसार उसी व्यक्ति को आवश्यकता की संतुष्टि मिलती है जो परिणामों की आशा न करते हुए उसी दिशा में कार्य करने को अग्रसर रहता है। जहां स्वार्थपरक लक्ष्य रहता है वहाँ पर संतुष्टि की मात्रा न्यून हो जाती है।

जाग्सटन (1974) का कहना है कि अधिक परिश्रमशील व्यक्ति कार्य से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं के समाधान की ओर अपेक्षाकृत अधिक उन्मुख होते हैं तथा जो परिश्रम से मुख मोड़ते हैं वे संगठन एवं कार्य दोनों के प्रति अनभिष्ट अभिवृत्ति रखते हैं। उनके अनुसार व्यवसाय संतुष्टि का सम्बन्ध सामाजिक स्तर से भी है। यदि किसी व्यवसाय से सामाजिक स्तर समझा जाता है तो उसके प्रति संतुष्ट होना स्वाभाविक है।

2. व्यावसाय के प्रकार एवं विशेषताएँ-

इसके अन्तर्गत प्रबन्ध, उन्नति के अवसर, सुरक्षा, कार्य करने की स्थिति, वित्तीय पक्ष, संगठनात्मक योजनाएं एवं नीतियां अन्तः सह सम्बन्ध और सामाजिक पहचान आदि आते हैं।

प्रबन्ध-

ब्रून और मन (1960) के अनुसार- एक ही संगठन के दो परिस्थितियों सुपरवाइजर तथा अधीनस्थ कर्मचारी को निर्देश देकर कार्य करने की स्वतंत्रता देता है तो वह अधीनस्थ कर्मचारी अन्तःप्रेरणा से कार्य को पूरा करने का प्रयत्न करता है तथा यदि पग-पग पर छिद्रान्वेषण करता है तो कर्मचारी में कार्य करने की क्षमता घट जाती है। इसके लिए पर्याप्त प्रमाण है कि जो लोग अपने व्यवसाय से संतुष्ट है उनका कहना है कि वे अपने से सम्बन्धित निर्णयों को प्रभावित करने का अधिक अवसर पाते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि यदि कर्मचारी निर्णय को प्रभावी कर सकता है तो उसमें कार्य संतुष्टि अधिक होगी।

प्रोन्नति के अवसर-

शोधों से यह पाया गया कि प्रोन्नति के अवसर और व्यवसाय संतुष्टि में धनात्मक सम्बन्ध है पर यह सम्बन्ध परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होता रहता है, जैसे यदि कर्मचारी को अकस्मात प्रोन्नति मिल गयी तो उसकी व्यवसाय संतुष्टि बढ़ जाती है और यदि जानते हुए भी प्रोन्नति नहीं मिली तो उसकी व्यवसाय संतुष्टि घट जाती है। प्रोन्नति निश्चित होने पर व्यवसाय संतुष्टि तो रहती है पर उसकी मात्रा बहुत अधिक नहीं रहती।

सुरक्षा-

इसके कारण व्यवसाय प्राप्त करने की इच्छा पुरुष और स्त्री दोनों में समान रूप से होती है। इसका महत्व व्यावसायिक स्तर और शिक्षा से ऋणात्मक रूप से सम्बन्धित रहता है और अवस्था से धनात्मक रूप से।

संगठनात्मक नीतियाँ-

सामान्य रूप से कर्मचारी इस विश्वास में रहता है कि व्यवसाय का अच्छा संगठ्न वह है, जिसमें वह अपने व्यवसाय की स्थिरता के बारे में अनुभव करता है। सुरक्षा की ही भांति यदि व्यवसाय सम्बन्धी कारक कर्मचारी की सेवा की दृढ़ता के बारे में अनुभव करते हैं तो उससे कर्मचारी को संतोष का आभास होता है।

सामान्य कार्यपरक स्थितियाँ-

इसके अन्तर्गत व्यक्ति पर वातावरण का प्रभाव तथा कार्य की विभिन्न स्थितियाँ आती है, जैसे कार्य करने की अल्पावधि या दीर्घावधि, भौतिक सुविधाएँ, फर्नीचर, दृष्य श्रव्य सामग्रियां, पुस्तकालय सम्बन्धी सुविधाएँ आदि। यदि वे वस्तुएं उचित स्थित में नहीं है तो उससे शिक्षकों में कुण्ठा आ सकती है। बहुत से कारक जैसे अवकाश काल में वेतन प्राप्त करना, बीमारी की छुट्टी अधिकारतः प्राप्त छुट्टी सेवा निवृत्ति के पश्चात प्राप्त होने वाले लाभ, आदि शिक्षकों में संतोष प्रदान करते हैं।

कार्य की समयावधि-

कार्य की समयावधि कर्मचारी के जीवन में महत्वपूर्ण परिणाम प्रदान करती है। इससे व्यक्ति अपने कार्य के स्थान तथा बाहर प्रभावित होता है। कार्य की समयावधि जिस समुदाय में कर्मचारी रहता है उसको प्रभावित करती है तथा वह समयावधि समुदाय के अन्य सदस्यों के सम्बन्ध को भी निर्धारित करती है एवं यह भी उससे निर्धारित होता है कि वह अपने परिवार के सदस्यों के साथ कितना समय दे पाता है। **युवान्स** (1973-75) ने यह पाया कि यदि कार्य का समय लचीला है तो निम्न कर्मचारियों तथा लिपिकों को यह अधिक संतुष्टि प्रदान करता है।

वित्तीय पक्ष-

सह सम्बन्धों से पता चलता है कि आप का स्तर व्यवसाय संतुष्टि से अधिक सम्बन्धित है। यद्यपि विपरीत भी कुछ परिणाम मिलते हैं। **स्वाव** (1974) का कहना

है कि वेतन प्रणाली कर्मचारी की संतुष्टि पर विभिन्न प्रकार से प्रभाव डालती है। संयुक्त प्रान्त अमेरिका के विभिन्न व्याख्यानों के तीन सौ कुशल एवं अर्द्धकुशल पुरुष स्त्रियों से प्राप्त आंकड़े यह बतलाते हैं कि समय से जिनको वेतन मिलता है वे अधिक संतुष्ट हैं और जिसे निर्धारित समय से वेतन नहीं मिलता वे कम संतुष्ट हैं। **एरिक्शन** तथा अन्य (1972) ने नेवी के व्यक्तियों के छः छोटे समुदायों का अध्ययन किया और उन लोगों ने पाया कि जीवन स्तर से व्यवसाय संतुष्टि का बहुत ही ऊँचा सम्बन्ध है।

अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्ध–

एक शिक्षक का सीधा सम्बन्ध छात्रों से है, इसलिए अध्यापक और छात्र के मध्य सम्बन्ध बहुत ही महत्वपूर्ण है। छात्रों की अधिक से अधिक सहभागिता तथा छात्र और अध्यापक के मध्य परस्पर सद्भावना और आदर उचित वातावरण उत्पन्न करता है। अध्यापकों का प्रत्येक छात्र से सीधा सम्बन्ध और छात्रों का अध्यापकों के प्रति आदर भावना अध्यापकों में अधिक संतोष उत्पन्न करता है। उसी प्रकार अपने साथ कार्य करने वाले कर्मचारियों से भी अच्छा सम्बन्ध होना आवश्यक है। **मिलर** (1964) का कथन है कि परस्पर स्वस्थ सम्बन्धों से वातावरण सुसंगठित रहता है। अतएव किसी भी संगठन में कर्मचारियों की व्यवसाय संतुष्टि के लिए परस्पर अच्छा सम्बन्ध होना अभिष्ट है।

सामाजिक महत्व–

शिक्षक व्यवसाय की सक्रियता और सामान्य रूप से राष्ट्रीय विकास के योगदान तथा विशेष रूप में शैक्षिक विकास के योगदान इसके सामाजिक महत्व पर निर्भर है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, और प्रत्येक व्यक्ति समाज में उचित सम्मान चाहता है। व्यवसाय को चुनने में व्यक्ति वर्तमान समाज में सीधे प्रभावित होता है।

4. शैक्षिक सम्प्राप्ति–

प्रस्तुत शोध में शैक्षिक सम्प्राप्ति से तात्पर्य है– विद्यार्थियों के द्वारा अपने शैक्षिक जीवन से सम्बन्धित पहलुओं में अर्जित ज्ञान, कौशल, योग्यताओं आदि से है इसके अभाव में शैक्षिक विकास की प्रक्रिया पूर्णतया विफल हो जाती है। शैक्षिक सम्प्राप्ति का अर्थ है, कि विद्यार्थियों ने एक विषय या विभिन्न विषयों में कितने ज्ञान तथा कुशलता को अर्जित किया है।

उपलब्धि परीक्षा का प्रयोग यह ज्ञात करने के लिए किया जाता है कि व्यक्ति ने क्या, और कितना सीखा तथा वह कोई भी कार्य कितनी भली–भाँति कर लेता है। **बोल्मैन** ने शैक्षिक सम्प्राप्ति के विषय में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि–

"शैक्षिक सम्प्राप्ति शैक्षिक कार्यों से सम्बन्धित प्रवीणता स्तर तथा अवस्था से सम्बन्धित है।" अतः शैक्षिक सम्प्राप्ति से तात्पर्य विद्यार्थियों के सीखे हुए ज्ञान और कौशल से है अधिकांशतः परीक्षणों एवं परीक्षाओं का प्रयोग विद्यालय के विभिन्न विषयों में छात्रों की सम्प्राप्ति का मापन करने के लिए किया जाता है इनसे किसी भी विद्यार्थी की विभिन्न विषयों में सफलता तथा असफलता का पता चलता है।

प्रस्तुत शोध में छात्रों का शैक्षिक सम्प्राप्ति को स्नातक प्रथम वर्ष की परीक्षा में प्राप्त अंकों से है।

महत्व–

शैक्षिक सम्प्राप्ति का शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक दृष्टिकोण होता है इसके द्वारा ही ज्ञात होता है कि कोई विद्यार्थी शिक्षा से सम्बन्धित किसी क्षेत्र में कार्य करने की आवश्यक कुशलता रखता है या नहीं।

शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर ही विद्यार्थियों को विद्यालय में विभिन्न भागों में वर्गीकृत करते हैं शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में विद्यार्थियों का चयन करने में तथा

छात्रों के प्रवेश हेतु भी इनका काफी प्रयोग किया जाता हैं इन्हीं के आधार पर विद्यार्थी की एक कक्षा से दूसरी कक्षा में प्रोन्नति की जाती है।

शैक्षिक सम्प्राप्ति के ज्ञान के द्वारा बालकों को शैक्षिक एवं व्यवसायिक निर्देशन भी दिया जाता है जब तक बालकों को विभिन्न विषयों में उपलब्धि का ज्ञान नहीं होगा तब तक यह बताना कठिन होगा कि उसके लिए कौन सा विषय या व्यवसाय अधिक उपयुक्त होगा।

शैक्षिक सम्प्राप्ति के आधार पर बालक के सीखने की वांछित सुविधाएं प्रदान की जा सकती है क्योंकि इनके द्वारा ही भली प्रकार जाना जा सकता है कि बालक किसी विषय में कितना सीख चुका है तथा उसे कितना सीखना है। वास्तव में शैक्षिक सम्प्राप्ति का शिक्षा पर व्यापक प्रभाव है। इसके द्वारा ही बालक को अपनी उच्चतम सफलता के विषय में जानकारी होती है तथा साथ ही साथ उसे अपनी कमजोरियों का भी ज्ञान होता है। अतः इनके द्वारा उसको अध्ययन की प्रेरणा प्राप्त होती है।

1.5 शोध का उद्देश्य-

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य निरुपित किये गये हैं-

1. सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि के स्तर ज्ञात करना।
2. सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि के स्तर ज्ञात करना।
3. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का स्तर ज्ञान करना।
4. जातिगत भेद के अनुसार सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का स्तर ज्ञात करना।

5. सहायता प्राप्त गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन करना।

6. सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन करना।

7. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन करना।

8. जातिगत भेद के अनुसार सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन करना।

1.6 शोध की परिकल्पना-

शोध के उद्देश्यों के अनुसार प्रस्तुत शोध हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया जायेगा-

1. सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

2. सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालय के पुरुष एवं महिला शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

3. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयीय शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

4. सामान्य एवं पिछड़ी जाति के सहायता प्राप्त महाविद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

5. पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति के सहायता प्राप्त महाविद्यालयीय शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

6. सामान्य एवं अनुसूचित जाति के सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

7. सामान्य एवं पिछड़ी जाति के गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयीय शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

8. पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति के गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयीय शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

9. सामान्य एवं अनुसूचित जाति के गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयीय शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

10. सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है।

11. ग्रामीण क्षेत्र के सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के छात्र/छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है।

12. ग्रामीण क्षेत्र के गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के छात्र/छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है।

13. शहरी क्षेत्र के सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के छात्र/छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है।

14. शहरी क्षेत्र के गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के छात्र/छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है।

15. सामान्य एवं पिछड़ी जाति के सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है।

16. पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति के सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है।

17. सामान्य एवं अनुसूचित जाति के सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है।

18. सामान्य एवं पिछड़ी जाति के गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है।

19. पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति के गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है।

20. सामान्य एवं अनुसूचित जाति के गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है।

1.7 शोध का सीमांकन-

शोध को विश्वसनीय, व्यावहारिक एवं निश्चित परिणाम तक पहुंचने के लिए उसका सीमांकन करना अपरिहार्य होता है। किसी भी शोध अध्ययन को तीन बिन्दुओं पर सीमांकित किया जायेगा।

1. उत्तर प्रदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में से केवल बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी को ही अध्ययन में सम्मिलित किया जायेगा।

2. बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी से सम्बद्ध सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को अध्ययन में सम्मिलित किया जायेगा।

3. प्रस्तुत शोध अध्ययन में चित्रकूट धाम मण्डल, बाँदा एवं झाँसी मण्डल, झाँसी मण्डलों के समस्त सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों को सम्मिलित किया जायेगा।

4. जाति वर्ग के रूप में सामान्य वर्ग, पिछड़ा वर्ग एवं अनुसूचित जाति के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को अध्ययन में सम्मिलित किया जायेगा।

अध्याय-द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य एवं शोध अध्ययन का सर्वेक्षण

किसी भी शोध कार्य की आपूर्ति के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि शोधकर्ता शोध विषय से सम्बन्धित पूर्व किये गये अनुसंधान कार्यो का उल्लेख करें जिससे उसके कार्य को सही दिशा प्राप्त हो सके। संदर्भ साहित्य का सिहांवलोकन किसी भी शोध में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। अगर संदर्भ साहित्य का पुनर्विलोचन सावधानी से किया जाए और उसे अच्छी तरह से प्रस्तुत किया जाय तो वह चयनित समस्या को समझने और परिणाम को ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में विवेचन करने में महत्वपूर्ण योगदान करता है। बिना संदर्भ साहित्य के अवलोकन किये किसी भी ज्ञान को सत्यापित करने में बहुत कठिनाई होती है। संदर्भ-साहित्य शोधकर्ता को शोध के हर स्तर पर मार्गदर्शन करता है। संदर्भ साहित्य का ज्ञान समस्या के समाधान में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान करता है। इसके आधार पर शोधकर्ता को अपने शोध-अभिकल्प को निर्माण करने में मदद मिलती है। शोधकर्ता इसके आधार पर शोधकर्ता पर भविष्य में शोध करने के लिए सुझाव प्रस्तुत करता है। जिससे अनावश्यक रूप से शोध की पुनरावृत्ति से मुक्ति मिलती है। इसके माध्यम से शोध विधि एवं शोध सामाग्री के चयन में सुविधा होती हैं। अतः सम्बन्धित साहित्य रूपी दर्पण को ऐसा होना चाहिए। जिसमे शोंध के उद्देश्य परिकल्पना,प्रयुक्त उपकरण,विधि न्यायदर्श,सांख्यकीय तकनीक,परिणाम निष्कर्ष एवं भविष्य के लिए शोध हेतु सुझाव स्पष्ट रूप से झलकना चाहिए।

इसके महत्व को स्पष्ट करते हुए गुड,बार एवं स्केट्स कहते हैं-''एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि सम्बन्धी आधुनिकतम खोजों से परिचित होता रहें, उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र

अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसंधानकर्ता के लिए भी उस क्षेत्र से सम्बन्धित सूचनाओं तथा खोजों से परिचित होना आवश्यक हैं।"

प्रस्तुत शोध अध्ययन से सम्बन्धित अभी तक जितने अध्ययन हुए है, उनका संक्षिप्त एवं समीक्षात्मक विवरण निम्न है।

प्रस्तुत अध्याय को दो भागों में बांटा गया है:-

1. व्यावसायिक संतुष्टि से सम्बन्धित साहित्य

2. विद्यार्थियों के शैक्षिक सम्प्राप्ति सम्बन्धित साहित्य।

2.1 व्यावसायिक संतुष्टि से सम्बन्धित साहित्यः-

व्यावसायिक-संतुष्टि को मापन करने वाले बहुत आयाम है,जिन पर अध्ययन हुआ है।

2.01 व्यावसायिक संतुष्टि के आयामों के सन्दर्भ अध्ययनः-

इस खण्ड में कुछ अध्ययनों में वर्णित आयामों के बारें में उल्लेख किया गया है।

हपांक (Happock 1935) ने दक्षिण पूर्व राज्य के 51 शहरी एवं ग्रामीण समुदाय के 500 शिक्षकों पर अध्ययन किया इस अध्ययन में व्यवसायिक संतुष्टि के 6 आयाम दिये गये है।

1. असंतुष्ट स्थिति के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त करने का तरीका

2. अपने को दूसरे व्यक्तियों से समायोजित करने की सुविधा

3. समूह के सामाजिक एवं आर्थिक स्तर से तुलना,

4. कार्य की प्रवृत्ति उसकी योग्यता,अभिरूचि,एवं तैयारी के संदर्भ में।

    1. सुरक्षा और

    2. निष्ठा

इस अध्ययन में 100 उच्च संतुष्टि वाले और 100 निम्न संतुष्टि वाले शिक्षकों के बीच तुलना किया गया है जिसमें पाया गया है कि संतुष्टि शिक्षकों में संवेगात्मक रूप से कम कुसमायोजित,अधिक धार्मिकता,अपने से बडों और सहयोगियों के साथ अच्छा सम्बन्ध होता है। जो लोग 100000 से बडे महानगरों में पढाते हैं वे परिवार एवं समाज से अधिक प्रभावित हे वे अपने व्यवसाय को अपने इच्छा से चयन किये है, वे जल्दी एक रसता एवं थकान के शिकार नहीं होते है और वे असंतुष्टों से उम्र में ज्यादा है।

चेस (Chase 1951) ने शिक्षकों क व्यावसायिक संतुष्टि के अध्ययन में पाया कि शिक्षक के भार का व्यावसायिक संतुष्टि पर निम्न प्रभाव पडता है।

हंटर (Hunter 1955) ने व्यावसायिक संतुष्टि विशिष्ट बालकों के नियंत्रण में की अक्षमता,विद्यालय अनुशासन उपकरणों की कमी,शिक्षण भार की अधिकता वित्तीय असुरक्षा,पुरस्कार का अभाव,कार्य का सही मूल्यांकन न होना,प्रगति और पदोन्नति का अयोग्यता के आधार पर न होना आदि जैसे तत्वों का प्रमुख माना है।

इकर्ट (Eckert 1959) ने अपने [illegible] में पाया कि व्यावसायिक-असंतुष्टि का कारण,कार्य की स्थिति,दुर्बल,अभिज्ञान,[illegible] और कार्यभार है।

मैक्रलांहीन और शी (Maclaughin and Shea 1960) ने 793 प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के असंतुष्टि के कारणों का अध्ययन किया और पाया कि दोनो वर्ग के शिक्षकों के लिए असंतोष का मुख्य कारण ज्यादा लिपिक कार्य करना अपर्याप्त वेतन,सीखने के प्रति छात्रों का ऋणात्मक दृष्टिकोण हैं। प्राथमिक शिक्षक विद्यालय में पर्यवेक्षण कार्य,विद्यालय समयावधि के बाद कार्य,अपर्याप्त उपकरण एवं सुविधा में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों में ज्यादा असंतुष्टि पायी गयी। जबकि माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक कक्षा में बहुत अधिक छात्रों के नामांकन प्रभावहीन विद्यालयों अनुशासन एवं शिक्षक प्रशासक संबंध में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों से ज्यादा असंतुष्ट पाये गये।

हयाक (1960) ने कार्यरत प्रौढ़ों की व्यवसाय संतुष्टि का 27 वर्षो तक अध्ययन किया। उस अध्ययन के आधार पर उसने यह पाया कि अवस्था के साथ संतुष्टि भी बढ़ती जाती है।

बट्लर (Butler, 1961) ने 1958 के स्नातक जो शिक्षक बने थे, उन पर अध्ययन किया और पाया कि शिक्षकों के कार्य-संतुष्टि के मूल प्रशासक हैं। संतुष्ट शिक्षक प्रशासक को अच्छा बताया है जबकि असंतुष्ट प्रशासक में आत्म विश्वास की कमी पाते है। संतुष्टि के अंश में स्वतंत्रता का भी महत्वपूर्ण स्थान पाया गया इस अध्ययन में यह भी पाया गया कि संतुष्ट शिक्षक शिक्षण कार्य मे रहना चाहते है जबकि असंतुष्ट शिक्षक शिक्षण कार्य को छोड़ देना चाहते है।

किर्कपैट्रिक (Kirkpatrik, 1962) ने 10 विद्यालयों के 250 शिक्षकों का व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन किया और पाया कि व्यावसायिक-संतुष्टि के मुख्य पांच कारकों-प्रशासक से सम्बन्ध,नेतृत्व की गुणवत्ता,कार्य स्थिति के तत्व और वेतन संतुष्टि में से चार कारण प्रभावी है,जबकि एक कारक वेतन संतुष्टि का प्रभाव नहीं पाया गया।

हालिन और स्मिथ (1964) का कहना है कि केवल लिंग भेद के ही कारण उच्च और निम्न संतुष्टि नहीं होती बल्कि संतुष्टि के लिए सभी सम्बन्धित कारकों का समुदाय उत्तरदायी होता हैं। ये कारक है लिंग,वेतन,व्यवसाय का स्तर और प्रोन्नति के अवसर।

टर्नर और लारेन्स (1965) का सुझाव था कि बागवानी के काम करने वाले मध्यम श्रेणी के कर्मचारी में स्थान के आधार पर संतुष्टि या असंतुष्टि होती है। इन दोनों के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में कार्य करने वाले कर्मकार आपस में सौहार्दपूर्वक रहते हैं तथा नगरीय क्षेत्र में काम करने वाले कर्मकर कार्य की उपेक्षा करते है। उपेक्षा की भावना यह परिलक्षित करती है कि उनमें अपने व्यवसाय के प्रति संतुष्ट नहीं है।

सिंह और भटनागर (1966) ने उत्तर प्रदेश के बुलन्दशहर जिले के प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों के स्तर जानने के लिए एक बृहद अध्ययन किया। इन लोगों ने उनकी आर्थिक स्थिति और शैक्षिक पृष्ठ भूमि को भी अध्ययन में समावेश किया। मूर्ति (1979) ने मद्रास में लगभग 30 वर्ष के आयु में 48 क्लर्कों में जीवन स्तर से सम्बन्धित व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन किया। उन्होंने यह पाया कि मस्तिष्क की विकृति का व्यवसाय संतुष्टि पर अधिक प्रभाव पड़ता है।

जॉनसन **(Jonson, 1967)** ने प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के संतुष्टि एवं असंतुष्टि का अध्ययन किया। इस अध्ययन में पाया गया कि विकास, मान्यता **(Recognition)**

स्वयं कार्य एवं जिम्मेदारी कार्य संतुष्टि के मुख्य कारण है जबकि पॉलिसी एवं प्रशासन, कार्य की स्थिति और व्यक्तिगत जीवन व्यावसायिक असंतुष्टि के मुख्य कारण है।

सहाय (1964) ने दिल्ली के शहरी विद्यालयों के 200 शिक्षकों की व्यावसायिक-संतुष्टि का अध्ययन किया और पाया की भौतिक सुविधा का अभाव, प्रधानाचार्य एवं अन्य शिक्षकों से सम्बन्ध मुख्य रूप से व्यावसायिक-असंतुष्टि के कारण है जबकि कुछ शिक्षकों की असंतुष्टि के कारण छात्र भी पाए गये। वेतन पुरूषों के लिए महिलाओं की अपेक्षा असंतुष्टि का प्रबल कारक है।

यंग (Young, 1967) शिक्षकों का अपने व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के अध्ययनों में, जिसके 629 महिला शिक्षक शामिल थी, पाया की शिक्षको के असंतोष के कारण क्रमवार निम्न है :-

छात्रों के साथ कार्य करना, निष्पादन का संज्ञान, छात्रों को सहयोग करना, छुट्टियों का समय, कार्य के प्रकार, स्वतंत्रता, कार्य की प्रतिस्पर्धा, प्रतिष्ठा, आनन्ददायी कार्य स्थिति, छात्रों का अध्ययन करना, अध्ययन के लिए अवसर यात्रा आदि। लेकिन कुछ कारक, जैसे लिपिकीय कार्य, पत्रों का संशोधन, वेतन, पाठ्यक्रम एवं विद्यालयीय सुविधा, अभिभावक शिक्षक दिक्कते, प्रभावहीन प्रशासक, सामुदायिक समावेश, अनुशासन सम्बन्धित दिक्कते और अपने सहयोगियों के साथ असंतोषजनक संबंध व्यावसायिक असंतुष्टि के मुख्य कारण है।

अंजनेयुल (Anjaneyulu, 1968) ने अपने अध्ययन में पाया कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के असंतुष्टि के अलावा भी दृढ़ नियम, सेवा शर्त, जल्दी-जल्दी, स्थानान्तरण एवं माता-पिता का सहयोग भी अंसुष्टि के कारण है। स्थानीय संस्थानों के विद्यालयों के शिक्षकों के असंतुष्टि के मुख्य कारण दिन-प्रतिदिन राजनीतिज्ञों का समावेश, विद्यालय का कार्य, रहने की असुविधा एवं उपकरण का अभाव जबकि प्राइवेट विद्यालय के शिक्षकों में सेवा के सुरक्षा एवं पक्षपात मुख्य कारण है।

हानसेन एवं स्टेनले (Hanson & Stanley, 1969) ने लॉस एगलस, नगर के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों पर अध्ययन के फलस्वरूप पाया कि प्रगति, छात्रों से सम्बद्ध मान्यता (सम्मान) शिक्षकों के लिए मुख्य अभिप्रेरणा के स्रोत है। इस अध्ययन में पाया गया कि अनुशासन, एक दूसरे से सम्बन्ध स्वयं का कार्य, विद्यालय, राज्य की नीति एवं प्रशासन मुख्य रूप से कार्य असंतोष के कारण है।

सिंह और सिंह (1970) ने नवनियुक्त प्रशिक्षित अध्यापकों की समस्याओं का अध्ययन किया। परिणामस्वरूप अध्यापकों की मुख्य समस्याएं इस प्रकार थी : (अ) बिना कारण बताये अध्यापकों को सेवामुक्त करना, (ब) उनकी वार्षिक वेतन वृद्धि को रोक लेना, (स) सेवा की असुरक्षा, (द) कुछ लोगों के वेतन का भुगतान न करना तथा (य) अध्यापकों की कम वेतन स्तर पर नियुक्ति करना।

एक अध्ययन (1971) - एन0सी0ई0आर0टी0 द्वारा किया गया अध्ययन का उद्देश्य था कि अध्यापक अपनी कार्य-पद्धति को किस अंश तक स्वीकार कर रहा है। अध्ययन में मुख्य परिणाम थे : (1) विभिन्न प्रबन्ध समितियों के अधीन कार्य करने वाले अध्यापकों की अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पाया गया, (2) पुरुष और महिला की अभिवृत्तियों में सार्थक अन्तर पाया गया। (3) वैवाहिक स्थिति का व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का कोई प्रभाव नही था, (4) कम उम्र के अध्यापकों में अधिक उम्र के अध्यापकों की अपेक्षा धनात्मक प्रवृत्ति पायी गयी। धनात्मक अभिवृत्ति पायी गयी, (5) कम शिक्षित अध्यापकों में व्यवसाय के प्रति अधिक धनात्मक अभिवृत्ति पायी गयी।

वेंकटरायप्पा और मुक्ता (1971) ने प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के जीवन के विभिन्न पक्षों पर एक अध्ययन किया था जीवन के विभिन्न पक्ष थे। विद्यालय परिवार, समुदाय, आर्थिक स्थिति तथा कतिपय सामाजिक समस्याओं के प्रति उनकी अभिवृत्ति। अध्ययन के मुख्य परिणाम थे : (1) अध्यापकों की शैक्षिक

सम्प्राप्ति बहुत ही निम्न कोटि की थी तथा कई वर्षो तक अपरिवर्तित रही, (2) उनकी आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर थी, तथा कई वर्षो तक उसी प्रकार थी, (3) अधिकांश अध्यापक गरीब परिवारों से आये हुए थे, (4) सामाजिक कार्यो में वे बहुत कम भोग लेते थे, इससे उनकी पहचान बहुत ही निम्न थी (5) वे अपने क्रियाकलापों द्वारा समुदाय पर अधिक प्रभाव डालना चाहते थे, जबकि उन्हें छात्रों पर अधिक ध्यान देना चाहिए तथा (6) परिवार नियोजन की दिशा में वे अधिक सतर्क पाये गये।

बाजवा और फुटेला (1972) ने लुधियाना के खालसा कालेज के प्राचीन छात्रों का एक अनुगमनात्मक अध्ययन किया। उन्होंने प्रशिक्षित अध्यापकों के सेवा नियोजन के प्रकार तथा सेवा की प्रकृति का सर्वेक्षण किया। उनके अध्ययन का क्षेत्र था कि एक व्यवसाय से दूसरे व्यवसाय में वे कहां तक समायोजन कर पाते हैं। इस प्रकार इस अध्ययन में प्राचीन छात्रों के व्यवहारिक अनुभव के प्रकाश में प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रभाव का विश्लेषण किया गया। अध्ययन के परिणाम थे। 85 प्रतिशत छात्र सेवा में थे, 30 प्रतिशत अध्यापक थे और 5 प्रतिशत अन्य सेवा में थे। सभी प्राचीन छात्रों ने यह अनुभव किया कि वे रिफ्रेशर कोर्स तथा सेमिनार के माध्यम से अपने प्रशिक्षण विद्यालयों के निरन्तर सम्पर्क में रहें। उन्होंने यह भी किया कि शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान उनके व्यवसाय में सबसे अधिक सहायक है।

सालेह और सिंह (1973) ने अपने अध्ययन में पिता के व्यवसाय के कौशल स्तर तथा स्वभाविक कार्य मूल्यों के मध्य धनात्मक सम्बन्ध पाया। इससे यह ज्ञात हुआ कि पिता का व्यवसाय समाजीकरण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण कारक है तथा बच्चों के कार्यपरक मूल्यों की शिक्षा देने में महत्वपूर्ण है। सफेद पोशधारी जो कि मध्यमवर्गीय समझे जाते है उनके विभिन्न समुदायों में व्यवसाय की प्रकृति व्यवसाय के आधार के भिन्न-भिन्न कारकों के कारण निश्चित की जाती है। प्रदत्तों से यह पता चलता है कि स्वाभाविक प्रवृत्ति कौशलविहीन, तकनीकी, व्यावसायिक क्षेत्रों में बढ़ती है। यदि पिता के कार्य मूल्य बच्चों में संरचित किये जाते है। इससे हम यह

कह सकते है कि पिता का व्यवसाय परिवार के सामाजिक वर्ग का द्योतक है। इससे यह भी ज्ञात होता है कि मध्यम वर्गीय समुदाय व्यवसाय के वाह्य पक्ष पर अधिक जोर देता है।

इन्द्रसेन (1974) ने भारत और इंग्लैण्ड के 13 विभिन्न इंजीनियरिंग एवं तकनीकी संस्थानों के 208 अध्यापकों का अध्ययन किया। उनके अध्ययन से यह पाया गया कि सामाजिक और अन्य उच्च कोटि के आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए अध्यापकों के पर्यवेक्षक के रूप में कार्य करने की अनुमति दी जानी चाहिए। संतुष्टि के लिए निम्नकोटि के भौतिक आवश्यकताएं पर्याप्त नहीं है। व्यवसाय संतुष्टि के लिए पर्यवेक्षण के सम्बन्ध में निम्नलिखित बिन्दु प्राप्त हुए :- (1) कार्य शीघ्रता के लिए उत्साह, (2) निम्न कर्मचारियों से मिलने की इच्छा, (3) पुरस्कार देने का अधिकार (4) अधीनस्थ कर्मचारियों के कौशल के बारे में ज्ञान, (5) दो देशों के अध्यापकों के संस्कृतियों की तुलना। इस अध्ययन में यह पाया गया कि कार्य करने का प्रसंग ज्यादा महत्वपूर्ण है, कार्य करने का प्रकार उतना महत्वपूर्ण नहीं हैं।

लाविन्जिया (1974) ने अध्यापकों में व्यवसाय संतुष्टि की मात्रा तथा अध्यापक की स्थिरता पर व्यवसाय संतुष्टि से प्रभाव के मापने के लिए एक अध्ययन किया जिसमें मुख्य निष्कर्ष इस प्रकार थे। (1) माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापकों की अपेक्षा प्राथमिक के अध्यापक अधिक संतुष्ट थे, (2) महिला अध्यापिकाएं पुरुष अध्यापकों की अपेक्षा अधिक संतुष्ट थी, (3) व्यवसाय की क्षमता और व्यवसाय संतुष्टि में धनात्मक सह-सम्बन्ध था, (4) प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के 20 से 24 वर्ष की अवस्था वाले नवयुवक अध्यापक अधिक संतुष्ट थें, (5) अविवाहित अध्यापक और अधिक संतुष्ट थे।

सिंह (1974) ने यह जानने का प्रयास किया कि क्या अध्यापकों की अभिवृत्ति उनके व्यवसाय के लिए सकारात्मक है तथा क्या वे अपने व्यवसाय से

संतुष्ट है? इस अध्ययन से यह पाया गया कि व्यवसाय संतुष्टि के अन्य सभी कारकों से अध्यापक लोग मध्यम रूप से संतुष्ट थे। वे केवल आर्थिक, लाभ, शारीरिक सुविधाएं और प्रशासन से संतुष्ट नहीं थे। यह भी पाया गया कि अवस्था के अन्तर के कारण उनकी संतुष्टि में कोई अन्तर नही था। महिला अध्यापिका और अविवाहित अध्यापक या अध्यापिकाएं, पुरुष और विवाहित अध्यापकों या अध्यापिकाओं की अपेक्षा अधिक संतुष्ट थे।

छाबरा (1975) ने निम्नलिखित उद्देश्यों से एक अध्ययन किया (1) मनोबल, समायोजन, अध्ययन की आदत और मूल्य जैसे चरो से सम्बन्धित मेरठ जिले के माध्यमिक और कालेज अध्यापकों के न्यायदर्श का तुलनात्मक सर्वेक्षण करना, (2) लिंग अध्यापन अनुभव और शैक्षणिक सम्प्राप्ति के स्तर से सम्बन्धित उपर्युक्त चरों में अन्तर का अन्वेषण करना। मुख्य परिणाम इस प्रकार थे। (1) महिला अध्यापिकाओं का मनोबल पुरुष अध्यापकों के मनोबल से ऊँचा था, (2) शैक्षणिक सम्प्राप्ति में स्तर का मनोबल पर कोई प्रभाव नहीं था, (3) मनोबल और पुरुष अध्यापकों के आर्थिक मूल्यों में निषेधात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

पाउण्ड और नारवुड (1973) ने स्कूल के कलैण्डर के प्रकारों और अध्यापकों के व्यवसाय संतुष्टि के मध्य सम्बन्ध की खोज के विषय में राष्ट्रीय स्तर पर एक अध्ययन किया। उन्होंने व्यवसाय संतुष्टि के मापन के लिए मिलेसोटा-संतुष्टि प्रश्नावली का प्रयोग किया। विद्यालय के कलैण्डर के प्रकार तथा अन्य विद्यालय सम्बन्धी चरों के मध्य प्राप्त सम्बन्धों में निम्नलिखित तथ्य प्रस्तुत किये।

1. विद्यालय कलैण्डर के प्रकार एवं व्यवसाय संतुष्टि में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया गया किन्तु तथ्य उद्घाटित हुआ कि जो अध्यापक वर्ष भर के कार्यक्रमों में रुचि रखते हैं उनके द्वारा शिक्षा में गुणात्मक वृद्धि हुई है तथा अनेक

अध्यापकों 9-3 कार्यक्रमों के कार्यक्रम का पालन करते है उनके अनुसार वर्ष भर के शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रभाव शिक्षा में गुणात्मक सुधार नहीं ला पाता।

2. अध्यापकों की व्यवसाय संतुष्टि यदि स्वाभाविक कारक सक्रिय न हो तो, वाह्य कारकों पर निर्भर नहीं रहती।

हस्की (1973) के अध्ययन का निष्कर्ष है कि कौशल और ज्ञान के प्रयोग तथा व्यवसाय संतुष्टि में उच्च सह-सम्बन्ध है। यह प्रायः कहा जाता है कि व्यक्ति यदि अपने कौशल और ज्ञान का प्रयोग करता है तो अपने व्यवसाय से अधिक संतुष्ट रहता है। यहां पर कौशल और ज्ञान का प्रयोग के तरीके के अनुसार व्यवसाय संतुष्टि में बढ़ोत्तरी या घटोत्तरी होती रहती है। यदि कर्मचारी किसी अभाव से ग्रस्त है तो वह अपने कौशलों का उचित उपयोग भी नहीं कर पाता और व्यवसाय संतुष्टि में भी कमी आ जाती है।

स्टाकर्मो (1973) ने अमेरिका के सैन्य चिकित्सा सेवा में कतिपय ने हुए कम्पनी ग्रेड की अधिकारियों की व्यवसाय संतुष्टि के स्तर में अन्तर जानने के लिए एक अध्ययन किया। इनमें दो प्रकार के अधिकारी थे। प्रथम ऐसे व्यक्ति थे जो अपने कार्य में बहुत ही सक्रिय थे और दूसरे, जो सेना भी रहना चाहते थे। मतावली में 72 कथन थे जिसका प्रयोग व्यवसाय संतुष्टि की जानकारी के लिए किया गया। जिन क्षेत्रों को अध्ययन में लिया गया वे इस प्रकार थे- वेतन तथा अन्य आकस्मिक लाभ, सेवा सुरक्षा, प्रशासन और नीति, स्तर और सहकर्मियों के साथ आपसी सम्बन्ध, अपने उच्चाधिकारियों के साथ सम्बन्ध, सैन्य जीवन, सैन्य जीवन के कार्य, व्यवसायिक उन्नति, अपनी पहचान, सफलता और उत्तरदायित्व। इस अध्ययन के द्वारा यह परिणाम प्राप्त हुआ कि जो अधिकारी सेना की सेवा में रहना चाहते हैं तथा जो सेना की सेवा में रहना चाहते, दोनों के व्यवसाय संतुष्टि के स्तर में सार्थक अन्तर है। अध्ययन में यह पाया गया कि सेवा सुरक्षा के अतिरिक्त अन्य भी जितने भी

12 क्षेत्र है उनमें दोनों श्रेणियों के अधिकारियों की व्यवसाय संतुष्टि के स्तर में सार्थक अन्तर है।

बर्टल (1974) ने एक अध्ययन में यह जानने के लिए किया कि प्रभावशाली महिला नेत्रियों का उनके अधीनस्थ कर्मचारियों की व्यवसाय संतुष्टि के स्तर पर कोई प्रभाव पड़ता है। इस अध्ययन में कई प्रकार के न्यायदर्श लिये गये, जैसे-पुरुष नेता एवं पुरुष अनुगामी, स्त्री नेत्री एवं स्त्री अनुगामी एवं स्त्री अनुगामिनी। इस अध्ययन से यह पाया गया कि अपने को अधिक से अधिक प्रभावशाली बनाने वाली महिलाओं के अधीनस्थ कर्मचारियों की व्यवसाय-संतुष्टि पर कोई हानिकारक प्रभाव नहीं पड़ता।

पार्कर (1974) ने विरजिनिया विश्वविद्यालय में एक अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य था कि ग्रामीण, अर्धशहरी एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की व्यवसाय संतुष्टि और इन विद्यालयों के संगठ्नात्मक वातावरण के सम्बन्ध में जानना। संगठ्नात्मक वातावरण के लिए आर्गनाइजेशनल क्लाइमेंट डिस्क्रिप्शन क्वेश्चनेयर का प्रयोग किया गया तथा व्यवसाय संतुष्टि के लिए मिनेसोटा संतुष्टि प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। परिणाम से यह पता चला कि प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की व्यवसाय संतुष्टि और विद्यालय के संगठ्नात्मक वातावरण के मध्य धनात्मक सह सम्बन्ध है।

रास (1974) ने अल्पकालीन सेवा कार्य गोष्ठी और अध्यापक व्यवसाय संतुष्टि से सम्बन्धित सूचना एकत्रित करने के लिए एक अध्ययन किया। व्यवसाय संतुष्टि के स्तर के मापन के लिए का प्रयोग किया गया। इसके कुछ परिणाम इस प्रकार हैं- कार्य गोष्ठी के अनुभव कम से कम 2 सप्ताह तक अध्यापकों की व्यवसाय संतुष्टि धनात्मक प्रभाव डालते है। प्रयोगात्मक समुदाय तथा नियंत्रित समुदाय की व्यवसाय संतुष्टि में सार्थक अन्तर पाये गये।

विलिस (1975) ने एक अध्ययन किया। अध्ययन का विषय था पब्लिक एकाउण्टिंग फर्म द्वारा कर्मचारियों का चयन एवं नियुक्तियाँ उसके लिए उन्होंने सिक्सटीन पर्सनालिटी फैक्टर प्रश्नावली का प्रयोग किया तथा उसकी वैधता का मापन किया। वैधता के आधार पर पब्लिक एकाउण्टेन्ट की व्यवसाय संतुष्टि से सम्बन्धित कारकों को उद्घाटित किया। जो कारक संतुष्टि से सम्बन्धित थे उनकी पहचान होने से प्रशासक को बड़ी सहायता मिली। प्रशासकों ने असंतुष्टि के कारकों को दूर करने का प्रयत्न किया जिससे पब्लिक संगणक के कार्य में अच्छा वातावरण में मिलने से सुधार हुआ। इस अध्ययन में तृतीय उद्देश्य था, व्यक्तित्व के चरों और व्यवसाय संतुष्टि के कारकों को दूर करने का प्रयत्न किया जिससे पब्लिक संगणक के कार्य में अच्छा वातावरण मिलने में और व्यवसाय संतुष्टि के मध्य सम्बन्ध का मापन करना। इस अध्ययन के द्वारा पहले किये गये शोधों का निष्कर्ष था कि व्यवसाय संतुष्टि केवल किये जाने वाले व्यवसाय से ही प्रभावित नहीं होती है बल्कि कार्य करने वाले व्यक्ति में व्यक्तित्व से भी प्रभावित होती है। इस अध्ययन द्वारा निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए।

1. महिला संगणक, पुरुष संगणकों की अपेक्षा कुछ कम संतुष्ट पायी गयी।

2. अन्य स्तरों के गणकों की अपेक्षा कार्य करने वाले गणक अधिक संतुष्ट पाये गये।

3. कम अवस्था वाले संगणक अधिक अवस्था वाले संगणकों की अपेक्षा कम संतुष्ट पाये गये।

4. व्यवसाय संतुष्टि का वेतन के स्तर से सीधा सम्बन्ध है।

5. जिन संगणकों की कम अवधि की सेवा है उनकी व्यवसाय संतुष्टि दीर्घ अवधि की सेवा वाले संगणकों की अपेक्षा कम पायी गयी।

6. व्यवसाय संतुष्टि और विशेषता वाले क्षेत्रों में सम्बन्ध प्रायः नगण्य पाया गया।

उपर्युक्त प्राप्त किये गये परिणामों में से अधिकांश व्यवसाय संतुष्टि पर किये गये पूर्व अध्ययनों के परिणामों से मेल खाते है।

विलिस (1977) ने एक अध्ययन किया जिसमें यह दिखलाया गया कि प्रासंगिक कारकों से होने वाला संतोष अच्छे कार्य के प्रभावित करता है तथा कार्य के लिए प्रेरित करता है। प्रासंगिक कारकों से यदि असंतोष होता है तो वह कर्मचारी की क्षमता को कम करता तथा कार्य के लिए धनात्मक दृष्टि में सहायक नहीं होता। इसका कारण यह है कि यदि प्रासंगिक कारकों से असंतोष हुआ तो कर्मचारी का ध्यान कार्य से बट जाता है और उसकी शक्ति पूर्व अनुभूत कार्यो के लिए अग्रसर होने लगती है। यदि व्यक्ति कार्य के प्रसंग में अपेक्षाकृत संतुष्टि प्राप्त करता है तो उसकी शक्ति कार्य में अधिक सफलता के लिए उन्मुख होती है तथा अच्छे कार्य करने के लिए उसे प्रेरणा मिलती है। ऐसे व्यक्ति द्वारा किये गये कार्यो तथा उनके परिणामों में उत्तमकोटि का सम्बन्ध रहता है क्योंकि आन्तरिक कार्य परक प्रेरणा व्यक्ति की व्यवसाय संतुष्टि को प्रभावित करती है। ऐसी अध्ययनों से इस प्रकार की मान्यता को बल मिलता है कि कर्मचारी की आवश्यकता और कार्य से संतुष्टि का स्तर दोनों मिलकर उत्तम कोटि के कार्य से संतुष्टि का स्तर दोनों मिलकर उत्तम कोटि के कार्य करने की प्रेरणा देते है। इस मान्यता को सिद्ध करने के लिए एक बहुत बड़े बैंक के 201 क्लर्क ग्रेड के कर्मचारियों का चयन किया गया और उनके द्वारा प्रदत्तों का संकलन किया गया। उनके उत्तरों से इस मान्यता को बल मिला कि कर्मचारी की आवश्यकता और उनकी व्यवसाय संतुष्टि के स्तर दोनों के मिलने से उत्तरोत्तर अच्छे कार्य में वृद्धि होती है।

क्लार्क (Clark, 1976) ने उत्तर पूर्व पेनसाइलवानिया के 24 सीनियर माध्यमिक विद्यालयों से 1020 शिक्षकों के कार्य संतुष्टि का अध्ययन किया। इस अध्ययन में यह पाया गया कि आंतरिक तत्व उच्च व्यावसायिक-संतुष्टि वाले शिक्षकों से ज्यादा पायी गयी। वाह्य कारक आंतरिक घटक से ज्यादा असंतोष कारक हैं फिर भी ज्यादा व्यावसायिक संतुष्टि वाले शिक्षकों का वाह्य कारक पर निम्न कार्य संतुष्टि वाले शिक्षकों से प्राप्तांक उच्च पाया गया।

वासुदेव और राजबीर (1976) ने निष्कर्ष निकाला कि यद्यपि अनेक कारक जैसे- स्वाभाविक, वेतन, पदोन्नति, का अवसर, प्रबन्ध, व्यवसाय- प्रसार एवं लाभ के सामाजिक पक्ष, व्यवसाय संतुष्टि से सम्बन्धित हैं फिर भी प्रत्येक कारक अलग-अलग संतुष्टि के कारक न होकर इनकी आपस में अन्तः क्रिया व्यवसाय संतुष्टि के लिए मुख्य कारक का कार्य करती है।

सुखावल (1977) वे विवाहित महिला अध्यापिकाओं की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के मापन के लिए एक अध्ययन किया। उन्होंने विवाहित अध्यापिकाओं की समस्याओं के अध्ययन के लिए एक अभिवृत्ति मापनी भी बनायी तथा विभिन्न प्रकार के व्यवसायों को चुनने के कारणों का भी विश्लेषण किया। कुछ मुख्य परिणाम इस प्रकार थे (1) अधिकांश अध्यापिकाओं ने इस व्यवसाय को प्रसंग किया उनके पक्ष और विपक्ष की अभिवृत्तियाँ में बहुत सार्थक अन्तर दिखलायी पड़ा (2) उम्र बढ़ने के साथ-साथ व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति में पक्षात्मक विकास में बढ़ोत्तरी देखी गयी (3) अनुभव के साथ-साथ व्यावसायिक अभिवृत्ति पक्षात्मक विकास में बढ़ोत्तरी देखी गयी, (4) योग्यता तथा अध्यापकों का प्रशिक्षण व्यवसाय के प्रति पक्षात्मक अभिवृत्ति उत्पन्न करती है।

टक्कर (1977) ने यह जानने के लिए एक अध्ययन किया कि- (1) एक अध्यापक एक छात्र के अधिक सम्बन्ध से अच्छा शिक्षण होता है, (2) क्या अच्छे यश

के इच्छुक अध्यापक कम यश के इच्छुक अध्यापकों से शैक्षिक अभिवृत्ति के सम्बन्ध के माध्यम सह सम्बन्ध जानना, व्यवसाय संतुष्टि और संबन्ध के बीच सहसम्बन्ध जानना, अवस्वस्थ और सम्बन्ध के बीच सहसम्बन्ध जानना तथा अनुभव और सम्बन्ध के बीच सहसम्बन्ध जानना। अध्ययन का यह परिणाम यह बतलाया है कि शैक्षिक समस्याओं और उच्च सम्बन्ध वाले विषयों एवं निम्न सम्बन्ध वाले विषयों के मध्य अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है। द्वितीय परिणाम यह प्राप्त हुआ कि शैक्षिक समस्याओं की अधिकांश श्रेणियों तथा पर्यवेक्षकों और अधीनस्थ कर्मचारियों के मध्य अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है। तृतीय परिणाम यह पाया गया कि अवस्था और सम्बन्ध में सार्थक निषेधात्मक सहसम्बन्ध है और व्यवसाय संतुष्टि और सम्बन्ध में धनात्मक सहसम्बन्ध है।

सुलर (1977) का कहना है कि उच्च योग्य कर्मचारी ऐसे संगठन में बहुत सतुष्ट नही रह सकते जहाँ वैयक्तिक भिन्नता पर ध्यान न देकर कठोरता का व्यवहार किया जाता है पर यह स्थित कार्य अनुभव के प्रथम कुछ वर्षो तक ही सीमित रहती है।

नीयर आदि (1978) ने कार्य और अतिरिक्त कार्य से जीवन संतुष्टि एवं व्यवसाय के सम्बन्धों का अध्ययन किया। उन्होंने यह पाया कि शिक्षा विश्वसनीय रूप से व्यवसाय संतुष्टि से सम्बन्धित है, पर शिक्षा का व्यवसाय संतुष्टि पर बहुत अधिक प्रभाव नहीं है। यह बहुत ही दिलचस्प तथ्य प्राप्त हुआ कि इण्टरमीडिएट स्तर की शिक्षा प्राप्त करने वालों की व्यवसाय संतुष्टि का स्तर सबसे निम्न था। यद्यपि ये परिणाम कैम्पवेल आदि (1976) द्वारा पूर्व में किये गये परिणामों के ठीक विपरीत है।

अग्रवाल (1978) ने कुछ कर्मचारियों पर अध्ययन किया और उन्होंने पाया कि प्रेरणा व्यवसाय संतुष्टि के लिए अधिक दायक है। इस प्रकार उनका निष्कर्ष था कि व्यवसाय संतुष्टि के लिए प्रेरक तत्वों का समावेश आवश्यक है।

गणेशन और बालकृष्णन (1978) ने अपने अध्ययन में पाया कि पुरुष असिस्टेण्ट प्रोफेसर की व्यवसाय, संतुष्टि का स्तर अधिक ऊँचा है और पुरुषों की अपेक्षा महिलाएं उत्तरदायित्व, वेतन और आपसी सम्बन्धों में अधिक संतुष्ट है। पुरुष अध्यापकों की दशा में कार्य में व्यस्त करना, उत्तरदायित्व की भावना रखना विभागीय अध्यक्ष की कुशलता, विभागीय अध्यक्ष से सम्बन्ध रखना, अपने सहकर्मियों से सम्बन्ध रखना आदि के बारे में यदि संतोषजनक स्थिति होती है तो ऐसे अध्यापक अपने व्यवसाय में संतुष्ट रहते हैं। जबकि महिलाओं की व्यवसाय संतुष्टि के मुख्य कारण सफलता में विकास और संगठन की नीतियाँ है।

मेहता (1978) ने यह सिद्ध किया कि व्यवसाय संतुष्टि के लिए आर्थिक कारक एक प्रमुख साधन है। उन्होंने एक परिकल्पना ली जो इस प्रकार थी : जीवन की संतुष्टि कार्य करने की स्थित को अग्रसर करती हैं। इस परिकल्पना को सिद्ध करने के लिए उन्होंने प्रदत्तों का संकलन किया और यह परिणाम निकाला कि प्रभावपूर्ण ढंग से कार्य करना, कार्य करने के स्थान पर सुविधाएं कार्य की प्रकृति, पर्यवेक्षक का व्यवहार, गरीबों से आपसी सम्बन्ध, जीवन में संतुष्टि लाते है और जीवन की संतुष्टि से कार्य की स्थित आगे बढ़ती है।

परमाजी (1978) ने निम्नलिखित बिन्दुओं के सम्बन्ध का अध्ययन किया : (1) सामान्य उच्च शिक्षा और व्यवसाय आकांक्षा (2) सामान्य उच्च शिक्षा और लिपिक व्यवसाय संतुष्टि, (3) सामान्य उच्च शिक्षा और लिपिक कार्य क्षमता, (4) व्यवसाय आकांक्षा और लिपिक व्यवसाय संतुष्टि। परिणामों से यह पता चला कि व्यवसाय आकांक्षा शिक्षा के स्तर के साथ बढ़ती जाती है और अधिक शिक्षित व्यक्ति शारीरिक श्रम सम्बन्धी व्यवसायों के प्रति उदासीन रहते है। शिक्षा के स्तर क्लर्क ग्रेड के कर्मचारियों की व्यवसाय संतुष्टि में निषेधात्मक सम्बन्ध रहता है। व्यवसाय संतुष्टि के मांपों और लिपिक सम्बन्धी कार्यों की क्षमता में सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

एल्बाज (1979) ने यहूदी स्कूलों के प्रशासकों की संतुष्टि और असंतुष्टि के स्रोतों को जानने के लिए एक अध्ययन किया। विश्लेषण द्वारा यह ज्ञात हुआ कि कारकों की सूची जब उचच से निम्न के अनुक्रम में रखी गयी तो वह इस प्रकार थी। सफलता आपसी सम्बन्ध, विकास की सम्भावना पर्यवेक्षण उन्नति, पहचान कम्पनी में कार्य करने की नीति, वेतन का उत्तरदायित्व सेवा सुरक्षा, कार्य करने की दशा के कारण यदि धनात्मक दिशा में जाते है तो संतुष्टि होती है और यदि ऋणात्मक दिशा में जाते है तो असंतुष्टि होती है।

आर्गेलन (1979) ने एक अध्यन किया जिसके द्वारा उसे यह प्राप्त करना था कि क्या मैक्सिन अमेरिकन प्रशासकों और अन्य पब्लिक स्कूल के प्रशासकों की व्यवस्था संतुष्टि में सार्थक अन्तर है। इस अध्ययन द्वारा निराकरणीय परिकल्पना का परीक्षण किया गया तथा यह पाया गया कि मैक्सिकन अमेरिकन प्रशासकों और अन्य पब्लिक स्कूल के प्रशासकों की व्यवसाय संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

काननूगो (1979) ने व्यवसाय समावेश के अध्ययन के लिए प्रेरणात्मक तरीके से प्रस्ताव किया। उनके अनुसार स्वाभाविक प्रेरणा और व्यवसाय समावेश के मध्य प्रत्यात्मक अन्तर है। वह यह कहते है कि व्यवसाय समावेश की सम्भावना संतुष्टि से बढ़ सकती है।

सत्यदास (1979) ने अध्यापकों और क्लर्को की व्यवसाय, संतुष्टि के स्तर के सम्बन्ध में अध्ययन किया और उनकी प्रकृति का भी परीक्षण किया। उनके अनुसार क्लर्को और अध्यापक के मुखर होने और वैचारिक स्तर दोनों में सार्थक अन्तर है। अध्यापक और क्लर्क जो अपने व्यवसाय से असंतुष्ट है वे संतुष्टों की अपेक्षा अधिक चिन्ताग्रस्त हैं। संतुष्ट अध्यापक और क्लर्क अधिक मुखर पाये गये। मुखर होना अध्यापकों और क्लर्को दोनों की व्यवसाय संतुष्टि के लिए अधिक महत्त्वपूर्ण है।

शाह (1979) ने माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के कार्य क्षेत्र के सामाजिक सर्वेक्षण किया। उन्होंने अध्यापकों, छात्रों, प्रधानाचार्यो, परिषद के सदस्यों, अभिभावकों और सामुदायिक कार्यकर्ताओं से अध्यापकों को कार्यपद्धति के बारे में मत एकत्रित किये। इसके द्वारा उन्होंने यह देखने का प्रयत्न किया कि किस प्रकार विभिन्न समुदायों के मत एक-दूसरे से भिन्न हैं। उन्होंने यह भी पाया कि सामाजिक पृष्ठभूमि के आधार पर भी अध्यापकों की कार्य पद्धति में अन्तर होता है।

देव और सिंह (1980) ने विश्वविद्यालय अध्यापकों की व्यवसाय संतुष्टि के विषय में अध्ययन किया। अध्ययन में 116 विश्वविद्यालय के अध्यापकों को लिया गया और इतनी ही संख्या पंजाब कृषि विश्वविद्यालय से ली गयी। परिणाम यह पाया गया कि कृषि विज्ञान के अध्यापकों में 64.10 प्रतिशत व्यवसाय संतुष्टि थी सामान्य विज्ञान के अध्यापकों में 53.85 प्रतिशत व्यवसाय संतुष्टि थी।

बर्गमैन (1981) ने भी अपने अध्ययन में यह पाया कि व्यक्तिगत उन्नति के संतुष्टि और व्यवसाय संतुष्टि तथा विकास में बहुत धनात्मक सहसम्बन्ध है।

रेड्डी एवं बबजन (Reddy & Babjan, 1981) ने 240 माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के कार्य संतुष्टि पर विवाहित शिक्षकों के बीच अंतर ज्ञात किया और पाया कि दोनों के बीच सार्थक अंतर है।

आरपेन (1981) ने संतुष्टि और पुरस्कार परक कार्य सम्पादन के मध्य सम्बन्ध बनाने के लिए एक अध्ययन किया। उसने देखा कि समय से वेतन देना व्यवसाय संतुष्टि के लिए बहुत सहायक होता है उसके अध्ययन में कार्य के स्तर और व्यक्ति में संतोष के मध्य सम्बन्धों का परीक्षण किया गया। परिणाम से यह प्राप्त हुआ कि लगातार उतना हित करने से कार्य में प्रगति होती है तथा मनमाने ढंग से उत्साहित करने पर कार्य में धीमी प्रगति होती होती है तथा मनमाने ढंग से उत्साहित करने

पर कार्य की धीमी प्रगति होती रहती है। इस कार्य द्वारा यह संकेत मिला कि वास्तविक कार्य की स्थिति में काले कर्मचारी समय-समय पर कुछ पुरस्कार देने के फलस्वरूप उचित ढंग से कार्य करते हैं।

सिंह, गुप्ता और रस्तोगी (1981) ने व्यवसाय समावेश में लिंग और वैवाहिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन किया। परिणाम से यह प्रतीत हुआ कि व्यवसाय, समावेश, विवाहित और पुरूष व्यक्तियों में स्त्रियों की अपेक्षा अधिक हैं।

त्रिपाठी, श्रीवास्तव एवं मिश्रा (1981) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों की व्यवसाय संतुष्टि में कुछ बहिर्भूत कारक जैसे- लिंग, अवस्था, अनुभव और योग्यता के प्रभाव का अध्ययन किया। व्यवसाय संतुष्टि के स्तर के अध्ययन के लिए 40 प्रश्नों की व्यवसाय संतुष्टि प्रश्नावली एक न्यायदर्श को दी गयी। परिणाम से यह ज्ञात हुआ कि लिंग और अनुभव जैसे बहिर्भूत कारक माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों की व्यवसाय संतुष्टि के स्तर पर सार्थक प्रभाव डालती है। यह परिलक्षित हुआ कि 35 साल के कम अवस्था के अध्यापक 35 वर्ष से ऊपर की अवस्था को अध्यापकों की अपेक्षा अधिक संतुष्ट है। यह पाया गया कि स्नातक स्तर के नीचे के तथा स्नातक स्तर के अध्यापकों की व्यवसाय संतुष्टि के स्तर में सार्थक अन्तर है। जब स्नातक स्तर के नीचे के अध्यापकों की और परास्नातक के अध्यापकों में तुलना की गयी तो यह पाया गया कि दोनों वर्गो में व्यवसाय संतुष्टि का स्तर समान है। उसी प्रकार प्रशिक्षित स्नातकों और परास्नातकों की व्यवसाय संतुष्टि के स्तर में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

वेंकटरमन और अनन्तरमतः (1981) ने तीन प्रबन्धकीय वर्गो की आवश्यकता संतुष्टि और आवश्यकता महत्व की मात्रा प्राप्त करने के लिए एक अध्ययन किया। परिणाम से यह पाया गया कि तीनों प्रबन्धकीय वर्गो की आवश्यकता पूर्ति में कमियाँ हैं।

पटनायक और पण्डा (1982) ने लिंग के आधार पर अच्छे और गरीब माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के व्यक्तित्व और उनकी अभिवृत्ति में अन्तर का परीक्षण किया। उनका निष्कर्ष था कि व्यक्तित्व और अभिवृत्ति की प्रभावशीलता का एक महत्वपूर्ण अंश है।

शान्तमणि (1983) के अध्ययन का उद्देश्य था कि संतुष्टि समावेशन मापनी के प्राप्तांक के आधार पर दो स्वतंत्र वर्गो से परिचय प्राप्त करना तथा विभिन्न चरों के आधार पर वर्गो की तुलना करना इस प्रसंग में लोधा और केजनर ने 20 प्रश्नों वाली व्यवसाय समावेशन मापनी का प्रयोग किया गया तथा वर्तमान संतुष्टि के मापन के लिए एक दूसरी मापनी का प्रयोग किया गया। मुख्य निष्कर्ष यह निकाला कि सम्बन्धित व्यवसाय समावेशन के प्राप्तांकों के आधार पर संगठनात्मक पक्षों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है। जिनमें व्यवसाय समावेशन कम होता है वे अपने व्यवसाय से कम संतुष्ट होते हैं। इस प्रकार यह भी पाया गया कि उच्च समावेशन वाले व्यक्ति निम्न समावेशन वाले व्यक्तियों की अपेक्षा अपने व्यवसाय में अधिक रुचि रखते हैं।

हालैण्डर (1983) का कथन है कि व्यवसाय संतुष्टि लगभग एक नया प्रत्यय है और अब लोग पूर्णतया अपने जीवनयापन के लिए कार्य करते रहे हैं। इस आशा में कि व्यवसाय उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति करेगा इस विचार को कोई महत्व नहीं देता था। फिर भी वर्तमान समय में ऐसे विचार दिन-प्रतिदिन उद्भूत होते जा रहे हैं न पसन्द करने की भावना, कार्य से चिढ़ अथवा उदासीना, कौशल के अभाव नहीं हो रही है बल्कि वर्तमान कार्य का स्वरूप बहुत ही सीमित हो गया है तथा उनमें वैयक्तिक मूल्यों का अभाव है। व्यक्ति के मध्य के जीवन में बहुत अधिक मात्रा में अधिक से अधिक परिवर्तन हो रहे है ये परिवर्तन व्यवसाय, असंतुष्टि, गतिशील, परिवार, प्रेरणा की आवश्यकता तथा अधिभाषिक संवेगों के कारण हो रहा है।

फिलिप्स (1983) ने सेवियत यूनियन में व्यवसाय संतुष्टि के कतिपय पक्षों को जानने के लिए अध्ययन किया। कारखानों में नवयुवकों के अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि व्यक्तिगत आकांक्षाएं, कार्य में रुचि और आम प्रत्यय का व्यवसाय संतुष्टि पर विशेष प्रभाव पड़ता है। यद्यपि सोवियत यूनियन के अध्ययनों ने यह दिखलाया है कि कार्य संतुष्टि के स्तर पर उत्पादकता में कोई सम्बन्ध नहीं है। कार्य-संतुष्टि का सीधा सम्बन्ध कार्य करने की स्थित, कौशल में स्तर और अभिप्रेरण से है।

फिलिप्स आदि (1983) ने 99 कर्मचारियों तथा उनके आठ पर्यवेक्षकों के सम्बन्ध में अध्ययन किया। ये कर्मचारी तथा पर्यवेक्षक अपने-अपने संघों में पूर्ण रूप से सक्रिय थे। परिणम ये बतलाते हैं कि पर्यवेक्षकों में अधीनस्थ कर्मचारियों की अपेक्षा अधिक संतुष्टि थी। पर्यवेक्षकों की उच्च संतुष्टि का यह कारण हो सकता है कि उन्हें अपने संगठन से महत्वपूर्ण सम्मान मिलता था और वे अपने पदों से संतुष्ट थे। पर्यवेक्षकों में अधीनस्थ कर्मचारियों की अपेक्षा अधिक संतुष्टि थी। पर्यवेक्षकों के उच्च संतुष्टि का यह कारण हो सकता है उन्हें अपने संगठन से महत्वूर्ण सम्मान मिलता था और वे अपने पदों से संतुष्ट थे। अधीनस्थ कर्मचारी सम्भवतः इसलिए बहुत संतुष्ट नहीं होगे उनको नियमपूर्वक कार्य करना पड़ता होगा तथा कार्य की ऐसी स्थिति रही होगी जो उनके स्वास्थ्य के लिए हानिकारण होगी। अधीनसथ कर्मचारियों की संतुष्टि का क्षेत्र केवल यही था कि उनके बहुत से सहकर्मी थे। इन सहकर्मियों का एक संघ था जो समय-समय पर हड़ताल संगठित करते थे। जिसकी वजह से उनकी वेतन में वृद्धि होती थी।

विरजिनिया आदि (1983) ने निर्णय लेने में सहभागिता, पर्यवेक्षकों से वैचारिक आदान-प्रदान, कर्मचारियों के गुण तथा कर्मचारियों की व्यवसाय संतुष्टि के मध्य सम्बन्धों को जानने के लिए एक अध्ययन किया। 34 वर्ष की औसत आयु वाले 108 विश्वविद्यालय के कर्मचारियों का एक न्यायदर्श लिया गया। ये कर्मचारी विश्वविद्यालय के 3 प्रशासनिक इकाईयों से सम्बद्ध थे। इस अध्ययन में उन्होंने

सहसम्बन्ध ज्ञात किया तथा 'टी' का मान निकाला। अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि पर्यवेक्षक स्तर के लोग अपेक्षाकृत अधिक संतुष्ट थे क्योंकि विश्वविद्यालय के कार्यों में उनकी सहभागिता थी तथा कार्य करने की पद्धति में स्वतंत्रता थी।

जेडेक आदि (1983) ने सिफ्ट से सम्बन्धित समस्याओं सामान्य, मनोवैज्ञानिक, भौतिक, स्वास्थ्य तथा व्यवसाय परिवर्तनजनिक संतुष्टि के मध्य सम्बन्ध जानने के लिए अपना अध्ययन किया। इसके लिए उन्होंने 25 से 34 वर्ष के मध्य 732 पुराने बागवानी में कार्य कर रहे कर्मचारियों का न्यायदर्श लिया। इन लोगों का कार्य के प्रति 28 दिन पर परिवर्तित होता था। उपर्युक्त चरों से सम्बन्धित सहसम्बन्ध निकाले गये और यह देखा गया कि कार्य करने के परिवर्तित नियमों के सामंजस्य स्थापित करने में बहुत अधिक उतार-चढ़ाव मिला। अवस्था भी चरों के उतार-चढ़ाव में कारणा थी।

अरुलिफिला (1984) ने इस क्षेत्र से सम्बन्धित अध्ययन किया। इन लोगों के अध्ययन का विषय, स्वयथार्थीकरण व्यवसाय संतुष्टि तथा विभिन्न वर्गों के स्तरों से सम्बन्ध ज्ञात करना था विभिन्न वर्ग थे-

1. शिक्षा के ऐसे निरीक्षक जो राज्य सरकारी स्कूलों में पढ़ाते थे।

2. स्नातक अध्यापक।

3. नाइजिरिया के सेन्ट्रल स्कूल बोर्ड द्वारा नियंत्रित स्कूलों में पढ़ाने वाले गैर स्नातक अध्यापक।

स्वयथार्थीकरण के चरों तथा व्यवसाय संतुष्टि के चरों का मापन क्रमशः व्यक्तिगत स्रोत मापनी और मिनेसोटा संतुष्टि प्रश्नावली द्वारा किया गया। इस अध्ययन में मुख्य उद्देश्य था कि नाइजीरिया के तीनों प्रदेशों में माध्यमिक विद्यालयों

में पढ़ाने वाले विभिन्न श्रेणी के अध्यापकों के स्वयथार्थीकरण औरा व्यवसाय संतुष्टि में क्या सम्बन्ध है। अध्ययन द्वारा निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए :-

1. स्त्रियाँ अपने व्यवसाय से अधिक संतुष्ट है तथा उनमें स्वयथार्थीकरण की मात्रा अधिक है।

2. वास्तविक अवस्था के साथ व्यवसाय संतुष्टि और स्वयथार्थीकरण की मात्र बढ़ती जाती है।

3. केन्द्रीय विद्यालय परिषद के अध्यापकों में व्यवसाय संतुष्टि अधिक है और स्वयथार्थीकरण कम है, जबकि निरीक्षकों की स्थिति में स्वयथार्थीकरण ज्यादा है और व्यवसाय संतुष्टि कम है।

4. अध्ययन से लिये गये अध्यापक अन्य कार्यों की अपेक्षा शिक्षण में रूचि लेत थे।

5. अध्यापन अनुभव का व्यवसाय संतुष्टि और स्वयथार्थीकरण से कोई सम्बन्ध नहीं था।

बर्लिन आदि (1984) ने एक परीक्षण किया। परीक्षण का विषय था- 91 माताओं की व्यवसाय, संतुष्टि, व्यवसाय में समावेश, तथा दो से छः वर्ष तक के बच्चों के व्यवहार पर उनकी प्रतिक्रिया का प्रभाव देखना। ये बच्चे नर्सरी विद्यालयों के थे। उनके व्यवहार की समस्याओं का समस्या जाँच सूची तथा स्वनियंत्रित रेटिंग स्केज के आधार पर एक अनुक्रम बनाया गया था। यह पाया गया कि माताओं की व्यवस्था संतुष्टि लड़कियों के स्वनियंत्रण से धनातमक रूप से सम्बन्धित है तथा उनके कार्य की समस्यायें माताओं के व्यवहार संतुष्टि से ऋणात्मक रूप से सम्बन्धित हैं। माताओं के व्यवहार की समस्यायें पुत्रों एवं पुत्रियों की स्वनियंत्रण से ऋणात्मक रूप से

सम्बन्धित है तथा पुत्रों के कार्य व्यापार एवं पुत्रियों की अपरिपक्वता से धनात्मक रूप से सम्बन्धित है।

बर्मिन्घम (1984) ने मिनेसोटा में कुछ चुने हुए पब्लिक स्कूल के अध्यापकों की व्यवसाय संतुष्टि एवं उनकी कार्य प्रणाली के मध्य सम्बन्धों का परीक्षण किया। अध्यापकों के लिए इस अध्ययन में प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। परिणाम से यह ज्ञात हुआ कि मिनेसोटा में अध्यापकों में व्यवसाय संतुष्टि का सामान्य स्तर सम्भवतः निम्न था। 58 प्रतिशत अध्यापक अध्यापन से असंतुष्ट थे। 33 प्रतिशत संतुष्ट थे तथा 9 प्रतिशत बहुत अधिक संतुष्ट थे। अध्यापक स्वाभाविक अभिप्रेरण जैसे सामाजिक सेवा, वाह्य अभिप्रेरण जैसे कम्पनी की नीति, कम्पनी द्वारा महत्व का प्रदान किया जाना तथा कभी-कभी प्राप्त प्रलोभन से असंतुष्ट थे।

सर्बिडा (1984) ने व्यवसाय संतुष्टि के हेजवर्ग के कारक माडल का परीक्षण किया। निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुआ। प्रिंसिपल की अवस्था तथा उनके द्वारा चिन्ह चिन्हित व्यवसाय संतुष्टि में कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं था। उसी प्रिंसिपल के लिंग तथा व्यवसाय संतुष्टि के चिन्हांकन में कोई सम्बन्ध नहीं हैं। श्वेत प्रिंसिपल अल्पसंख्यक प्रिंसिपलों की अपेक्षा अधिक संतुष्ट थे। अनुभव एवं व्यवसाय संतुष्टि में कोई सम्बन्ध नहीं था। व्यवसाय संतुष्टि और वेतन में अच्छा सम्बन्ध पाया गया।

सिंह और मिश्र (1984) ने अहम् भाव का व्यवसाय समावेशन और व्यवसाय संतुष्टि पर प्रभाव का अध्ययन किया। यह पाया गया कि अहम् का भाव व्यवसाय समावेशन और व्यवसाय संतुष्टि के लिए बहुत प्रभावशाली नही है।

मुथैरा और कुमार (1985) ने इस सम्बन्ध में एक अध्ययन किया जिसमें पोर्टर की आवश्यकता संतुष्टि प्रश्नावली और बास की भूमिका प्रश्नावली का प्रयोग किया इन प्रश्नावलियों का उद्देश्य था कि आवश्यकता संतुष्टि का मापन किया जाय

और नेतृत्व की भूमिका के बारे में जानकारी प्राप्त की जाय। इन चरों में प्राप्त अन्तःसम्बन्ध द्वारा यह ज्ञात हुआ कि विभिन्न आवश्यकताओं में धनात्मक सहसम्बन्ध है तथा कार्य और अन्तःक्रिया भूमिकाओं में असंतोष से निषेधात्मक रूप से सम्बन्धित हैं। रिग्रेसन गुणांकों ने यह निर्दिष्ट किया कि आत्मावलोकन से असंतोष कार्य भूमिका और आत्म प्रकाशन में असंतोष से निषेधात्मक रूप से प्रभावित है।

ब्रियान और रेमण्ड (1985) ने व्यवसाय के लाक्ष्यों और व्यवसाय संतुष्टि के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करने के लिए एक अध्ययन किया। व्यवसाय के लक्षणों को जानने के लिए तथा व्यवसाय के लक्षणों एवं व्यवसाय संतुष्टि में सम्बन्ध जानने के लिए अनेक शोधकर्ताओं ने अध्ययन किया हैं। व्यवसाय के लक्षणों और व्यवसाय संतुष्टि में मध्यम कोटि का सम्बन्ध पाया गया यह सम्बन्ध ऐसे लोगों से अधिक पाया गया जिनमें आत्मोन्नति की स्पृहा थी। कम स्पृहा वाले कर्मचारियों की संतुष्टि के स्तर को जानने के लिए परिस्थितियों के लक्ष्य जानना आवश्यक है।

बेरी और रास (1985) का यह स्वाभाविक तर्क है कि व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति व्यक्ति के स्वभाव पर अधिक आधारित है। इस विचार के परीक्षण के लिए व्यवसाय संतुष्टि से सम्बन्धित एक दीर्घकालीक आंकड़ों का परीक्षण किया गया। ये आंकड़े मध्यम अवस्था वलो 5000 से अधिक आकार के राष्ट्रीय न्यायदर्श से प्राप्त किये गये थे। उन आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। परिणाम से यह प्राप्त हुआ कि वर्ष के समय में उन लोगों की अभिवृत्ति स्थिर पायी गयी तथा जब कर्मचारी ने अपने व्यवसाय को बदल दिया तो दूसरे व्यवसाय में उन कर्मचारियें ने अधिक स्थिरता से काम किया। इस प्रकार से यह निष्कर्ष निकाला गया कि व्यवसाय संतुष्टि के लिए पूर्व अभिवृत्ति द्वारा उत्तम कोटि की भविष्यवाणी की जा सकती है। वेतन और सामाजिक स्तर व्यवसाय संतुष्टि में सहायक होते हैं पर अभिवृत्ति के समान नहीं।

पारेवाल (Porwal, 1985) ने अविवाहित एवं विवाहित पुरूष एवं महिलाओं की व्यवसाय संतुष्टि का अध्ययन किया और पाया कि अविवाहित शिक्षकों की व्यवसाय संतुष्टि विवाहित महिला एवं पुरूषों से उच्च है।

गुप्ता (Gupta, 1985) ने अपने अध्ययन में पाया कि प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षकों की व्यवसाय संतुष्टि पर उनके वैवाहिक स्थित के बीच सार्थक अन्तर नहीं है। अर्थात् विवाहित एवं अविवाहित शिक्षकों की व्यवसाय संतुष्टि एक समान है जबकि शिक्षकों के संदर्भ में अविवाहित शिक्षकों की व्यवसाय संतुष्टि विवाहित शिक्षकों से ज्यादा है।

आनन्द (Anand 1985) ने बिहार, उड़ीसा एवं पश्चिम बंगाल के 551 माध्यमिक शिक्षकों के अध्ययन में यह पाया कि शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि के पाँच प्रमुख कारक है :-

1. छात्रों के बीच रहना।
2. छात्रों के अध्ययन में रूचि
3. समाज में प्रतिष्ठा,
4. शिक्षक के रूप में अपने को चाहना और
5. छात्रों को उच्च स्तर पर पहुँचना

जब कि कार्य असंतुष्टि के पांच कारक है -

1. न्यूनतम वेतन
2. साजो-सामान की कमी

3. विद्यार्थियों से आदर नहीं मिलना।

4. प्रगति का अभाव और

5. प्राचार्य का व्यवहार

श्रीवास्तव (Srivastava, 1986) ने अवध के क्षेत्र के 987 प्राथमिक शिक्षकों के ऊपर अध्ययन किया वे अपने अध्ययन में पायी कि अपर्याप्त वेतन, भौतिक सुविधा का अभाव और उसको प्राप्त करने में समस्या और अधिकारियों द्वारा दोहन किया जाना शिक्षकों के कार्य का व्यावसायिक असंतुष्टि के कारण है।

राय एवं भट्ट (Rai & Bhat, 1987) ने अपने कालेज के शिक्षकों के कार्य संतुष्टि के लिए कार्य में आंतरिक एवं वाह्य स्थिति के निम्न कारकों को प्रभावी बताया है – वेतन, प्रगति, सम्मान उपलब्धियाँ, अनुभव उत्तरदायित्व, अधिकारी का व्यवहार सहयोगियों के साथ सम्बन्ध, अधिकारी एवं छात्र वित्तीय आमद और प्रबन्धक की अभिवृत्ति।

कार (Karr, 1990) ने 175 शिक्षकों की कार्य-असंतुष्टि के अध्ययन में पाया कि प्राचार्य के अधिकार (power) के साथ शिक्षकों की कार्य-संतुष्टि सार्थक रूप से सम्बन्धित है।

यू (You, 1991) ने 200 औद्योगिक कला के शिक्षकों की व्यावसायिक असंतुष्टि का अध्ययन किया और पाया कि जनांकिकीय चरों में स्थिति(Position) एवं आय स्तर कार्य-संतुष्टि के साथ धनात्मक रूप से जुडा है। स्थिति(Position) व्यावसायिक-असंतुष्टि के आयामों-निरीक्षण,सहयोगी,कार्य की स्थिति एवं शिक्षण तैयारी के साथ-सार्थक सम्बन्ध रहता है,जबकि व्यावसायिक-असंतुष्टि के आयामों-कार्य की स्थिति,वेतन एवं प्रगति के साथ सार्थक सम्बन्ध रखता है। व्यावसायिक संतुष्टि के

आठ कारकों में सहयोगियों के साथ सम्बन्ध कारक पर अधिकतर कला शिक्षक संतुष्ट पाये गये जबकि कार्य की स्थिति पर अधिकतर शिक्षक असंतुष्ट पाये गये।

2.02 निवास एवं व्यवसाय संतुष्टिः-

सिंह (Singh, 1973) के अध्ययन में यह पाया गया है कि शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों की कार्य संतुष्टि, में केवल कार्य-संतुष्टि के एक आयाम भौतिक सुविधा पर अन्तर हैं। इस आयाम पर शहरी शिक्षकों की संतुष्टि ग्रामीण शिक्षकों की अपेक्षा उच्च पाया गया।

डिका प्रियों (Dicaiprio, 1974) ने ग्रामीण एवं उपनगरीय 12 माध्यमिक विद्यालयों के दस-दस शिक्षकों का चयन कर उनके व्यवसाय-संतुष्टि के अध्ययन की तुलना किया। इस अध्ययन में यह पाया गया कि, ग्रामीण एवं उपनगरीय विद्यालय के शिक्षकों के बीच कार्य संतुष्टि के आयामों, सामाजिक स्थिति, कम्पनी की नीति एवं प्रयोग, निरीक्षण (मानव सम्बन्ध एवं तकनीकी) सुरक्षा पर सार्थक अन्तर है। ग्रामीण विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि उपनगरीय विद्यालयों में शिक्षकों से उच्च पायी गयी।

पोरवाल (1980) ने शिक्षकों के अध्ययन में यह पाया गया कि शहरी और ग्रामीण विद्यालयों में कार्य करने वाले शिक्षकों के व्यवसाय संतुष्टि में अन्तर नहीं है।

2.03 विभिन्न प्रकार के शिक्षण संस्थानों में शिक्षण करने वाले शिक्षकों की व्यावसायिक-संतुष्टि की तुलना :

सिंह (Singh, 1973) : 499 शहरी एवं ग्रामीण पुरुष एवं महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के अध्ययन में यह पाया कि राजकीय, राज्य सहायता प्राप्त एवं प्राइवेट विद्यालयों में पढ़ाने वाले शिक्षकों की व्यवसाय-संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

व्यवसाय संतुष्टि के सभी आयामों पर भी अलग-अलग अन्तर देखने को पाया गया कि तीनों तरह के विद्यालयों में पढ़ाने वाले शिक्षकों के बीच सार्थक अन्तर है। जिन आयामों पर अन्तर है। जिन आयामों पर अन्तर देखा गया वे है प्राचार्य की भूमिका, कार्य की स्थित, कार्य का भार दूसरे से सम्बन्ध, छात्र एवं प्रशासक, व्यवसाय-संतुष्टि पर सबसे उच्च प्राइवेट विद्यालय के शिक्षकों को और सबसे निम्न सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों को पाया गया। इसके अलावा भी इस अध्ययन में बालिका विद्यालय एवं सह-शिक्षा वाले विद्यालय के शिक्षकों की व्यवसाय-संतुष्टि की तुलना भी की गयी है। जिसमें यह पाया गया कि उनके बीच व्यवसाय-संतुष्टि के सभी आयामों सहित योग पर सार्थक अन्तर है बालिका विद्यालय के शिक्षकों की सबसे उच्च और बालक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसाय-संतुष्टि सबसे निम्न पायी गयी।

सिंह (Singh, 1974) ने पाया कि प्राइवेट विद्यालयों में पढ़ाने वाले शिक्षकों व्यवसाय-संतुष्टि राजकीय एवं सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों से उच्च है।

बरनार्ड एवं कुलडैवल (Bernard and Kulainlwala, 1976) ने 500 माध्यमिक शिक्षकों के अध्ययन से यह पाया कि सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसाय संतुष्टि राजकीय एवं म्यूनिसिपल विद्यालयों में पढ़ाने वाले शिक्षकों की अपेक्षा ज्यादा है।

पोरवाल (Parwal, 1980) ने अपने एक अध्ययन में पाया कि राजकीय विद्यालयों में पढ़ाने वाले शिक्षकों की व्यवसायिक-संतुष्टि प्राइवेट विद्यालयों में पढ़ाने वाले शिक्षकों की तुलना में उच्च है।

रेड्डी एवं रामाकृष्णैया (Reddy and amkrishnah, 1981) ने शिक्षकों के व्यवसायिक-संतुष्टि, के एक अध्ययन में पाया कि जो प्राइवेट कालेजों में कार्य कर रहे है उनकी कार्य-संतुष्टि राजकीय कालेजों में कार्य करने वाले शिक्षकों से उच्च है।

भट्ट (Bhatt, 1994) ने 250 महिला एवं पुरुष शिक्षकों की कार्य-संतुष्टि के अध्ययन में पाया कि नगर पालिका एवं राजकीय प्रबन्ध में चलने वाले कॉलेजों के शिक्षकों की व्यवसाय-संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है। जबकि नगर पालिका एवं प्राइवेट प्रबन्ध में कार्य करने वाले शिक्षकों की व्यावसायिक-संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

2.04 विभिन्न स्तर पर शिक्षण करने वाले शिक्षकों के व्यावसायिक-संतुष्टि के बीच तुलना :

रूड्ड एवं वाइजमैन (Rudd and Wiseman, 1962) : 590 शिक्षकों पर अध्ययन किया और पाया कि प्राथमिक कक्षाओं में अध्ययन करने वाले स्त्री एवं पुरुष शिक्षकों की व्यावसायिक-संतुष्टि उच्च विद्यालय एवं जू0 विद्यालय के शिक्षकों से उच्च है।

पर्कीज (Perkes, 1968) ने शिक्षकों पर अध्ययन किया जिसमें उन्होंने पाया कि जू0हा0 विद्यालय के विज्ञान, इंगलिश, भाषा, कला और सामाजिक विज्ञान के शिक्षक अपने ही विषय के माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों से ज्यादा असंतुष्ट है।

गुप्ता (Gupta, 1980) ने प्राथमिक, माध्यमिक एवं कॉलेज के 675 शिक्षकों को चयन कर उनके व्यावसायिक-संतुष्टि का अध्ययन किया और पाया कि प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक-संतुष्टि माध्यमिक विद्यालय एवं कालेज के शिक्षकों की व्यावसायिक-संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है।

बारबर (Barbar, 1980) ने 10 प्राथमिक एवं 5 माध्यमिक विद्यालयों से कुल 345 शिक्षकों को शहरी, ग्रामीण एवं अर्ध-शहरी समुदाय से चयन किया। इस अध्ययन में यह पाया गया कि प्राथमिक शिक्षक माध्यमिक शिक्षकों की तुलना में शिक्षण कार्य से ज्यादा संतुष्ट है।

गुप्ता (Gupta, 1983) ने प्राथमिक, माध्यमिक एवं महाविद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि के तुलना में पाया कि-

1. प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसाय-संतुष्टि माध्यमिक विद्यालय एवं महाविद्यालयों में पढ़ाने वाले शिक्षकों की तुलना में कम है।

2. माध्यमिक एवं महाविद्यालय में के शिक्षकों की व्यवसाय-संतुष्टि में सार्थक अन्तर नहीं है। अर्थात् दोनों की कार्य-संतुष्टि एक समान है।

2.05 शैक्षिक स्तर एवं व्यवसाय-संतुष्टि :

आनन्द (Anand, 1972) ने शिक्षकों की व्यवसाय-संतुष्टि के अध्ययन में यह पाया कि शैक्षिक योग्यता के साथ व्यवसाय-संतुष्टि का सम्बन्ध नही है।

ओझा (Ojha, 1972) को बनारस के माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यवसाय-संतुष्टि पर शैक्षिक स्तर का प्रभाव नही मिला है।

वाइनर (Weiner, 1972) ने 168 निजी विद्यालयों के शिक्षकों के व्यवसाय-संतुष्टि (विशेष रूप से सर्वेक्षण एवं सहयोगियों) पर स्नातकोत्तर अध्यापकों से उच्च पायी गयी। इसका अर्थ है कि शैक्षिक स्तर शिक्षकों की व्यवसाय-संतुष्टि के साथ ऋणात्मक रूप से सम्बन्धित है।

सिंह (Singh, 1973) ने अपने अध्ययन में व्यवसाय-संतुष्टि पर शिक्षकों के शैक्षिक स्तर पर अध्ययन किया है। इस अध्ययन में यह पाया गया कि पूर्व स्नातक एवं स्नातकोत्तर शिक्षकों की व्यवसाय-संतुष्टि के बीच सार्थक अन्तर नहीं है।

श्रीवास्तव (Srivastava, 1988) ने 284 महिला शिक्षकों की कार्य-संतुष्टि एवं शैक्षिक योग्यता के बीच सम्बन्ध ज्ञात किया। वे अपने इस अध्ययन में पायी कि शैक्षिक योग्यता का व्यवसाय-संतुष्टि पर प्रभाव सार्थक नही है।

नैयर (Nair, 1990) को 100 शिक्षकों के अध्ययन में शिक्षकों की शैक्षिक स्तर एवं उनके व्यवसाय-संतुष्ट के बीच सार्थक सम्बन्ध नहीं मिला।

2.06 वेतन एवं कार्य-संतुष्टि :

चेस (Chess, 1951) ने अपने अध्ययन में पाया कि शिक्षकों की व्यवसाय-संतुष्टि वेतन के बढ़ने के साथ-साथ बढ़ता है यानि कि व्यवसाय-संतुष्टि एवं वेतन में धनात्मक सहसम्बन्ध है। लेकिन इसका स्थान कार्य-संतुष्टि के तत्वों में निम्न है।

रोजर (Roger, 1953) ने भी अपने अध्ययन में पाया कि अपर्याप्त वेतन ही व्यवसाय-संतुष्टि का मुख्य कारण हैं **ठक्कर (Thakkar, 1959)** ने अपने अध्ययन में पाया कि वेतन शिक्षक के असंतुष्टि का कारण है।

बटलर (Butler, 1961) ने शिक्षकों की व्यवसाय-संतुष्टि के अध्ययन में पाया कि व्यावसायिक-संतुष्टि पर वेतन का प्रभाव नहीं है।

सोम्मरस् (Sommers, 1969) ने 11 ओहियों माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के नैतिकता (Morale) के अध्ययन में पाया कि वेतन नैतिकता को प्रभावित नहीं करता है।

मयादेव (Mayadeb, 1972) के अध्ययन में वेतन को कार्य-संतुष्टि का मुख्य कारण नहीं पाया गया।

श्रीवास्तव (Srivastava, 1972) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 284 महिला शिक्षकों की व्यवसाय-संतुष्टि एवं उनके वेतन के बीच सम्बन्ध ज्ञात किया। वे अपने द्वारा अध्ययन पाया कि व्यवसाय संतुष्टि एवं वेतन के बीच सम्बन्ध सार्थक है।

पेरवाल (1980) ने शिक्षकों की व्यवसाय-संतुष्टि के अध्ययन में यह पाया कि व्यवसाय-संतुष्टि पर वेतन का प्रभाव नहीं है।

2.07 अनुभव एवं व्यावसायिक-संतुष्टि :

चेस (Chese, 1951) ने अपने अध्ययन के आधार पर निष्कर्ष निकाला कि शिक्षण अनुभव के बढ़ने के साथ-साथ शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में वृद्धि होती है।

धवन (Dhawan, 1963) ने राजकीय उच्चतर विद्यालय के शिक्षकों एवं सरकारी दफ्तरों के सहायकों के कार्य-संतुष्टि अध्ययन में पाया कि 10 वर्ष से ज्यादा अनुभव वाले शिक्षकों एवं सहायकों की कार्य-संतुष्टि 10 वर्ष से कम अनुभव वालों की अपेक्षा उच्च है।

ओझा (Ojha, 1972) ने व्यवसाय-संतुष्टि पर अनुभव का प्रभाव देखा और पाया कि एक दूसरे से स्वतंत्र है। अर्थात् अनुभव व्यवसाय-संतुष्टि से सम्बन्धित नहीं है।

सिंह (Singh, 1973) के अध्ययन में कार्य-संतुष्टि के आयामों भौतिक सुविधा एवं आर्थिक लाभों पर विभिन्न शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों के बीच सार्थक अन्तर पाया गया है। इस अध्ययन के अनुसार अनुभव बढ़ने के साथ-साथ कार्य-संतुष्टि का मान घट रहा है।

द्विवेदी एवं पेस्टनजी (Dwivedi & Pestanjee, 1975) के अध्ययन में यह पाया या कि व्यावसायिक-संतुष्टि अनुभव के बढ़ने से बढ़ता है लेकिन 10 वर्ष के बाद के अनुभव में यह धीरे-धीरे गिरने लगता है।

आनन्द (Anand, 1977) ने पाया कि शिक्षकों की कार्य संतुष्टि पर उनके शिक्षण अनुभव का सार्थक प्रभाव नहीं है।

पोरवाल (1973) ने शिक्षकों की कार्य-संतुष्टि के अध्ययन में यह पाया कि शिक्षण अनुभव के साथ कार्य संतुष्टि ऋणात्मक रूप से सम्बन्धित है।

बारबर (Barber, 1980) ने न्यूजर्शी के 345 शिक्षकों के अध्ययन में यह पाया कि अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों की कार्य-संतुष्टि उच्च है अर्थात् अनुभव एवं कार्य-संतुष्टि में धनात्मक सम्बन्ध है।

हब्बासी (Habashi, 1980) ने ईरान के माध्यमिक एवं प्राथमिक शिक्षकों के एक अध्ययन में पाया कि शिक्षण अनुभव व्यवसाय-संतुष्टि के साथ धनात्मक रूप से सम्बन्धित है।

गोयल (Goyal, 1981) ने 300 शिक्षकों के अध्ययन में यह पाया कि कार्य संतुष्टि पर शिक्षकों के अनुभव का प्रभाव नहीं।

गुप्ता (Gupta, 1983) ने प्राथमिक, माध्यमिक एवं महाविद्यालयों के 765 शिक्षकों के व्यावसायिक-संतुष्टि एवं उनके अनुभव के अध्ययन में पाया कि अनुभव किसी भी स्तर के शिक्षकों के लिए व्यवसाय संतुष्टि के साथ सम्बन्धित नहीं है।

दीक्षित (Dixit, 1985) ने माध्यमिक विद्यालयों के 500 शिक्षकों के व्यवसाय-संतुष्टि एवं अनुभव का अध्ययन किया। उन्होंने इस अध्ययन में पाया कि

(0-10) वर्ष अनुभव वाले शिक्षकों की व्यवसाय-संतुष्टि (10-20) वर्ष वाले शिक्षकों की व्यवसाय-संतुष्टि से ज्यादा है। जबकि बीस वर्ष से ज्यादा अनुभव वाले शिक्षक भी ज्यादा अनुभव वाले शिक्षक भी ज्यादा संतुष्ट पाये गये।

निष्कर्ष :- उपरोक्त अध्ययन में सिंहावलोकन से निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले जा सकते है कि-

1. अधिकांश अध्ययन शिक्षकों की व्यवसाय-संतुष्टि तथा उनके वेतन और अन्य सुविधाओं के सन्दर्भ में किये गये है।

2. शिक्षकों की व्यवसाय-संतुष्टि का अध्ययन उनके कार्यानुभव की अवधि के सन्दर्भ में किये गये है।

3. बहुत से अध्ययन लिंग, भेद, विवाहित, अविवाहित, आयु और शिक्षकों की व्यवसाय-संतुष्टि से सम्बन्धित है।

4. कुछ अध्ययन प्रबन्ध समिति की अभिवृत्ति और शिक्षकों की व्यवसाय-संतुष्टि के सम्बन्ध में भी है।

5. विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर कार्यरत शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन भी किया गया है।

6. ऐसे अध्ययन बहुत ही कम किये गये है। जिनमें सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यवसाय संतुष्टि पर हुए है।

वर्तमान अध्ययन :- सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक/शिक्षिकाओं के व्यवसाय-संतुष्टि पर अध्ययन के अभाव के फलस्वरूप

वर्तमान अध्ययन को सम्पन्न करने का प्रयास किया गया है इतना ही नही यह अध्ययन सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त में कार्यरत शिक्षकों की व्यवसाय-संतुष्टि का अध्ययन करते हुए एक कदम आगे चलके यह भी प्रयास करता है कि इन अभिकरणों और लिंग-भेद की परस्पर शिक्षकों शिक्षिकाओं की व्यवसाय-संतुष्टि पर क्या प्रभाव पड़ता है।

2.2 सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक सम्प्राप्ति से संबंधित अध्ययन :

सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालय के विद्यार्थियों पर शैक्षिक सम्प्राप्ति से सम्बन्धित अध्ययन निम्नलिखित है :-

चोपड़ा (1969) ने विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन किया। अपने शोध में लखनऊ शहर के 15-17 उम्र के विद्यार्थियों को न्यादर्श में लिया। शैक्षिक सम्प्राप्ति के लिए हाईस्कूल के परीक्षा के अंक प्राप्त किये गये। इस अध्ययन का परिणाम यह प्राप्त किया गया कि सहायता प्राप्त विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति गैर सहायता प्राप्त विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक अच्छी थी।

शर्मा और मैथ्यू (1971) मिश्रा और **त्रिपाठी, (1980) पाण्डेय (1984)** और **गुप्ता (1985)** ने भी गैर सहायता प्राप्त का शैक्षिक सम्प्राप्ति के साथ नकारात्मक सम्बन्ध प्राप्त किया।

सिंह (1976) ने सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त विद्यालयों के विद्यार्थियों बुद्धिमत्ता तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन किया तथा यह निष्कर्ष प्राप्त किया सहायता प्राप्त विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति गैर सहायता प्राप्त विद्यालयों विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक अच्छी है।

राव (1976) ने सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन किया। इसमें मद्रास छः माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का न्यादर्श में लिया शैक्षिक सम्प्राप्ति परीक्षण बनाया गया। इसमें नगर महापालिका विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलना में प्राइवेट विद्यालयों की उच्च उपलब्धि प्राप्त की गयी।

थाम्पसन तथा राइस (1976) ने पिता की अनुपस्थिति का गणित की उपलब्धि का साथ सम्बन्धों का अध्ययन किया।

उषा श्री (1978) आन्ध्र प्रदेश के सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन किया तथा परिणाम यह प्राप्त किया कि सहायता प्राप्त एवं विद्यार्थियों कि शैक्षिक सम्प्राप्ति गैर सहायता प्राप्त विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक अच्छी है।

साहू (1979) ने सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त विद्यार्थियों में भाषा सम्बन्धित सम्प्राप्ति का अध्ययन किया तथा यह परिणाम प्राप्त किया कि सहायता प्राप्त विद्यार्थियों की भाषायी उपलब्धि गैर सहायता प्राप्त विद्यार्थियों की भाषायी उपलब्धि गैर सहायता प्राप्त विद्यार्थियों की तुलना में अधिक अच्छी थी।

संतोष तथा शर्मा (1980) ने सामाजिक-आर्थिक स्तर का विद्यालयी सम्प्राप्ति से सम्बन्धों का अध्ययन किया। कक्षा 8 के 300 विद्यार्थी न्यायदर्श में लिये गये। परीक्षण में कक्षा 8 के परीक्षा के अंक प्राप्त किये गये। इसका परिणाम यह प्राप्त हुआ कि सामाजिक स्तर का शैक्षिक सम्प्राप्ति से सार्थक सम्बन्ध नहीं था।

खन्ना ने सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त विद्यालय के विद्यार्थियों के शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन किया। न्यायदर्श में 1000 विद्यार्थियों को कक्षा 6,7,व 8 स्तर से लिया। इसमें 30 विद्यालय ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के थे। शैक्षिक

उपलब्धि के लिए अर्ध-वार्षिक परीक्षा के प्राप्तांको को तथा वार्षिक परीक्षा में प्राप्तांकों को सम्मिलित किया गया। इसका परिणाम यह प्राप्त हुआ कि सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त विद्यालय के विद्यार्थियों के शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है।

मेटिल्स (1983) ने ब्राजील के कम आये के 5 स्तर के विद्यार्थियों में शैक्षिक सम्प्राप्ति को देखा। न्यायदर्श में 373 बालकों को लिया गया। यह परिणाम प्राप्त किया कि बुद्धिमत्ता तथा अध्ययन की आदत शैक्षिक सम्प्राप्ति में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। उन्होंने यह भी निष्कर्ष प्राप्त किया कि छात्रों की अपेक्षा छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति अधिक अच्छी थी।

भार्गव (1984) आदि ने दीर्घकालीन गैर सहायता प्राप्त का शैक्षिक सम्प्राप्ति के साथ नकारात्मक सम्बन्ध प्राप्त किया।

रीटा ने 13 वर्ष की उम्र के 300 विद्यार्थियों पर सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त पर सम्प्राप्ति का परीक्षण को प्रयुक्त किया तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति में सकारात्मक सह-सम्बन्ध प्राप्त किया।

निष्कर्ष:- उपरोक्त सम्बन्धित साहित्यों के विस्तृत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त का प्रभाव विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति पर बहुत ही अधिक पड़ता है।

अध्याय-तृतीय

कार्य-योजना एवं विधि

किसी भी निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति हेतु एक कार्य-योजना निर्मित करनी पड़ती है,इससे लक्ष्य प्राप्ति में सुगमता होती है,कार्य योजना सम्पूर्ण कार्यक्रम का संक्षिप्त रूप होती है। शोध की कार्य-योजना को शोध अभिकल्प कहते है। साधारण शब्दों में,शोध अभिकल्प अध्ययन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए अपनायी गयी व्यूह रचना है। दूसरे शब्दों में यह शोध के भवन की आधारशिला है जिस पर सम्पूर्ण अध्ययन निर्मित किया जाता है। अगर अध्ययन का नींव ही समुचित सुविचारित एवं सबल नहीं रहेगी तो इस आधार पर पूरा किया जाने वाला अध्ययन भी ज्यादा विश्वसनीय एवं वैध नहीं होगा। इस दृष्किोण से शोध में अभिकल्प का महत्वपूर्ण स्थान हैं।

शोध अभिकल्प को परिभााषित करते हुए करलिंगर ने कहा है कि,"शोध अभिकल्प नियोजित अन्वेषण की ऐसी योजना, संरचना तथा व्यूह रचना होती है जिसके आधार पर ऐसी शोध प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किये जाते है और प्रसरण पर नियंत्रण स्थापित किया जाता है"।

शोध अभिकल्प के अनुसार शोध प्रतिदर्श चयन, आधार सामग्री के संकलन एवं परिणामों का प्रतिपादन से सम्बन्धित विधियों एवं प्रक्रियाओं का निर्धारण किया जाता है। शोध अभिकल्प के अभाव में पूरी अनुसंधान प्रक्रिया विसंगत,फोकस-हीन एवं अकुशल बन जाने की संभावना से बच नहीं सकती।

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य एवं परिकल्पनाओं के आधार पर निम्नलिखित कार्य-योजना निर्मित की गयी है।

- अध्ययन विधि
- जनसंख्या (समग्र एवं न्यादर्श प्रविधि)
- न्यादर्श
- शोध में प्रयुक्त चर
- शोध में प्रयुक्त उपकरण
- प्रदत्तों का संकलन एवं अंकन
- शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियां ।

3.1 अध्ययन विधिः-

किसी भी शोध कार्य में अध्ययन विधि का अपना महत्व हैं। विभिन्न विषयों की समस्याओं के समाधान के लिए अलग-अलग विधियों को अपनाया जाता हैं। जहां विज्ञान जैसे विषयों में आमतौर से प्रायोगिक विधि का प्रयोग किया जाता हैं,वहीं पर मानविकी (सामाजिक-विज्ञान,मनोविज्ञान आदि)विषयों में सर्वेक्षण विधि,ऐतिहासिक विधि वर्णनात्मक विधि आदि का प्रयोग किया जाता है। शिक्षा में प्रायोगिक अध्ययन मानव के ऊपर किया जाता है जिसके चलते मानवीय गुणों के अध्ययन में गुणों,व्यवहारों आदि को नियंत्रित करना आसान नहीं है।

अनुसंधान के विभिन्न विधियों वर्णनात्मक विधि अथवा सर्वेक्षण विधि का महत्व शैक्षिक शोध जगत में बढ गया है। जांन डबलू बेस्ट के शब्दों में "वर्णनात्मक अनुसंघान वर्तमान स्थित की व्याख्या तथा विवेचना प्रस्तुत करता है। इनका सम्बन्ध

उन स्थितियों तथा सम्बन्धों से है जिका अस्तित्व वर्तमान में है,अथवा उन उन व्यवहारों से है,जोकि प्रचलित है उन दृष्टिकोणों,अथवा अभिवृत्तियों से है,जिनका प्रचलन है,व उन प्रक्रमों से है,जोकि सक्रिय है,तथा उन प्रभावों से है,जिन्हें अनुभव किया जा रहा है,अथवा उन उपनीतियों से है जोकि विकासशील है।"

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर एवं प्रस्तुत शोध की प्रकृति एवं उद्देश्य के अनुसार शोधकर्ता ने अपनी समस्या के अध्ययन हेतु "सर्वेक्षण विधि"को उपयुक्त पाया है।

करलिंगर के अनुसार,"सर्वेक्षण अनुसंधान सामाजिक वैद्यानिक अन्वेषण की वह शाखा है, जिसके अन्तर्गत व्यापक तथा कम आकार वाली जनसंख्याओं का अध्ययन उनमें से चयनित प्रतिदर्शो के आधार पर इस आशय से किया जाता है ताकि उसमें व्याप्त सामाजिक तथा,मनोवैज्ञानिक चरों के घटनाक्रमों,विवरणों तथा पारस्परिक अन्तः सम्बन्धों का ज्ञान उपलब्ध हो सके।"

वास्तविक में किसी समस्या के समाधान में आगे बढ़ने के पूर्व व्यक्ति को उस वस्तु से परिचित होना आवश्यक है, जिसके क्षेत्र में वह कार्य कर रहा है। अतः अन्य विज्ञानों के समान ही शिक्षात्मक अनुसंधान में भी प्रारम्भ में किसी घटना विवरण अथवा विषय को सम्बन्ध को स्पष्ट करने का विशेष ध्यान था। छात्रों,विद्यालयों,प्रशासन,पाठ्यक्रम अथवा किसी विषय के शिक्षण सम्बन्धी समस्या के समाधान से पूर्व अनुसंधानकर्ता के मन में यह प्रश्न उठता है कि वर्तमान स्थिति क्या है? इस विषय की वर्तमान स्थिति क्या है? वर्तमान दशाओं क्रियाओं,अभिवृत्तियों तथा स्थिति के विषय में ज्ञान प्राप्त करना मूल उद्देश्य होता हैं। किन्तु वर्णनात्मक अनुसंधानकर्ता का सम्बन्ध केवल तथ्यों के एकत्र करने मात्र से नहीं है अपितु एक कुशल अनुसंधानकर्ता का लक्ष्य तो विभिन्न चरों से सम्बन्ध ढूढना एवं भविष्यवाणी करना होता है।

इस प्रकार हम देखते है कि सर्वेक्षण अनुसंधान-(1) वर्तमान परिस्थिति तथा घटना एवं प्रवृत्ति का अध्ययन एवं व्याख्या करता है,(2) नीति निर्धारण एवं नियोजना के लिए आधार तैयार करता है, (3) अध्ययन के विषय की स्थिति को स्पष्ट करता है, (4) दीर्घ प्रतिनिध्यात्मक न्यायदर्श है।

सर्वेक्षण अनुसंधान में किसी विशेष समय की स्थिति अथवा घटना का वर्णन होता है। अतः इसके आधार पर सर्वकालिक भविष्य कथन असंगत है। हां तात्कालिक समस्याओं का विषय में अवश्य विचार कर सकते हैं। भौतिक परिस्थितियों से सम्बन्धित आकड़ें स्थिर प्रकृति के होते है, किन्तु सामाजिक परिस्थितियां नित्य परिवर्तनशील है, अर्थात् जो कल था वह आज नहीं है, जो आज है, जो आज है, वह कल नहीं रहेगा। अतः भविष्य कथन में विशेष सावधानी,अपेक्षित हैं।

जनसंख्याः-

शोध में जनसंख्या का अर्थ भिन्न होता है, शोध के अन्तर्गत जनसंख्या का व्यक्तियों, घटनाओं या वस्तुओं के किसी सुपरिभाषित ऐसे समूह से सम्बन्धित किया जाता है जिससे उसके सभी सदस्य शामिल हो, अर्थात् किसी विशिष्ट समूह की समस्त इकाइयों के सम्मिलित स्वरुप को जनसंख्या कहते हैं।

प्रस्तुत शोध में अध्ययन में बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झांसी से सम्बद्ध चित्रकूट धाम मण्डल बांदा तथा झांसी मण्डल झांसी, कानपुर विश्वविद्यालय कानपुर सी0जे0एम0 विश्वविद्यालय कानपुर मण्डल में आने वाले समस्त सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयीय शिक्षकों एवं उसमें अध्ययनरत् विद्यार्थियों के रूप में सम्मिलित किया गया हैं।

न्यायदर्श :-

प्रत्येक शोध कार्य में न्यायदर्श का चयन अपरिहार्य होता है। चूंकि शोधकर्ता के लिए सम्पूर्ण जनसंख्या का अध्ययन एक कठिन कार्य होता है, इसीकारण शोधकर्ता समय,श्रम एवं धन के अपव्यय को ध्यान में रखते हुए उपर्युक्त विधि से न्यायदर्श का चयन करता हैं। इसप्रकार न्यायदर्श के प्रयोग से शोध परिणामों को अधिक शुद्ध व्यवहारिक एवं मितव्ययी बनाया जाता है।

न्यायदर्श किसी सम्बन्धित जनसंख्या (समग्र) का एक लघु समूह होता है जिसे अध्ययन या शोध हेतु चुना जाता है। इस प्रक्रिया में यह आवश्यक है कि चुना हुआ लघु समूह सम्पूर्ण जनसंख्या का वास्तविक रूप में प्रतिनिधित्व करे। इसप्रकार शोध का न्यायदर्श अपने सम्बन्धित जनसंख्या की इकाइयों का एक उपसमुच्चय (Sub-Set) है।

न्यायदर्श के सम्बन्ध में गुड तथा हैट का कथन है कि "जनसंख्या (इकाई या समूह) में किसी चर का विशिष्ट मान ज्ञात करने के लिए उसकी इकाइयों को चुन लिया जाता है तो इस चुनी हुई इकाइयों को न्यायदर्श और चुनने की प्रक्रिया को न्यायदर्शन कहा जाता है।"

प्रस्तुत शोध की प्रकृति एवं उद्देश्य के अनुसार इस शोध में बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी को समाहित किया गया है इस शोध में झांसी, चित्रकूटधाम एवं कानपुर मण्डल के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में महाविद्यालयों के अध्ययन की परिधि में रखा गया हैं । उपर्युक्त इन महाविद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों को लेकर उनकी व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन छात्र/छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना अध्ययन के अन्तर्गत समाहित किया गया है। प्रथमतः झांसी, चित्रकूटधाम एवं कानपुर मण्डल के समस्त महाविद्यालयों को अध्ययन के लिए चुना गया परन्तु व्यावहारिक

कठिनाइयों के कारण इन ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के तीन सौ सहायता प्राप्त तथा तीन सौ गैर सहायता प्राप्त शिक्षक ही शोध प्रश्नावली का जवाब दे सके। इसी प्रकार निर्धारित परिक्षेत्र के ग्रामीण एवं शहरी महाविद्यालय के सभी छात्र/छात्राओं के अध्ययन की परिधि में समाहित किया गया है। शोध की कार्ययोजना में विषय मतभेद तथा जातिगत आधार पर शिक्षक व छात्रों को समाहित किया गया था परन्तु व्यावहारिक रूप से जब शोध का कार्य आरम्भ हुआ तो अधिकांश कला संकाय के ही गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालय ही उपलब्ध पाये गये अतएव विषयगत भेद के अन्तर्गत समग्र रूप से एक ही प्रकार के अध्यापकों एवं उनमें अध्ययनरत् छात्रों को चुना गया। वर्ग के ही अध्यापक व्यावसायिक संतुष्टि एवं शैक्षिक सम्प्राप्ति के लिए जातिगत भेद के आधार पर शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को अध्ययन में समाहित किया गया। विद्यार्थियों के जनसंख्या का विवरण निम्नलिखित है:-

सारिणी 3.01

न्यादर्श का प्रारूप

क्रम संख्या	**मण्डल का नाम**	**शिक्षकों की संख्या**	**विद्यार्थियों की संख्या**
1	चित्रकूट धाम मण्डल बाँदा	450	400
2	कानपुर मण्डल, कानपुर	100	400
3	झाँसी मण्डल, झाँसी	50	200
	सम्पूर्ण संख्या	600	1000

शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों के आधार पर न्यायदर्श को निम्नलिखित चरों के रूप में विभक्त किया है।

सारिणी 3.02

न्यादर्श में विभिन्न चरों के अनुसार उत्तरदाताओं की स्थिति

सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षक				गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षक			
क्र.सं.	चर	उपभेद	संख्या	क्र.सं.	चर	उपभेद	संख्या
1.	लिंग	क. पुरुष	250	1.	लिंग	क. पुरुष	250
		ख. महिला	50			ख. महिला	50
		योग–	**300**			**योग**	**300**
2.	आवास	क. ग्रामीण	204	2.	आवास	क. ग्रामीण	192
		ख. शहरी	96			ख. शहरी	108
		योग–	**300**			**योग–**	**300**
3.	जातिवर्ग	क. सामान्य	189	3.	जातिवर्ग	क. सामान्य	189
		ख. पिछड़ी	88			ख. पिछड़ी	88
		ग. अनुसूचित	23			ग. अनुसूचित	23
		योग–	**300**			**योग–**	**300**

परन्तु आँकड़ों के संग्रह में 500 सहायता प्राप्त एवं 500 गैर सहायता प्राप्त विद्यार्थियों से सम्बन्धित ही सूचनाएँ प्राप्त हो सकी।

सारिणी 3.03

न्यादर्श का प्रारूप

सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षक				गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षक			
क्र.सं.	चर	उपभेद	संख्या	क्र.सं.	चर	उपभेद	संख्या
1.	लिंग	क. छात्र	350	1.	लिंग	क. छात्र	350
		ख. छात्राएँ	150			ख. छात्राएँ	150
		योग-	**500**			**योग**	**500**
2.	आवास	क. ग्रामीण	250	2.	आवास	क. ग्रामीण	250
		ख. शहरी	250			ख. शहरी	250
		योग-	**500**			**योग-**	**500**
3.	जातिवर्ग	क. सामान्य	250	3.	जातिवर्ग	क. सामान्य	250
		ख. पिछड़ी	250			ख. पिछड़ी	250
		ग. अनुसूचित	50			ग. अनुसूचित	50
		योग-	**550**			**योग-**	**350**

3.4 शोध में प्रयुक्त चर :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित चरों को प्रयुक्त किया गया है-

1. लिंगगत भेद के अनुसार

2. आवासगत भेद के अनुसार

3. जातिगत भेद के अनुसार

1. **लिंगगत भेद के अनुसार** : लिंग के रूप में दोनों वर्गो को लिया गया है-

शिक्षक- क. पुरुष

ख. महिला

विद्यार्थी- ग. छात्र

घ. छात्राएँ।

2. **आवासगत् भेद के अनुसार** : आवास के रूप में दोनों वर्गो को लिया गया है-

क. ग्रामीण

ख. शहरी

3. **जातिगत भेद के अन्तर्गत** : जाति के आधार तीन वर्ग में बाँटा गया है-

क. सामान्य

ख. पिछड़ी

ग. अनुसूचित

3.5 शोध में प्रयुक्त उपकरण :

प्रत्येक शोध कार्य में प्रदत्तों को संग्रहित करने के लिए कतिपय शोध उपकरणों की आवश्यकता होती है। इन्हीं शोध उपकरणों द्वारा शोधकर्ता अपनी परिकल्पनाओं की पुष्टि हेतु सूचनाओं को संकलित करता है। इस प्रकार के अध्ययन के लिए विभिन्न शोधकर्ताओं द्वारा निर्मित अनेक उपकरण उपलब्ध है, जो भिन्न-भिन्न प्रकार से प्रदत्तों का वर्णन एवं संकलन करते हैं। प्रत्येक उपकरण अपने-अपने ढंग से प्रदत्तों का संकलन करते हैं, विशेष प्रकार की सूचनाएं प्रदान करते हैं तथा भिन्न-भिन्न प्रकार के परिणाम देते हैं।

वर्तमान अध्ययन के लिए उपकरण के चुनाव हेतु व्यवसाय संतुष्टि और शोध के क्षेत्र में उनके प्रयोग का निरीक्षण करने के लिए विभिन्न उपकरणों का अध्ययन किया गया ताकि वर्तमान अध्ययन के लिए उपर्युक्त उपकरण का चयन किया जा सके। जिन उपकरणों का अध्ययन किया गया है, वे इस प्रकार है :-

1. सिन्हा द्वारा निर्मित व्यवसाय अभिवृत्ति प्रश्नावली (1960) :

यह मापनी विभिन्न कार्य परिस्थितियों के प्रति कर्मचारियें की अभिवृत्ति के अध्ययन के लिए निर्मित की गयी। इसका सम्बन्ध औद्योगिक कर्मचारियों से विशेष रूप में था। इस मापनी के उपयोग के लिए पाँच क्षेत्र निर्धारित किये गये। ये क्षेत्र हैं- (1) व्यवसाय संतुष्टि, (2) पारिश्रमिक से संतुष्टि, (3) पर्यवेक्षणात्मक अभ्यास से संतुष्टि, (4) कम्पनी की नीति एवं, (5) व्यक्तिगत अभिवृत्ति। मापनी में कुल 20 प्रश्न थे, जिनमें एक क्षेत्र से सम्बन्धित कुल चार प्रश्न थे। पाँचों कारकों के प्राप्तांकों के मध्य अन्तः सहसम्बन्ध तथा सम्पूर्ण योग से प्रत्येक कारक के सम्बन्ध दोनों के द्वारा प्रश्नावली की विश्वसनीयता प्राप्त की गयी।

2. नटराज और हाफीज द्वारा निर्मित व्यवसाय प्रश्नावली (1965) :

यह प्रश्नावली परोक्ष रूप से औद्योगिक कर्मचारियों की मानसिकता जानने के लिए तथा उनकी संतुष्टि के मापन के लिए बनायी गयी इस प्रश्नावली का सम्बन्ध विभिन्न कार्य परिस्थितियों विभिन्न कारकों से है। ये कारक है- भौतिक और मानसिक परिश्रम, कर्मचारियों और पर्यवेक्षकों के सम्बन्ध, सुरक्षा, उन्नति तथा अन्य पक्ष। इस प्रश्नावली में कुल 48 प्रश्न हैं जिनका उत्तर 'हाँ' और 'नहीं' प्राप्त करना है।

3. राव और गांगुली द्वारा निर्मित व्यवसाय-संतुष्टि प्रश्नावली (1972) :

यह प्रश्नावली व्यवसाय के 16 कारकों के सम्बन्ध में व्यवसाय संतुष्टि और असंतुष्टि का मापन करती है। संतुष्टि के लिए विश्वसनीयता गुणांक 0.89 है तथा असंतुष्टि के लिए विश्वसनीयता गुणांक 0.91 है।

4. रेना का मिनेसोटा अध्यापक अभिवृत्ति मापनी (1972) :

मिनेसोटा आवश्यकता प्रश्नावली व्यापक रूप से प्रयुक्त मापनी पर आधारित है। यह अध्यापक की व्यवसाय संतुष्टि अभिवृत्ति का मापन करती है। मिनेसोटा आवश्यकता प्रश्नावली में 100 कथन है, जो किसी के व्यवसाय के सम्बन्धित सभी कारकों को सम्मिलित करती है। किन्तु वर्तमान अध्ययन के लिए यह मापनी इसलिए उपर्युक्त नहीं पायी गयी क्योंकि वर्तमान अध्ययन अध्यापकों की व्यवसाय संतुष्टि के मापन से ही विशेष रूप से सम्बन्धित है।

5. **कुमार और मूथा माध्यमिक विद्यालयों के लिए व्यवसाय संतुष्टि प्रश्नावली (1973) :**

इस मापनी का निर्माण कुमार और मूथा द्वारा किया गया है। प्रारम्भ में पूर्व अध्ययनों के आधार पर चयनित 40 'हाँ' और 'नहीं' प्रकार के कथन इस प्रश्नावली में रखे गये। इन कथनों को व्यवसाय संतुष्टि के 4 विभिन्न पक्षों में वर्गीकृत किया। ये पक्ष थे (1) कार्य से संतुष्टि, (2) वेतन और सुरक्षा में संतुष्टि, (3) संस्थागत योजनाओं और नीतियों से संतुष्टि एवं (4) अधिकारियों से संतुष्टि। अन्तिम रूप में इस प्रश्नावली के लिए 31 कथन निश्चित किये गये।

शोधकर्ता की दृष्टि इस व्यवसाय संतुष्टि मापनी में निम्नलिखित कारकों का भी समावेश होना चाहिए था क्योंकि ये कारक शिक्षकों की व्यवसाय संतुष्टि से सीधे सम्बद्ध है। ये कारक है- छात्रों से सम्बन्ध स्थापित करना, भौतिक सामग्रियों से संतुष्टि, सामाजिक स्तर से संतुष्टि तथा सहकर्मियों से संतुष्टि।

इस प्रकार यह अनुभव किया गया कि वर्तमान अध्ययन के लिए एक किसी नवीन मापनी की आवश्यकता है जो भारतीय विद्यालय के शिक्षकों की व्यवसाय संतुष्टि के प्रमुख कारकों का समावेश कर सकें।

6. **इन्द्रसेन द्वारा निर्मित व्यवसाय संतुष्टि मापनी (1974) :**

यह मापनी लिकर्ट के आधार पर फाइव प्वाइंट मापनी है। इसके तीन भाग है। प्रत्येक भाग में 30 कथन हैं जो इन कारकों का प्रतिनिधित्व करते है वेतन, पदोन्नति के अवसर, पर्यवेक्षण, सहकर्मी, संगठानात्मक नीति और प्रबन्ध कार्य की परिस्थितियाँ, पहिचान, सफलता और स्वातन्त्र्य। इस मापनी का निर्माण मुख्य रूप से इंजीनियरिंग के अध्यापकों की व्यवसाय संतुष्टि के मापन के लिए गया है। इसके तीनों भाग बहुत ही उच्च श्रेणी के विश्वसनीय है क्योंकि इन तीनों भागों का

विश्वासनीयता गुणांक क्रमशः 0, 87, 0.94 तथा 0.98 है। कथन सह-सम्बन्ध भी निकाले गये। मापनी की वैधता का भी मापन किया गया है।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि प्रस्तुत अध्ययन के लिए एक ऐसी मापनी की आवश्यकता अनुभूत की गयी जिसमें अध्ययन से सम्बन्धित उद्देश्यों के सम्बन्ध में कथन उपलब्ध हों। इस दृष्टि से वर्ष 1986 में मीरा दीक्षित द्वारा लखनऊ विश्वविद्यालय की शिक्षा शास्त्र में स्वीकृत पी-एच0डी0 शोध प्रबन्ध में प्रयुक्त व्यवसाय संतुष्टि मापनी सर्वोपयुक्त समझी गयी। यह मापनी मानकीकृत है। इसमें कुल मिलाकर 52 कथन है। इस मापनी के अंतिम रूप की विशेषता निम्नलिखित सारणी से स्पष्ट होती है :-

सारिणी संख्या 3.04

अन्तिम रूप में कथनों का विवरण

Sr.No.	Jas Factors	Item Numbers	No.
1-	Instrinsic Aspect of the Job.	1, 11, 25, 30, 35, 52	6
2-	Salary, Promotional avenues and service conditions.	3, 12, 19, 20, 31, 34, 37, 45, 50	9
3-	Physical facilities	2, 10, 24, 29, 30, 43, 48, 49, 51	9
4-	Institutional plans policies	4, 13, 26, 38, 40, 47	6
5-	Satisfaction with Authorities	5, 14, 21, 27, 32, 41	6
6-	Satisfaction with social status and family welfare	8, 9, 17, 18, 23	5
7-	Rapport with students	7, 15, 22, 28, 39, 33	6
8	Relationalship with co-workers,	6, 16, 37, 42, 44	5
		Total	**52**

इस मापनी में सम्मिलित किये गये विभिन्न कारकों का विवरण इस प्रकार है:-

(i) व्यावसाय का स्वाभाविक पक्ष :

इसके अन्तर्गत कार्य व्यवस्तता द्वारा अनुभूत प्रसन्नता समाविष्ट रहती है और सफलता द्वारा व्यक्तिगत संतुष्टि, वैयक्तिक उत्साह आदि व्यवसाय के स्वभाविक पक्ष सम्मिलित रहते है। यह कारक व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक पक्ष और व्यवसाय संतुष्टि के

सम्बन्ध को स्पष्ट करता है। बेनन (1974) का कथन है कि कार्य का महत्व व्यक्ति के अहम् की संतुष्टि करता है ओर इस धारणा को बल देता है कि कार्य की सफलता से स्वाभाविक संतोष प्राप्त होता है। इसके द्वारा मनुष्य में विविधता, साहस और सार्थकता के गुण उद्भूत होते हैं।

(ii) वेतन, पदोन्नति के अवसर और सेवा शर्ते :

अध्यापन जैसे क्रियात्मक कार्यो में उत्साह प्रदान करने एवं व्यावसायिक विकास के पर्याप्त अवसर की ओर आकर्षिक करने और ग्रहण करने में महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करते है। सेवा शर्तो के इस पक्ष के अन्तर्गत अनेक आर्थिक पक्ष जैसे- वेतन, सामान्य कार्य करने की दशा, पदोन्नति के अवसर, सेवा सुरक्षा आदि समाहित है। वे सभी कारक व्यवसाय संतुष्टि से सीधे रूप में सम्बन्धित हैं।

(iii) भौतिक सुविधाएँ :

इसके अन्तर्गत संस्था की स्थित, भवन, कक्षा का काष्ठोपकरण, श्रव्य दृश्य सामग्री, प्रयोगशाला के उपकरण, पुस्तकालय सम्बन्धी सुविधाएँ आदि आती है।

(iv) संस्थागत योजनाएं और नीतियाँ :

विद्यालय में जब कोई शैक्षणिक अथवा पाठ्य-सहगामनी योजनायें बनती हैं, तो एक शिक्षक यह चाहता है कि इन सब विषयों में संस्था का प्रधान उससे भी सलाह ले। इससे अध्यापक का उत्साहवर्धन होता है और कार्य में प्रगति होती है। इसलिए शिक्षकों और छात्रों से सम्बन्धित समस्त क्रियाओं में शिक्षकों से भी परामर्श किया जाना चाहिए।

(v) अधिकारियों से संतुष्टि :

विद्यालय के अधिकारियों का प्रतिनिधि प्रधानाचार्य होता है। अध्यापक यह चाहता है कि उसका प्रधानाचार्य से सीधा सम्बन्ध रहे ताकि उसकी समस्याएं बिना किसी अवरोध के प्रबन्ध समिति तक पहुँचायी जा सकें।

(vi) सामाजिक स्तर और परिवार कल्याण से संतुष्टि :

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और वह समाज में अपना एक स्थान बनाना चाहता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी सामाजिक पहचान बनाने के लिए प्रयत्नशील रहता है। इसलिए आवश्यक है कि वह जिस किसी भी व्यवसाय में लिप्त हो उसे अपने सामजिक स्तर को सुरक्षित रखने का सुअवसर दिया जाये।

(vii) छात्रों से सम्बन्ध :

अध्यापकों का छात्रों से शिक्षक के बारे में सीधा सम्बन्ध रहता है। सफल शिक्षण तथा संस्था में सौहार्द पूर्ण वातावरण के लिए यह आवश्यक है कि अध्यापक और छात्र आपस में अच्छा सम्बन्ध रखें। अध्यापक उस समय विशेष संतोष का **अनुभव करता है जब उसके और छात्रों के मध्य सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध बने रहते हैं।**

(viii) सहकर्मियों के साथ सम्बन्ध :

व्यवसाय संतुष्टि के लिए शिक्षकों अथवा कर्मचारियों का अपने सहकर्मियों के साथ सामंजस्यपूर्ण सम्बन्ध होना आवश्यक है। इसलिए इस मापनी में शोधकर्ता ने ऐसे कथनों को सम्मिलित करने का प्रयत्न किया है, जो अन्य कर्मचारियों के सम्बन्ध में कर्मचारी की भावना स्पष्ट कर सकें। इस सम्बन्ध में बाबू (1976) ने अध्यापक समुदाय के लिए आकर्षक की कई शक्तियों के सम्बन्ध में आपसी लगाव का

अध्ययन किया। वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि आपसी लगाव तथा व्यवसाय संतुष्टि में धनात्मक सहसम्बन्ध है।

(ix) मपनी की वैधता और विश्वसनीयता :

मापनी के मानकीकरण की दिशा में उसकी वैधता और विश्वसनीयता का परीक्षण किया गया। मापनी की स्वाभाविक वैधता बहुत ही संतोषजनक प्रतीत हुई। जैसा कि डा0 मीरा दीक्षित का कथन है कि उन्होंने इस परीक्षण के अंग्रेजी और हिन्दी दोनों रूपान्तरों की विश्वसनीयता निकाली। अंग्रेजी रूपान्तर की विश्वसनीयता 0.92 तथा हिन्दी की विश्वसनीयता 0.93 पायी गयी।

शैक्षिक सम्प्राप्ति : प्रस्तुत अध्ययन में शैक्षिक सम्प्राप्ति से तात्पर्य छात्र/छात्राओं द्वारा विभिन्न विद्यालयी विषयों में अर्जित ज्ञान, बोध तथा कौशल की मात्रा से है। तद्नुसार शोधकर्ता के द्वारा स्नातक प्रथम वर्ष की परीक्षा में उनके द्वारा प्राप्त कुछ अंकों से है। शोध में प्रदत्तों के संकलन में विश्वसनीयता एवं वैधता का विशेष महत्व होता है सत्यपरक आँकड़ों से ही सही परिणाम की आशा की जा सकती है। शोधकर्ता ने छात्र/छात्राओं द्वारा विभिन्न विषयों के कुल अंकों को इसके लिए उपयोगी समझा है क्योंकि यह अंक छात्रों की बौद्धिक क्षमता शिक्षकों का ज्ञान व कर्म कुशलता तथा महाविद्यालय की स्थित व स्तर को परिलक्षित करता है।

3.6 प्रदत्तों का संकलन एवं अंकन :

प्रदत्तों का संकलन :

सम्पूर्ण शोध में प्रदत्तों का संकलन सबसे प्राथमिक एवं अनिवार्य कार्य होता है। इस अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण"व्यवसाय संतुष्टि मापनी"है। इस मापनी का न्यायदर्श में चयनित सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षकों

में प्रशासन किया गया। मापनी के प्रशासन के समय यह सावधानी रखी गयी कि उपर्युक्त वातावरण तैयार किया जाय ताकि प्रश्नों के उपर्युक्त उत्तर मिल सकें। यथा सम्भव शोधकर्ता ने मापनी की पूर्ति अपने सामने ही करवायी । अपवादस्वरूप कुछ अवस्था में वरिष्ठ प्राध्यापकों ने प्रश्नावली को भरने के लिए कुछ समय मांगा,फिर यह एक निश्चित समय लोगों से प्राप्त उत्तरों के प्राप्तांकों की गणना की गयी। प्रदत्तों का वर्गीकरण किया गया। जैसा कि पूर्व में कहा गया है कि इसे लिकर्ट टाइप प्रश्नावली में 1 से 5 अंक तक प्राप्तांक देने थे। धनात्मक कथनों के लिए उनसे प्राप्त उत्तरों के प्राप्तांक 5 से 1 के क्रम में दिये गये तथा ऋणात्मक कथनों के लिए प्राप्तांक 1 से 5 तक के क्रम में दिये गये।

प्रदत्तों के संकलन एवं निर्धारित चरों के आधार पर वर्गीकरण करने के पश्चात् प्रदत्तों का विश्लेषण किया गया। विश्लेषण के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के सांख्यिकीय परीक्षण किये गये। उन परीक्षणों से प्राप्त परिणामों की व्याख्या की गयी तथा अध्ययन के उद्देश्यों के परिप्रेक्ष्य में निष्कर्ष प्राप्त किये गये।

शैक्षिक सम्प्राप्ति के अन्तर्गत स्नातक प्रथम वर्ष की परीक्षा में प्राप्त अंकों को प्रदत्तों के रूप में संकलित किया गया है। इसके लिए शोधकर्ता ने महाविद्यालयी छात्रों से सम्पर्क करके उनके अंकों को प्राप्त किया तथा अंकों काके मध्मान, मानक विचलन व 'टी' का मान प्राप्त करके शैक्षिक सम्प्राप्ति का आंकलन किया गया।

3.7 शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियांः-

शोध में विश्लेषण एवं व्याख्या के लिए प्राप्त प्रदत्तों से मध्यमान, मानक,विचलन, तथा सार्थकता ज्ञात करने के लिए क्रान्ति निष्पत्ति व 'टी' का मान निकाला गया । तत्पश्चात् मध्यमान व सार्थकता के अनुरूप तालिका की व्याख्या की गयी।

अध्याय-चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

किसी भी शोध कार्य में प्रदत्तों के कुशलतापूर्वक संकलन के पश्चात् उनका सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या करके ही कतिपय महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त किये जाते है। प्रस्तुत अध्याय में प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं प्राप्त परिणामों की व्याख्या को प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत अध्याय के उद्देश्यों के सन्दर्भ में परिणामों को प्रस्तुत किया गया है, प्रस्तुत अध्याय के अध्ययन का उद्देश्य निम्नवत् है:-

1. सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का स्तर ज्ञात करना, व्यावसायिक संतुष्टि पर लिंग भेद एवं जातिगत भेद के अनुसार विवेचना करना।

2. सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति का लिंग-भेद तथा आवासगत भेद और जातिगत आधार पर विवेचन करना।

4.1 सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का स्तर ज्ञात करना,व्यावसायिक संतुष्टि पर लिंग भेद एवं जातिगत भेद के अनुसार विवेचन-

प्रदत्तों के विश्लेषण के आघार पर व्याख्या एवं समीक्षा प्रस्तुत की गयी। न्यायदर्श में सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के 300 शिक्षक एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के 300 शिक्षक लिये गये। चरों के अन्तर्गत लिंग, आवासगत एवं जातिगत भेद के अनुसार संतुष्टि के विभिन्न कारकों को समाहित किया गया है।

(सारिणी संख्या 4.1 में सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षकों के सम्पूर्ण व्यावसायिक संतुष्टि का विवेचन किया गया है) :-

सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षकों के प्राप्तांक के मध्यमान और प्रमाणिक विचलन

सारणी 4.01

प्राप्तांक	f	x	fx	fx^2
94-114	7	-3	-21	63
115-135	12	-2	-24	48
136-156	76	-1	-76	76
157-177	102	0	0	0
178-198	68	1	68	68
199-219	27	2	54	108
220-240	8	3	24	72
	N=300		**$\Sigma fx=25$**	**$\Sigma fx^2=435$**

M=168.75 **S.D. = 25.22**

सारणी में मध्यमान 168.75 तथा प्रमाणिक विचलन 25.22 दर्शाया गया है, मापनी के आधार पर यह मध्यमान मध्य बिन्दु से अधिक निकट है, इसका तात्पर्य हुआ कि यह मापनी धनात्मक पक्ष की ओर अधिक झुका हुआ है। तात्पर्य प्रदर्शित

होता है कि सहायता प्राप्त महाविद्यालय के शिक्षकों में सामान्य से ऊपर संतुष्टि व्याप्त है यह भी स्पष्ट हो रहा है कि वह भौतिक साधन की अभाव व व्यावसायिक तनाव से दूर रहकर वे अपने व्यवसाय से संतुष्ट है।

गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षकों की सम्पूर्ण व्यावसायिक संतुष्टि प्रदर्शित की गयी है

गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालय के शिक्षकों के प्राप्तांकों का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन :-

सारणी 4.02

प्राप्तांक	f	x	fx	fx^2
94-114	5	-3	-15	45
115-135	7	-2	-14	28
136-156	175	-1	-175	175
157-177	55	0	0	0
178-198	35	1	35	35
199-219	15	2	30	60
220-240	4	3	12	36
	N=300		**Σfx=127**	**Σfx^2=379**

M=158.11 S.D. = 21.81

गैर सहायता प्राप महाविद्यालय के शिक्षकों के प्राप्तांकों का मध्यमान 158.11 तथा प्रमाणिक विचलन 21.8 प्राप्त हुआ है। इसका अर्थ है औसत स्तर की संतुष्टि गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का औसत स्तर यह प्रदर्शित करता है कि कुछ अच्छे महाविद्यालय के शिक्षक संतुष्ट हैं परन्तु अधिकांश महाविद्यालय के शिक्षक अपने व्यवसाय से संतुष्ट नहीं हैं। वर्तमान परिदृश्य यह स्पष्ट भी कर रहा है कि गैर सहायता प्राप्त कुछ महाविद्यालय अपने निजी संसाधनों व आदर्शो के अनुरूप शिक्षा के मानदण्डों को यथोचित अपना रहे हैं जबकि अधिकांश के अन्तर्गत व्यावसायिकता प्रवेश कर गयी है।

सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षकों में व्यावसायिक संतुष्टि की तुलना

सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालय के शिक्षकों में व्यावसायिक संतुष्टि की तुलना।

यह परिकल्पित किया गया है कि सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

सारिणी 4.03

सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि की तुलना :-

संस्था	शिक्षकों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रांतिक निष्पत्ति	सार्थकता का स्तर
सहायता प्राप्त	300	168.75	25.22	2.47	.05
गैर सहायता प्राप्त	300	158.11	21.8		

उपर्युक्त सारिणी में महाविद्यालयीय शिक्षकों में तुलना करने पर (क्रांतिक निष्पत्ति 2.47) प्राप्त हुआ जो .05 स्तर पर सार्थक अन्तर रखता है। यह स्पष्ट करता है कि गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयी शिक्षकों की तुलना में सहायता प्राप्त महाविद्यालय के शिक्षक अधिक संतुष्ट हैं। इसका कारण उनकी वेतन, स्थिति, सेवा शर्तें व तत्सम्बन्धी प्राप्त शिक्षकों की सेवा की अनिश्चितता व कम वेतन के कारण असंतुष्ट दिखाई दे रहे हैं।

यह परिकल्पित किया गया है कि सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालय के पुरूष एवं महिला शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

सारिणी 4.04

सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के पुरूष/महिला शिक्षकों में प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का मान-

लिंग	संस्था	संख्या	मध्यमान	मानक वि0	क्रान्तिक निष्पत्ति	सार्थकता स्तर
पुरुष	सहायता प्राप्त	250	157.50	22.05	4.77	.01
	गैर सहायता प्राप्त	250	147.00	17.87		
महिला	सहायता प्राप्त	50	178.25	24.95	3.03	.01
	गैर सहायता प्राप्त	50	170.00	24.81		

सारिणी संख्या 4.04 के अवलोकन से पुरूष शिक्षकों के प्राप्तांकों से प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 4.77 तथा df. 4.98 यह प्रदर्शित करता है कि सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर है। आंकड़े यह भी प्रदर्शित करते है कि सहायता प्राप्त पुरूष शिक्षकों की अपेक्षा अधिक संतुष्ट है।

दोनों प्रकार के महाविद्यालयी महिला शिक्षिकाओं के प्राप्तांकों से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान 3.03 तथा df. 4.98 यह प्रदर्शित होता है कि इनमें सार्थक अन्तर है। आंकड़े यह भी प्रदर्शित करते हैं कि सहायता प्राप्त महाविद्यालय के शिक्षिकाओं का गैर सहायता प्राप्त शिक्षिकाओं की अपेक्षा अधिक संतुष्ट हैं। परन्तु इनकी संतुष्टि या असंतुष्टि का अंतर बहुत कम है। इससे यह प्रदर्शित करता है कि गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालय के शिक्षिकाएं भी वेतनमान व सेवा शर्ते के कारण असंतुष्ट हैं, परन्तु यत्र-तत्र गृह कार्य के अलावा प्राप्त किसी भी वेतनमान से संतुष्टि दिखाई देती है।

यह परिकल्पित किया गया कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयीय शिक्षकों की व्यावसायिक-संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

सारिणी 4.05

शहरी एवं ग्रामीण सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षकों के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन व क्रान्तिक अनुपात की तुलना (मान)–

आवास	संस्था	संख्या	मध्यमान	मानक वि0	क्रान्तिक निष्पत्ति	सार्थकता स्तर
शहरी	सहायता प्राप्त	204	159.37	22.31	2.76	.01 सार्थक
	गैर सहायता प्राप्त	192	154.85	20.33		
ग्रामीण	सहायता प्राप्त	96	143.25	20.05	2.41	.01 सार्थक
	गैर सहायता प्राप्त	108	139.82	17.25		

सारिणी के अवलोकन से यह पता चलता है कि शहरी क्षेत्र के सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयी शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर है। परिणाम पूर्व के आँकड़ों के अनुरूप ही दिखाई दे रहा है, अर्थात् शहरी क्षेत्र में सहायता प्राप्त शिक्षक शहरी क्षेत्र के गैर सहायता प्राप्त की अपेक्षा अधिक संतुष्ट है।

ग्रामीण क्षेत्र के सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयी शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का क्रान्तिक अनुपात 2.41 है जो .05 स्तर पर सार्थक है परन्तु .01 स्तर पर अन्तर सार्थक नहीं है। इसका तात्पर्य यह निकलता है कि ग्रमीण क्षेत्र के गैर सहायता प्राप्त शिक्षकों का एक भाग किसी दूसरे कार्य में लगे

होने के कारण संतुष्टि का अनुभव कर रहा है या उनकी योग्यता में कमी के बावजूद उच्च शिक्षा में सम्मानजनक पद प्राप्त हो गया है।

यह परिकल्पित किया गया कि सामान्य एवं पिछड़ी जाति की सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक-संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

सारिणी 4.06

सहायता प्राप्त महाविद्यालय के सामान्य एवं पिछड़ी जाति के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि की तुलना-

जाति	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक निष्पत्ति	सार्थकता स्तर
सामान्य	189	145.57	18.32	4.12	.01 सार्थक
पिछड़ी	88	156.78	20.05		

सारिणी के अवलोकन से पता चलता है कि सामान्य एवं पिछड़ी जाति के शिक्षकों के व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर है। सामान्य जाति के शिक्षकों का मध्यमान 145.57 है, जो पिछड़ी जाति के शिक्षकों के मध्यमान 156.78 से कम है। तात्पर्य सामान्य जाति के लोग अपेक्षाकृत अपने व्यवसाय से असंतुष्ट हैं। इसका कारण यह हो सकता है कि सामान्य जाति के लोग प्रबुद्ध व सामाजिक स्तर पर

अपने को ऊंचा समझते हैं। वे अन्य जाति की तुलना में अच्छी सेवाओं में जाना चाहता है तथा पिछड़ी जाति के शिक्षकों की तुलना में अपने को हीन समझता है। जबकि पिछड़े वर्ग का शिक्षक अध्यापन व्यवसाय से अधिकांश की तुलना में अपने को अच्छा तथा समाज में प्रतिष्ठित पाता है।

यह परिकल्पित किया गया कि पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति के सहायता प्राप्त महाविद्यालयीय शिक्षकों की व्यावसायिक-संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

सारिणी 4.07

सहायता प्राप्त महाविद्यालय के पिछड़ी जाति एवं अनुसूचित जाति के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि की तुलना-

जाति	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक निष्पत्ति	सार्थकता स्तर
पिछड़ी	88	156.78	20.05	1.50	.01 सार्थक नहीं है।
अनुसूचित	23	162.46	22.63		

सारिणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि दोनों ही वर्ग व्यावसायिक संतुष्टि में विशेष अन्तर नहीं रखते क्योंकि .01 स्तर पर इनके बीच क्रान्तिक अनुपात का मान सार्थक नहीं है। इसका कारण यह हो सकता है कि दोनों ही वर्ग के शिक्षक अध्यापन व्यवसाय मेंनियुक्त पाकर अपने ही जातियों के अन्य लोगों से तुलना में अच्छा पाते हैं फिर भी मध्यमान के अनुसार अनुसूचित जाति के शिक्षक पिछड़ी वर्ग

की अपेक्षा अधिक संतुष्ट हैं। यह उनके आशातीत सफलता के परिणाम प्रतीत होता है।

यह परिकल्पि किया गया कि सामान्य एवं अनुसूचित जाति के सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक-संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

सारिणी 4.08

सहायता प्राप्त महाविद्यालय के सामान्य एवं अनुसूचित जाति के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि की तुलना-

जाति	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक निष्पत्ति	सार्थकता स्तर
अनुसूचित	23	162.46	22.63	4.12	.01 सार्थक
सामान्य	189	145.57	18.32		

सारिणी के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति एवं सामान्य जाति के शिक्षकों के व्यावसायिक संतुष्टि तुलना में अन्तर सार्थक है। मध्यमान से यह प्रतीत हो रहा है कि अनुसूचित जाति के शिक्षक सामान्य जाति के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक संतुष्ट हैं। कारण स्पष्ट है कि अनुसूचित जाति का शिक्षक अपने व्यवसाय को पाकर अधिक सौभाग्यशाली समझता है जबकि सामान्य जाति के शिक्षक अन्य व्यवसायों में असफल होकर अध्यापन व्यवसाय को चुनते हैं।

यह परिकल्पित किया गया कि सामान्य एवं पिछड़ी जाति के गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयीय शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

सारिणी 4.09

गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालय के सामान्य एवं पिछड़ी जाति के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि की तुलना-

जाति	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक निष्पत्ति	सार्थकता स्तर
सामान्य	188	140.76	18.33	4.01	.01 सार्थक है।
पिछड़ी	95	160.01	20.40		

उपर्युक्त सारिणी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सामान्य एवं पिछड़ी जाति के शिक्षकों के मध्य क्रान्तिक निष्पत्ति का मान 4.01 है जो .01 स्तर पर सार्थक है। अर्थात् दोनों वर्ग के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में काफी विभिन्नता है। मध्यमान के अवलोकन से सामान्य जाति वर्ग के शिक्षक अपेक्षाकृत कम संतुष्ट हैं इसका कारण सामान्य जाति के शिक्षकों की महत्वाकांक्षा तथा उनके सामाजिक रहन-सहन का उच्च स्तर होना है। अध्यापन व्यवसाय से दूसरों की तुलना में अपेक्षाकृत अपनी आवश्यकताओं की कम पूर्ति कर पाते हैं। जबकि पिछड़े वर्ग का शिक्षक अपने जाति वर्ग के अन्य लोगों की तुलना में अध्यापन व्यवसाय से सम्मानित महसूस करता है।

यह परिकल्पित किया गया कि पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति के गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयीय शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

सारिणी 4.10

गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालय के पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि की तुलना–

जाति	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक निष्पत्ति	सार्थकता स्तर
पिछड़ी	95	160.01	20.40	1.38	.01 सार्थक नहीं है।
अनुसूचित	17	163.00	21.32		

उपरोक्त सारिणी के अवलोकन से पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति के शिक्षकों के व्यावसायिक संतुष्टि की तुलना के लिए क्रान्तिक निष्पत्ति का मान 1.38 है जो .01 पर सार्थक नहीं है। इसका अभिप्राय यह निकलता है कि दोनों जाति वर्ग के शिक्षकों में संतुष्टि सामान्य अंशों में विद्यमान है। संतुष्टि में अन्तर न होने का कारण यह हो सकता है कि दोनों ही वर्ग लोग शिक्षक के रूप में नियुक्त पाकर अपनी ही जातियों के अन्य लोगों से तुलना करने पर अपने को अच्छा पाते हैं। फलस्वरूप दोनों ही जातियों के शिक्षकों में लगभग समान अंशों की संतुष्टि पायी जाती है।

यह परिकल्पित किया गया कि सामान्य एवं अनुसूचित जाति के गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयीय शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

सारिणी 4.11

गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालय के अनुसूचित एवं सामान्य जाति के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि की तुलना–

जाति	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक निष्पत्ति	सार्थकता स्तर
अनुसूचित	17	163.00	21.32	4.36	.01 सार्थक नहीं है।
सामान्य	188	140.76	18.33		

सारिणी में अनुसूचित एवं सामान्य जाति के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि की तुलना के लिए प्राप्त क्रान्तिक निष्पत्ति का मान 4.36 प्राप्त हुआ जो .01 स्तर पर सार्थक है। इससे स्पष्ट होता है कि दोनों ही जाति वर्ग के शिक्षकों में व्यावसायिक संतुष्टि वास्तविक रूप से अन्तर लिये हैं। मध्यमान के निरीक्षण से अनुसूचित वर्ग के शिक्षकों की संतुष्टि सामान्य वर्ग के शिक्षकों से अधिक है। कारण पूर्ववर्ती ही प्रतीत होता है। अर्थात अनुसूचित वर्ग का शिक्षक अध्यापन व्यवसाय में अपनी नियुक्ति पाकर अपने को सौभाग्यशाली समझता है जबकि सामान्य वर्ग का शिक्षक अन्य व्यवसायों से असफल होकर अध्यापन चुनाव करता है।

4.2 सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति का लिंग-भेद तथा आवासगत भेद और जातिगत आधार पर विवेचन-

यह परिकल्पित किया गया कि सामान्य एवं पिछड़ी जाति के गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयीय शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

सारिणी 4.12

1. सहातया प्राप्त तथा गैर सहायता प्राप्त विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना।

2. सहायता प्राप्त तथ गैर सहायता प्राप्त विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति को देखने के लिए 'टी' टेस्ट का प्रयोग किया गया है। जिसका परिणाम सारणी में व्यक्त किया गया है-

क्र. सं.	समूह	समूह	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' का मान	सार्थकता स्तर
1.	सहायता प्राप्त	500	332.62	33.7	22.51	.01
2.	गैर सहायता प्राप्त	500	236.14	36.58		

सारिणी संख्या 4.12 से ज्ञातव्य है कि शैक्षिक सम्प्राप्ति पर सहायता प्राप्त विद्यार्थियों का मध्यमान 332.62 है तथा गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान 236.14 है। उपर्युक्त दोनों समूहों के मध्यमानों की तुलना के लिए 'टी' का मान 22.51 प्राप्त हुआ जो .01 स्तर पर सार्थक है।

इससे स्पष्ट होता है कि सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त दोनों ही के समूह के विद्यार्थियों में सार्थक अन्तर है। मध्यमान् को देखते हुए यह भी निष्कर्ष निकाला जाता है कि सहायता प्राप्त महाविद्यालय के विद्यार्थियों में शैक्षिक सम्प्राप्ति गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालय के विद्यार्थियों से अधिक है। यह अन्तर सम्भवतः प्राप्त विद्यालयें के अध्यापन स्तर व उपलब्ध सुविधाओं के कारण हो रहा है।

चोपड़ा 1969 ने भी इसी प्रकार का अध्ययन किया था जिनका परिणाम भी इसी प्रकार का प्राप्त हुआ था।

यह परिकल्पित किया गया कि ग्रामीण क्षेत्र के सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के छात्र/छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है।

सारणी 4.13

ग्रामीण सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के छात्र/छात्राओं के शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना–

क्र. सं.	समूह	समूह	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' का मान	सार्थकता स्तर
1.	छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति	250	316.54	59.39	3.488	.01
2.	छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	250	288.15	49.32		

सारिणी संख्या 4.13 के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के छात्रों के शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 316.54 तथा छात्राओं का मध्यमान 288.15 प्राप्त हुआ है। जिसका 'टी' मूल्य 3.488 है जो .01 स्तर पर सार्थक है।

अतएव छात्रों का शैक्षिक सम्प्राप्ति छात्राओं की तुलना में अधिक दिखाई दे रहा है। इसका कारण सम्भवतः ग्रामीण क्षेत्र के बालिकाओं का घर के काम-काज में अधिक समय देना तथा सामान्य सामाजिक आर्थिक स्थित के अनुसार जीवन-यापन के लिए अन्य कार्यो में अधिकाधिक समय देना है जबकि छात्रों की शिक्षा पर अभिभावकों का अधिक ध्यान आकृष्ट करना उनकी अधिक शैक्षिक सम्प्राप्ति का मूल कारण प्रतीत होता है।

यह परिकल्पित किया गया है कि ग्रामीण क्षेत्र के गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के छात्र/छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है।

सारणी 4.14

ग्रामीण क्षेत्र के गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के छात्र/छात्राओं के शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना-

क्र. सं.	समूह	समूह	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' का मान	सार्थकता स्तर
1.	छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति	250	288.15	49.32	5.38	.01
2.	छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	250	248.15	49.6		

सारिणी संख्या 4.14 से यह विदित होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के छात्रों का मध्यमान 288.15 है तथा छात्राओं का मध्यमान 248.45 है तथा छात्राओं का मध्यमान 248.45 है और 'टी' का मान 5.38 प्राप्त हुआ है जो .01 स्तर पर सार्थक अन्तर रखता है। ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों का मध्यमान छात्राओं से अधिक होना यह स्पष्ट करता है कि उनकी सम्प्राप्ति भी छात्राओं की तुलना में अधिक है। चूंकि गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालय भी ग्रामीण अंचल में ही स्थित है। अतः परिणाम सारणी 4.14 के अनुरूप ही प्रतीत होता है।

यह परिकल्पित किया गया है कि शहरी क्षेत्र के सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के छात्र/छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है।

सारणी 4.15

शहरी क्षेत्र के महाविद्यालयों के सहायता प्राप्त छात्र/छात्राओं के शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना–

क्र. सं.	समूह	समूह	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' का मान	सार्थकता स्तर
1.	छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति	250	369.36	16.98	10.778	.01
2.	छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	250	333.46	14.5		

सारिणी संख्या 4.15 में शहरी क्षेत्र के सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के अध्ययनरत् छात्रों की तुलना की शैक्षिक सम्प्राप्ति से की गयी है। छात्रों का मध्यमान 369.36 छात्राओं का मध्यमान 333.46 से अधिक है इनके मध्यमान व मानक विचलन के आकलन से प्राप्त 'टी' का मान 10.0778 प्राप्त हुआ जो .01 स्तर पर सार्थक है। आँकड़े यह स्पष्ट करते हैं कि शहरी क्षेत्र के छात्र भी छात्राओं की तुलना में अधिक शैक्षिक सम्प्राप्ति रखते हैं। इनका यह अन्तर उनकी पारिवारिक एवं सामाजिक स्थित का परिणाम प्रतीत होता है।

शहरी क्षेत्र के गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के छात्र/छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति सार्थक अन्तर है।

सारणी 4.16

शहरी क्षेत्र के गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों छात्र/छात्राओं के शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना–

क्र. सं.	समूह	समूह	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' का मान	सार्थकता स्तर
1.	छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति	250	263.72	33.74	3.447	.01
2.	छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति	250	242.84	22.60		

सारिणी संख्या 4.16 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि शहरी क्षेत्र के गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयी छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 263.72 तथा छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 242.84 प्राप्त हुआ है, जिनका 'टी' का मान 3.447 है जो .01 स्तर सार्थक है। छात्रों का मध्यमान छात्राओं की तुलना में यहाँ भी अधिक दिखाई दे रहे हैं। चूंकि गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालय भी शहरी क्षेत्र में स्थित हैं तथा सामाजिक मानसिकता के बहुत कुछ अन्तर नहीं दृष्टिगोचर हो रहा है। अतः परिणाम पूर्व का ही अनुकरण दिखाई देता है।

यह परिकल्पित किया गया कि सामान्य एवं पिछड़ी जाति के सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है।

सारणी 4.17

सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के सामान्य एवं पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना–

क्र. सं.	समूह	समूह	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' का मान	सार्थकता स्तर
1.	सामान्य	250	317.34	57.36	4.051	.01 पर सार्थक है।
2.	पिछड़ी	200	285.64	47.1		

सारिणी संख्या 4.17 से स्पष्ट होता है कि सामान्य जाति के विद्यार्थियों का मध्यमान पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों के मध्यमान से अधिक है। दोनों ही जाति वर्ग के छात्र .01 स्तर पर सार्थक अन्तर रखते हैं। मध्यमान का यह अन्तर स्पष्ट करता है कि सामान्य जाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक सम्प्राप्ति पिछड़ी जाति की तुलना में अधिक है।

इसका कारण सामान्य जाति के विद्यार्थियों को प्राप्त हो रही पारिवारिक सुविधाओं का अधिक होना है। जबकि पिछड़ी जाति के छात्र सामान्य सामाजिक आर्थिक स्थित के कारण शैक्षिक सम्प्राप्ति में पीछे रह जाते हैं।

यह परिकल्पित किया गया है कि पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति के सहायता प्राप्त महाविद्यालयें के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है।

सारणी 4.18

सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना–

क्र. सं.	समूह	समूह	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' का मान	सार्थकता स्तर
1.	पिछड़ी	200	285.64	47.18	4.65	.01 स्तर पर सार्थक है।
2.	अनुसूचित	150	250.15	54.75		

उपरोक्त सारिणी 4.18 से यह स्पष्ट होता है कि पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 285.64 तथा अनुसूचित जाति का मध्यमान 250.15 इनका 'टी' का मान 4.65 है जो .01 स्तर पर सार्थक अन्तर रखता है। मध्यमान का अन्तर यह स्पष्ट करता है कि पिछड़े समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति अनुसूचित समूह के विद्यार्थियों से अधिक है।

इसका कारण अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्थित में गिरावट वहीं पर पिछड़ी जाति के छात्र वर्तमान समाज में प्रगतिशील दिखाई देते हैं।

यह परिकल्पित किया गया है कि सामान्य एवं अनुसूचित जाति के सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है।

सारणी 4.19

सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना–

<table>
<tr><th>क्र. सं.</th><th>समूह</th><th>समूह</th><th>मध्यमान</th><th>मानक विचलन</th><th>'टी' का मान</th><th>सार्थकता स्तर</th></tr>
<tr><td>1.</td><td>सामान्य</td><td>250</td><td>317.34</td><td>57.30</td><td rowspan="2">8.04</td><td rowspan="2">.01 स्तर पर सार्थक है।</td></tr>
<tr><td>2.</td><td>अनुसूचित</td><td>50</td><td>250.15</td><td>54.72</td></tr>
</table>

सारिणी 4.19 के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि सामान्य जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों से अधिक है दोनों ही समूहों के बीच 'टी' का मान 8.04 है जो .01 स्तर पर सार्थक अन्तर होता है। मध्यमान का यह अन्तर स्पष्ट करता है कि सामान्य जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों से अधिक है। अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति की यह कमी समाज में उनकी स्थिति का कमजोर होना तथा आर्थिक व शैक्षिक सुविधाओं की अभाव ग्रस्तता प्रदर्शित करता है।

यह परिकल्पित किया गया कि सामान्य एवं पिछड़ी जाति के गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है।

सारणी 4.20

गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के सामान्य एवं पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना-

क्र. सं.	समूह	समूह	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' का मान	सार्थकता स्तर
1.	सामान्य	250	367.76	17.87	9.85	.01 सार्थक है।
2.	पिछड़ी	200	329.03	19.37		

सारिणी 4.20 में यह स्पष्ट होता है कि सामान्य जाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 367.76 तथा पिछड़ी जाति का मध्यमान 329.03 है उनके बीच 'टी' का मान 9.85 है जो .01 स्तर पर सार्थक अन्तर रखता है। सारिणी के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि सामान्य जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों से अधिक है। इसका कारण सामान्य जाति के विद्यार्थियों की सुविधा सम्पन्नता तथा उपलब्ध की परम्परागतता हो सकती है।

यह परिकल्पित किया गया कि पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति के गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है।

सारणी 4.21

गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना–

क्र. सं.	समूह	समूह	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' का मान	सार्थकता स्तर
1.	पिछड़ी	250	317.34	57.30	6.44	.01 स्तर पर सार्थक है।
2.	अनुसूचित	50	301.06	21.68		

उपरोक्त सारिणी 4.21 से यह स्पष्ट होता है कि पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 329.03 तथा अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का मध्यमान 301.06 है इनके बीच 'टी' का मान 6.44 है जो .01 स्तर पर सार्थक अन्तर रखता है। मध्यमान का अन्तर यह स्पष्ट करता है कि पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति अनुसूचित जाति की तुलना में अधिक है इसका भी कारण पूर्ववर्ती प्रतीत होता है। अर्थात् अनुसूचित जाति की तुलना में पिछड़ी जाति के विद्यार्थी सामाजिक आर्थिक व शैक्षिक रूप से अधिक जागरूक है।

यह परिकल्पित किया गया कि सामान्य एवं अनुसूचित जाति के गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है।

सारणी 4.22

गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना-

क्र. सं.	**समूह**	**समूह**	**मध्यमान**	**मानक विचलन**	**'टी' का मान**	**सार्थकता स्तर**
1.	सामान्य	250	367.76	17.87	15.92	.01 स्तर पर सार्थक है।
2.	अनुसूचित	50	301.06	21.68		

सारिणी 4.22 से यह स्पष्ट है कि सामान्य जाति के विद्यार्थियों का मध्यमान 367.76 तथा अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का मध्यमान 301.06 है इनके बीच 'टी' का मान 15.92 जो .01 स्तर पर सार्थक अन्तर रखते हैं। मध्यमान का अन्तर यह स्पष्ट करता है कि सामान्य जाति के विद्यार्थी शैक्षिक सम्प्राप्ति में अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों से आगे हैं। इसका कारण अनुसूचित जाति की विपन्नता सुविधाओं का अभाव ग्रस्तता है। जबकि सामान्य जाति के विद्यार्थी अपेक्षाकृत सम्पन्न भी है तथा समाज में अग्रणी रहने के लिए जागरूक भी रहते हैं।

अध्याय-पंचम

निष्कर्ष एवं सुझाव

शिक्षक अपने व्यवसाय से संतुष्ट होकर ही अध्यापन कार्य का निष्पादन उपयुक्त ढंग से कर सकता है। इस तथ्य को दृष्टि ने रखकर प्रस्तुत शोध में सहायता एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि जानने का प्रयास किया गया, साथ ही यह भी देखा गया कि इन महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति की क्या स्थिति है। इन महाविद्यालयी अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि लिंगवत, आवासगत एवं जातिगत भेद के आधार पर देखने का प्रयास किया गया है। यही सिीति इन महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति जानने में हैं।

शोध का परिणाम प्राप्त करने के लिए संकलित प्रदत्तों से मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रान्तिक निष्पत्ति एवं 'टी' का मान ज्ञात किया गया। पुनस्य सार्थकता की जाँच की गयी। तालिकावार व्याख्या एवं विवेचन से परिकल्पनाओं का प्रस्तुत अध्याय में सांख्यिकीय विधि से सत्यापन किया गया।

प्रस्तुत अध्याय में सांख्यिकीय विश्लेषण से प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्षो एवं सामान्यीकरणों का प्रतिपादन किया गया है, इस अध्याय को निम्नलिखित खण्डों में प्रस्तुत किया गया है-

1. परिणामों का विवेचन एवं निष्कर्ष

2. शोध का शैक्षिक निहिताथ्र

3. भावी शोध हेतु सुझाव

5.1 प्रदत्तों के विवेचन के आधार पर प्राप्त परिणामों का विवेचन प्रस्तुत है-

प्रस्तुत शोध के परिकल्पना के सम्बन्ध में शोध परिणाम यह है कि-

परिकल्पना एक :-

सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक-संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

महाविद्यालयी शिक्षकों में तुलना करने पर सहायता प्राप्त का मध्यमान 168.75 और प्रमाणित विचलन 25.22 और गैर सहायता प्राप्त का मध्यमान 158.11 और प्रमाणिक विचलन 21.8 तथा क्रान्तिक निष्पत्ति 2.47 प्राप्त हुआ जो .05 स्तर पर सार्थक अन्तर रखता है।

इस अन्तर .05 स्तर पर सार्थक अन्तर से स्पष्ट हुआ कि सहायता प्राप्त महाविद्यालय में शिक्षक और गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालय के शिक्षकों से अधिक संतुष्ट हैं। अतएव परिकल्पना स्वीकृत हुई।

परिकल्पना दो :-

सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के पुरूष एवं महिला शिक्षकों की व्यावसायिक-संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

तालिका के अवलोकन से शिक्षकों के प्राप्तांकों प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान 4.77 तथा df=4.98 यह प्रदर्शित करता है कि सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त पुरूष शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर है एवं दोनों प्रकार के महाविद्यालयी महिला शिक्षिकाओं के प्राप्तांकों से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान 3.03 तथा df=4.98 यह प्रदर्शित करता है कि इनमें सार्थक अन्तर है।

इस परिकल्पना की जाँच के लिए आंकड़ों का विश्लेषण यह प्रदर्शित करता है कि सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के पुरूष शिक्षक गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की अपेक्षा अधिक संतुष्ट है। इसी प्रकार आँकड़ों से यह भी निष्कर्ष निकला कि सहायता प्राप्त महाविद्यालयों की शिक्षिकाएं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों की शिक्षिकाओं से अधिक संतुष्ट है। इन पुरूष और महिला शिक्षकों का अन्तर परिकल्पना को स्वीकृत करता है।

परिकल्पना तीन :-

शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयी शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

सारिणी के अवलोकन से यह पता चलता है कि शहरी क्षेत्र के सहायता प्राप्त का मध्यमान 159.37 तथा प्रमाणिक विचलन 22.31 और गैर सहायता प्राप्त मध्यमान 154.85 तथा प्रमाणिक विचलन 20.33 प्राप्त हुआ और क्रान्तिक अनुपात 2.76 जो .01 स्तर पर सार्थक अनतर है। साथ ही ग्रामीण क्षेत्र में सहायता प्रापत एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयी शिक्षों की व्यावसायिक संतुष्टि का क्रान्तिक अनुपात 2.41 है जो .05 स्तर पर सार्थक है परन्तु .01 स्तर पर सार्थक नहीं है।

इस परिकल्पना से सम्बन्धित आंकड़ों के विश्लेषण से यह परिणम प्राप्त हुआ कि शहरी क्षेत्र के सहायता प्राप्त शिक्षक गैर सहायता प्राप्त शिक्षकें की अपेक्षा अधिक संतुष्ट हैं। इसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्र की सहायता प्राप्त शिक्षक गैर सहायता शिक्षकों से व्यावसायिक संतुष्टि में आंशिक रूप से अन्तर रखते हैं। परिणाम यह स्पष्ट करता है कि यह परिकल्पना आंशिक रूप से स्वीकार योग्य है।

परिकल्पना चार :-

सामान्य एवं पिछड़ी जाति के सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षकों में व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

सारिणी के अवलोकन में सामान्य जाति के शिक्षकों का मध्यमान 145.57 है जो पिछड़ी जाति के शिक्षकों के मध्यमान 156.78 से कम है।

इस परिकल्पना की जाँच में आँकड़े का जो विश्लेषण प्राप्त हुआ उसमें सामान्य जाति के शिक्षक पिछड़ी जाति की तुलना में कम संतुष्ट हैं। अतएव परिकल्पना स्वीकार की गयी।

परिकल्पना पाँच :-

पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति के सहायता प्राप्त महाविद्यालयीय शिक्षकों की व्यावसायिक-संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

सारिणी संख्या 4.7 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि पिछड़ी जाति का मध्यमान 156.78 तथा मानक विचलन 20.05 और अनुसूचित जाति के शिक्षकों का मध्यमान 162.46 तथा मानक विचलन 22.63 पर .01 स्तर पर इनके बीच क्रान्तिक अनुपात का मान 1.50 सार्थक नहीं है।

इस परिकल्पना के सत्यापन में आँकड़ों के विवेचन के फलस्वरूप जो परिणाम प्राप्त हुए उसमें पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति के शिक्षकों के व्यावसायिक संतुष्टि में बहुत कम अन्तर है। अतएव यह परिकल्पना किसी सीमा तक अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना छः :-

सामान्य एवं अनुसूचित जाति के सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

सारिणी संख्या 4.8 के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति का मध्यमान 162.46 तथा मानक विचलन 22.63 और सामान्य जाति के शिक्षकों का मध्यमान 145.57 तथा मानक विचलन 18.32 जिनके बीच क्रान्तिक अनुपात का मान 5.72 प्राप्त है जो .01 स्तर पर सार्थक है।

इस परिकल्पना के सत्यापन में प्राप्त आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण करने के उपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि अनुसूचित जाति के शिक्षक सामान्य जाति के शिक्षकों से अपने व्यवसाय में अधिक संतुष्ट हैं। अतएव यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना सात :-

सामान्य एवं पिछड़ी जाति के गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयी शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

सारिणी संख्या 4.9 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि सामान्य एवं पिछड़ी जाति के शिक्षकों के मध्य क्रान्तिक निष्पत्ति का मान 4.01 है जो .01 स्तर पर सार्थक है अर्थात् दोनों वर्ग के शिक्षकों में काफी विभिन्नता है।

इस परिकल्पना के सत्यापन में आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के पश्चात् यह परिणाम प्राप्त हुआ है कि पिछड़ी जाति के गैर सहायता प्राप्त शिक्षक व्यावसायिक संतुष्टि में सामान्य जाति से अधिक है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना आठ :-

पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति के गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयी शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

सारिणी संख्या 4.10 के अवलोकन से पिछड़ी जाति एवं अनुसूचित जाति के शिक्षकों के व्यावसायिक संतुष्टि की तुलना के लिए क्रान्तिक निष्पत्ति का मान 1.38 है जो .01 स्तर पर सार्थक नहीं है।

इस परिकल्पना के सत्यापन में सांख्यिकीय विश्लेषण के पश्चात् यह परिणाम प्राप्त हुआ कि दोनों ही जाति के शिक्षक अपने व्यवसाय के प्रति संतुष्ट हैं। अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना नौ :-

सामान्य एवं अनुसूचित जाति के गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अन्तर है।

सारिणी संख्या 4.11 से यह ज्ञात होता है कि अनुसूचित एवं सामान्य जाति के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि की तुलना के लिए प्राप्त क्रान्तिक निष्पत्ति का मान 4.38 प्राप्त हुआ जो .01 स्तर पर सार्थक है।

इस परिकल्पना के सत्यापन में प्रदत्त प्राप्त आँकड़ों से सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया जिसमें अनुसूचित जाति के शिक्षक सामान्य जाति के शिक्षक से व्यवसाय में अधिक संतुष्ट पाये गये। यह अन्तर परिकल्पना को स्वीकृति प्रदान करता है।

परिकल्पना दस :-

सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है।

परिकल्पना दस :-

सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है।

सारिणी सं0 4.12 से यह ज्ञातव्य है कि शैक्षिक सम्प्राप्ति पर सहायता प्राप्त विद्यार्थियों का मध्यमान 332.62 है तथा गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान 236.14 है उपर्युक्त दोनों समूहों के मध्यमानों की तुलना के 'टी' का मान 22.51 प्राप्त हुआ जो .01 स्तर पर सार्थक है।

इस परिकल्पना के सत्यापन में आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण से यह परिणाम मिलता है कि सहायता प्राप्त महाविद्यालय के विद्यार्थी गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के विद्यार्थियों से अधिक शैक्षिक सम्प्राप्ति रखते हैं। इनके बीच यह अन्तर परिकल्पना को स्वीकृति प्रदान करता है।

परिकल्पना ग्यारह :-

ग्रामीण क्षेत्र के सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के छात्र/छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थर अन्तर है।

सारिणी संख्या 4.13 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 316.54 तथा छात्राओं का मध्यमान 288.15 प्राप्त हुआ है जिसका 'टी' मूल्य 3.488 है जो .01 स्तर पर सार्थक है।

परिकल्पना के सत्यापन में सांख्यिकीय विवेचन के पश्चात् यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि सहायता प्राप्त ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालयों के छात्र/छात्राओं की तुलना में अधिक शैक्षिक सम्प्राप्ति रखते हैं। परिणाम परिकल्पना को स्वीकृति प्रदान करता है।

परिकल्पना बारह :-

ग्रामीण क्षेत्र के गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है।

सारिणी संख 4.14 से यह विदित होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के छात्रों का मध्यमान 288.15 है तथा छात्राओं का मध्यमान 248.45 है और 'टी' का मान 5.38 प्राप्त हुआ है जो .01 स्तर पर सार्थक अन्तर रखता है।

परिकल्पना के सत्यापन में सांख्यिकीय विवेचन के पश्चात् यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि गैर सहायता प्राप्त ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालयों के छात्र/छात्राओं की तुलना में अधिक शैक्षिक सम्प्राप्ति रखते हैं। यह परिणाम परिकल्पना को स्वीकृति प्रदान करता है।

परिकल्पना तेरह :-

शहरी क्षेत्र के सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के छात्र/छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है।

सारिणी संख्या 4.15 से शहरी क्षेत्र के सहाया प्राप्त महाविद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों की तुलना छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति से की गयी है। छात्रों का मध्यमान 369.36 है। छात्राओं का मध्यमान 333.46 से अधिक है। इनके

मध्यमान व मानक विचलन के आंकलन से प्राप्त 'टी' का मान 10.0778 प्राप्त हुआ जो .01 स्तर पर सार्थक है।

परिकल्पना के सत्यापन में आँकड़ों से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि शहरी क्षेत्र के सहायता प्राप्त महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं की तुलना में अधिक शैक्षिक सम्प्राप्ति रखते हैं। अतएव यह परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

परिकल्पना चौदह :-

शहरी क्षेत्र के गैर-सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के छात्र/छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है।

सारिणी संख्या 4.16 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि शहरी क्षेत्र के गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयीय छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 263.72 तथा छात्राओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 242.84 प्राप्त हुआ है जिनका 'टी' का मान 3.447 है जो .01 स्तर पर सार्थक है।

इस परिकल्पना के सत्यापन में प्राप्त आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण यह निर्दिष्ट करता है कि शहरी क्षेत्र के गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति छात्राओं से अधिक है। अतएव यह अन्तर परिकल्पना को स्वीकृत करता है।

परिकल्पना पन्द्रह :-

सामान्य एवं पिछड़ी जाति के सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है।

सारिणी संख्या 4.17 से स्पष्ट होता है कि सामान्य जाति के विद्यार्थियों का मध्यमान पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों के मध्यमान से अधिक है दोनों ही जाति वर्ग के छात्र .01 स्तर पर सार्थक अन्तर रखते हैं।

परिकल्पना के सत्यापन के लिए प्रयुक्त सांख्यिकीय परिणाम सामान्य जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति पिछड़ों से अधिक बता रहे हैं। शैक्षिक सम्प्राप्ति का यह अन्तर परिकल्पना को स्वीकृति प्रदान करता है।

परिकल्पना सोलह :-

पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति के सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति से सार्थक अन्तर है।

सारिणी संख्या 4.18 से यह स्पष्ट होता है कि पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 285.64 तथा अनुसूचित जाति का मध्यमान 250.15 है इनका 'टी' का मान 4.65 है जो .01 स्तर पर सार्थक अन्तर रखता है।

इस परियोजना के लिए प्रयुक्त तालिका के अवलोकन से यह स्पष्ट हो रहा है कि दोनों ही जातियों के विद्यार्थियों में .01 स्तर पर सार्थक अन्तर है तथा पिछड़े समूह के विद्यार्थी अनुसूचित जाति समूह से शैक्षिक सम्प्राप्ति अधिक रखते हैं। शैक्षिक सम्प्राप्ति का यह अन्तर परिकल्पना को स्वीकृति प्रदान करता है।

परिकल्पना सत्तरह :-

सामान्य एवं अनुसूचित जाति के सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है।

सारिणी संख्या 4.19 के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि सामान्य जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों से

अधिक है दोनों ही समूहों के बीच 'टी' का मान 8.04 है जो .01 स्तर पर सार्थक अन्तर होता है।

सारिणी के अवलोकन से उपर्युक्त दोनों समूहों के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति के आंकड़े अन्तर अभिव्यक्त कर रहे हैं। साथ ही सामान्य जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति अनुसूचित जाति से अधिक परिलक्षित हो रही है। अतएव परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना अट्ठारह :-

सामान्य एवं पिछड़ी जाति के गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर होता है।

सारिणी संख्या 4.20 से यह स्पष्ट होता है कि सामान्य जाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 367.76 तथा पिछड़ी जाति के मध्यमान 329.03 है उनके बीच 'टी' का मान 9.85 है जो .01 स्तर पर सार्थक अन्तर रखता है।

गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालय के सामान्य एवं पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों की तुलना करने पर यह प्राप्त हुआ कि सामान्य जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों से अधिक है, अतएव परिकल्पना स्वीकृत की जाती हैं

परिकल्पना उन्नीस :-

पिछड़ी एवं अनुसूचित जाति के गैर सहायता प्राप्त महाविद्ययालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है।

सारिणी 4.12 से यह स्पष्ट होता है कि पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति का मध्यमान 329.03 तथा अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का

मध्यमान 301.06 है इनके बीच 'टी' का मान 6.44 है जो .01 स्तर पर सार्थक अन्तर रखता है।

तालिका में प्राप्त आँकड़ों से यह निर्दिष्ट होता है कि पिछड़ी जाति के गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालय के विद्यार्थी अनुसूचित जाति से अधिक शैक्षिक सम्प्राप्ति रखते हैं। यह अन्तर परिकल्पना को स्वीकृति देता है।

परिकल्पना बीस :-

सामान्य एवं अनुसूचित जाति के गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति में सार्थक अन्तर है।

सारिणी संख्या 4.22 से यह स्पष्ट होता है कि सामान्य जाति के विद्यार्थियों का मध्यमान 367.76 तथा अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का मध्यमान 301.06 है इनके बीच 'टी' का मान 15.92 जो .01 स्तर पर सार्थक अन्तर रखते हैं।

इस तालिका के सांख्यिकीय आँकड़े यह स्पष्ट करते है कि सामान्य जाति के गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के विद्यार्थी शैक्षिक सम्प्राप्ति में अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों से अधिक हैं। शैक्षिक सम्प्राप्ति का यह अन्तर परिकल्पना को स्वीकृति प्रदान करता है।

5.2 शैक्षिक निहितार्थ :

प्रस्तुत शोध में दो बिन्दुओं को लेकर आँकड़े संग्रहित किये गये तथा सांख्यिकीय विश्लेषण से व्याख्या के उपरान्त परिणाम प्राप्त किया गया।

पहला बिन्दु था- सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि। इसमें लिंग, आवास व जाति को दृष्टि में रखकर तालिकाओं के अन्तर्गत आंकड़े संग्रहित किये गये तथा चरों के अनुरूप व्याख्या व

विवेचन किया गया निष्कर्ष के उपरान्त यह सामान्य विचार बना कि सहायता प्राप्त महाविद्यालय के शिक्षक गैर सहायता प्राप्त की तुलना में अधिक व्यावसायिक संतुष्टि रखते हैं। इससे यह सूचना प्राप्त हुई कि गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों में भी सुविधा प्रदान करके तथा उनके शैक्षणिक स्तर को सुधार कर शिक्षकों को आकर्षित किया जा सकता है इससे शैक्षिक विषमता भी समाप्त होगी तथा सम्पूर्ण उच्च शिक्षा में समरसता का संचरण होगा। आँकड़े होगा। आँकड़े यह भी निर्दिष्ट करते हैं कि क्रमशः अनुसूचित, प्रिछड़ी जाति के शिक्षक सामान्य. जाति से व्यवसाय के प्रति अधिक संतुष्ट हैं, इससे इन जातियों में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ेगी तथा सामाजिक विषमता दूर मिला। आँकड़े यह भी प्रदर्शित करते है कि महिलायें भी शिक्षण व्यवसाय के प्रति आकर्षित हैं तथा व्यावसायिक स्तर के उन्नयन हेतु जागरूक है।

सब मिलाकर यह निर्देश प्राप्त होता है कि गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के मानदंडों में पर्याप्त सुधार की अपेक्षा है, ताकि व्यापक स्तर पर छात्र और समाज हित को दृष्टि में रखते हुए अच्छे लोग शिक्षण व्यवसाय के प्रति आकर्षित हो तथा शिक्षा जगत में ज्ञान की सम्प्राप्ति में उत्तरोत्तर बढ़ोत्तरी हो।

द्वितीय बिन्दु क अन्तर्गत सहायता प्राप्त एवं गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति की तुलना की गयी। यह तुलना उनके लिंगगत, आवासगत व जातिगत भेद को दृष्टि में रखकर ली गयी। परिणाम यह प्रदर्शित कर रहे हैं कि सहायता प्राप्त महाविद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति गैर सहायता प्राप्त से अधिक है। इससे यह शैक्षिक निहितार्थ प्राप्त होता है कि गैर सहायता प्राप्त महाविद्यालयों के शिक्षण स्तर में सुधार किया जाय तथा शैक्षिक सम्प्राप्ति में पीछे है, इससे यह निर्देश प्राप्त होता है कि अनवरत् सरकारी प्रयासों के बावजूद अनुसूचित जाति के छात्रों का विकास मन्द गति से हो रहा है, कुछ परिवारों को छोड़कर अधिसंख्य अनुसूचित जाति के बालकों में सुधार के लिए ठोस कदम उठाये जायें तथा विद्यालयी सुविधाओं के अतिरिक्त न केवल पठन-पाठन बल्कि उनके आर्थिक एवं

मनोवृत्यात्मक सुधार हेतु कदम उठाये जाये। छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति छात्राओं से थोड़ी अधिक रही। यह अन्तर छात्राओं का घर के काम-काज में अधिक समय देने के कारण प्रतीत हो रहा हैं अतएव यह सकारात्मक सामाजिक समन्वय का ही परिलक्षण है।

5.3 भावी शोध हेतु सुझाव :

प्रस्तुत अध्ययन की सीमाएं सीमित है तथा सीमित चरों को लेकर अध्ययन किया गया है, इसी प्रकार का अध्ययन विस्तृत परिक्षेत्र तथा अधिक न्यादर्शों पर किया जा सकता है। इस दृष्टि से निम्नलिखित सुझाव अपेक्षित है।

1. यह अध्ययन सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश के महाविद्यालयों पर किया जा सकता है।

2. उच्च शिक्षा के अतिरिक्त माध्यमिक एवं प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का आंकलन भी किया जा सकता है।

3. महाविद्यालयीय शिक्षकों के अतिरिक्त माध्यमिक एवं प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति हेतु अध्ययन नियोजित किया जा सकता है।

4. शिक्षकों के अतिरिक्त अभिभावकों की शैक्षिक व्यवस्था के प्रति संतुष्टि का आंकलन अध्ययन के द्वारा किया जा सकता है।

5. व्यावसायिक संतुष्टि का उनके जीवन स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का भी अध्ययन किया जा सकता है।

6. लिंगगत आवासगत एवं जातिगत चरों के अतिरिक्त विषयगत, योग्यतागत तथा अनुभवगत, चरों को लेकर व्यावसायिक संतुष्टि जानी जा सकती है।

7. व्यावसायिक संतुष्टि के लिए विभिन्न कारकों को लेकर भी अध्ययन किया जा सकता है जैसे-छात्र सम्बन्ध, शैक्षिक एवं सामाजिक अनुशासनहीनता, सामाजिक अनुशासनहीनता, सामाजिक आर्थिक विषमता, राजनैतिक दबाव इत्यादि।

8. उच्च, माध्यमिक एवं प्राथमिक शिक्षण संस्थाओं में सेवारत शिक्षणेत्तर कर्मचारियों की व्यवसायिक संतुष्टि का भी अध्ययन किया जा सकता है।

9. विषय एवं संकायवार विभेदन के अनुसार विद्यार्थियों के शैक्षिक सम्प्राप्ति का अध्ययन किया जा सकता है।

10. बालकों की शैक्षिक सम्प्राप्ति को प्रभावित करने वाले विविध कारकों को लेकर शोध कार्य नियोजित किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अरोरा, आर0के0 (1986) टीचर्स-एब्जाइटी एट डिफरेन्ट लेवल्स आफ लॉव-सैटिसफेक्शन, इंडियन एजूकेशनल रिव्यू, 21(1), 151-157.

- अलध्यायज, अब्दुल अजीज, डी0एम0 (1966) ए स्टडी आफ द इमपेक्ट आफ सुपरवाइजरी स्टाइल आन टीचर्स जॉब-सैटिसफैक्स इन द सेकेन्डरी स्कूल इन : कुवैत, इडी, वेस्टर्न मिसीगत, यूनिवर्सिटी, डिसरटेशन, एब्सट्रेक्ट्स इंटरनेशनल 48(1) 1987, 2ए।

- अट्टेवरी, एम0जी0 (1977) रिलेशनशिप विटवीन इमोंसनल स्टेबिलिटी एण्ड जॉब सैटीसफेक्शन आफ इलेमेन्ट्री स्कूल प्रिंसिपल्स डिसरटेशन एब्सट्रेक्टस इंटरनेशनल, 37 (10), 6163-ए.

- अग्रवाल एस0एस0 (1966) द स्टडी आफ आट्टिट्यूड आफ ट्रेनिंग कालेज टीचर्स आफ आगरा यूनिवर्सिटी टुअर्डस देअर प्रोफेशन, एव.एड. डिसरटेशन, देल्ही यूनिवर्सिटी.

- अवलरेज, क्रूज, लीन्डा हेलन (1990) सुपरविजय आफ द मिडिल टीचर : जॉ-सैटिसफेक्शन एण्ड मोटिवेशन, इडी0डी0 फारधाम यूनिवर्सिटी डिसरटेशन एब्सट्रेक्ट्स इंटरनेशनल, 51 (11), 1991, 3565-66ए.

- आस्कर, एज0जी0 (1981) ए स्टडी आफ टीचर जॉब सैटिसफैक्शन इन कुवैत, पी0एच0डी द यूनिवर्सिटी आफ मिसिगन, डिजरटेशन एब्सट्रेक्ट्स इंटरनेशनल, 42 (02), 1981, 466ए.
- आनन्द, एस0पी0 (1977) स्कूल टीचर्स, जॉब-सैटिसफैक्शन बी एक्सट्रर्वजन एण्ड न्यूरोटिसीजम्, इंडियन एजूकेशनल रिव्यू, 12(2), 68-78.
- आनन्द, एस0पी0 (1980) टीचर्स बैलूज एण्ड जॉब-सैटिसफैक्शन इंडियन एजूकेशनल रिव्यू, 15(4), 23-24.
- आनन्द, एस0पी0 (1985) सैटिसफेक्शन एण्ड डीससैटिसफेक्शन इन द स्कूल टीचिंग प्रोफेशन इंडियन एजूकेशनल रिव्यू, 20(1) 55-64.
- आनन्द एस0पी0 (1986) एट्टीट्यूड्स आफ टीचर्स टूअर्डस प्यूपिल्स एण्ड देयर जॉब-सैटिसफेक्शन, इंडियन एजूकेशनल रिव्यू, 21(3), 3850.
- ओजम्बा, अमोस एटीमेनिया (1987) एडमिनिस्ट्रेटिव लीडरशिप स्टाइल एण्ड टीचर जॉब सैटिसफेक्शन ए स्टडी आफ सेकेण्ड्री स्कूल इन आइमो स्टेट नाईजिरिया, इडी0 डी0, टेक्सेज साउर्थन यूनिवर्सिटी डिसरटेशन एब्सट्रेक्ट्स इंटरनेशनल, 46(6) 1988, 1333-ए.
- ओझा, शैलेजा (1972) ए स्टडी आफ जॉब सैटिसफेक्शन आफ सेकेण्ड्री स्कूल टीचर्स, एम0एड0 डिसरटेशन, बी0एच0यू0

- अंजनेयुलु बी0एस0आर0 (1968) ए स्टडी आफ जॉब सैटिसफेक्शन इन द सेकेंडरी स्कूल टीचर्स एण्ड यू0एस0 इमपैक्ट आन द एजूकेशन आफ पीपुल्स बीथ स्पेशल रिफरेंश टू स्टेट आफ आध्र प्रदेश पी0एच0डी0 थीसिस.

- इन्द्रसेन, जयालक्ष्मी (1979) फैक्टर्स मोडरेटिंग द परसेप्सन आफ आर्गनाइजेशनल एटमस्फीयर एण्ड जॉब-सैटिसफेक्शन : ए स्टडी आफ इंजिनियरिंग टीचर्स, इंडियन जनरल आफ एप्लाइड साइकोलाजी, 16(2), 83-88.

- इन्द्रसेन, जयालक्ष्मी (1980) परसेप्सन आफ लीडरशिप स्टाइल एण्ड सैटिसफेक्शन आफ डीफरेन्ट नीड एरिया : द इंडियन जनरल सोशल वर्क 41(1), 24.

- इकर्ट, आर0ई0 (1959) ह्वेन स्कूल टीचर ज्वाइन कालेज, फैकल्टीज, नार्थ सेन्ट्रल एसस, क्वाटरली, 34, 161-166.

- इडवार्डस, स्टेवेन वारेन (1990) टाइम मैनेजमेन्ट एण्ड सेलेक्टेड डीमोग्राफिक फैक्टर्स आफ सेकेण्ड्री प्रिंसिपल इन कनेक्टीकट एज प्रेडीक्टर्स आफ जॉब सैटिसफेक्शन पी0एच0डी0 द यूनिवर्सिटी आफ कनेक्टीक्ट, डिसरटेशन एब्सट्रेक्ट्स इंटरनेशनल, 52(3), 1991, 1754-ए.

- इनलो जी0एम0 (1951) जॉब सैटिसफेक्शन आफ लीबरल आर्ट्स ग्रेजुएट्स जनरल आफ एप्लाइड साइकोलाजी, 35(3), 175-181.
- इनफैक्ट, जेम्स मिचेल (1990) अीम डीसीजन-मेकिंग एज रीलेटेड टू जॉब-सैटिसफेक्शन आफ टीचर्स, इडी0डी0, द यूनिवर्सिटी आफ अक्रोम, डिसरटेशन एब्सट्रेक्ट्स इंटरनेशनल, 51(8), 1991, 2583-ए.
- ईगलहर्ट, वी0 (1974) टीचर्स जॉब-सैटिसफेक्शन इन स्कूल्स आफ डिफरेंट लेवल जनरल आफ साइकोलाजी इन एनजीहूम एण्ड आन्टीरिक.
- उषाश्री0 एस0 (1989) जॉब सैटिसफेक्शन एमंड सोसकली डीसएडवान्टेज एण्ड एडवान्टेज कालेज टीचर्स, साइकोलाजीकल स्टडीज 34(3), 157-159.
- एम0सी0 गोवन, जेम्स, मिचेल (1981) ए एप्लीकेशन आफ ए हर्जबर्ग थीयरी आफ जॉब-सैटिसफेक्शन ऑफ लोआ पब्लिक स्कूल टीचर्स, डिसरटेशन एब्सट्रेक्ट्स इंटरनेशनल, 42(11), 1982, 4674-ए.
- एन्ड्रीयू, सुसन, सेडक (1991) स्ट्रेस, जॉब-सैटिसफेक्शन एण्ड बर्नआउट आफ बेर्वड बाईलीगल एण्ड इंग्लिश ओनली टीचर्स, पी0एच0डी0 क्लेरमन ग्रेजुएट स्कूल, डिसरटेशन एब्सट्रेक्ट्स इंटरनेशनल 53(3), 1991, 745-ए.

- क्लार्क, राबर्ड लीओ0 (1976) सोर्स आफ टीचर जॉब-सैटिसफेक्शन एण्ड डीस सैटिसफेक्शन फार सीनियर हाईस्कूल टीचर्स इडी डी0यूनिवर्सिटी आफ पेनसालवानिया, डिसरटेशन एब्सट्रेक्ट्स इंटरनेशनल, 1977, 37(9), 5471-5427ए.
- कार, डेलविलिएम्स (1990) ए इफेक्ट आफ पीपुल्स सेन्ट्रल आडीयोलॉजी एण्ड प्रिंसपल यूज आफ पावर आन टीचर जॉब-सैटिसफेक्शन इडी0डी0 एनबर्न यूनिवर्सिटी, डिजरटेशन एब्सट्रेक्ट्स, इंटरनेशनल, 51(12), 1991, 3976-ए.
- किर्कपैट्रिक, आर0एन0 (1962) द रिलेशनशिप आफ जॉब-सैटिसफेक्शन टू परसीवेड स्टाफ प्रमोशनल पालिटिक्स अनपब्लिस्ड डाक्टरल थिसिस, स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी.
- कुलवर, एस0एम0 ओफले, लीम, एण्ड क्रास, एल0एच0 (1990) टेस्टिंग ए मॉडल आफ टीचर सैटिसफेक्शन फार ब्लैक्स एण्ड व्हाइट्स अमेरिकन एजूकेशनल रिसर्च जनरल0 27(2) 323-349.
- कुलीन, आर0जी0 (1963) नीड्स परसीवेड नीड सैटिसफेक्शन अपारचूनिटी एण्ड सैटिसफेक्शन वीथ आकूपेशन, जनरल आफ एप्लाइड साइक्लोजी, 47(1) 56-64.

- कोठारी वी0ए0 (1958) ए स्टडी आफ एट्टीटूड्स आफ पैरेन्टस्, पीपुल्स एण्ड टीचर्स टूअर्डस् टीचिंग एज ए कैरियर, एम0एड0 डिजरटेशन, बाम्बे यूनिवर्सिटी.
- कोहेन, एम0ए0 (1977) द जॉब कॉनसेसनेस ऑफ पब्लिक स्कूल टीचर्स-ए केस स्टडी आफ वर्क आईडियोजाली इन न्यूटन मासचेस्ट्स, डिसरटेशन एब्सट्रेक्टस इंटरनेशनल 38(5) 3017-ए.
- कोलमर, जूडी (1989) ए कोरीलेशन स्टडी आफ प्रिंसपल्स लीडरशिप स्टाइल एण्ड टीचर्स जॉब-सैटिसफेक्शन एडी0डी0 ईस्ट टेक्सेज स्टेट यूनिवर्सिटी डिसरटेशन एब्सट्रेक्ट्स इंटरनेशनल 51(1) 1990, 30-ए.
- कौधन, आर0जे0 (1971) जॉब-सैटिसफेक्शन इन रीलेटरी क्लोज्ड एण्ड ओपेन स्कूल्स, एजूकेशनल एडमिनिस्ट्रेटिव क्वाटरली, 7(2) 40-59.
- गना, बी0 (1985) वर्क वैलू एण्ड जॉब-सैटिसफेक्शन आफ प्रिंसपल्स एण्ड टीचर्स आफ नीगेरियन सेकेण्ड्री स्कूल्स, पी0एच0डी यूनिवर्सिटी आफ मिसोरी, डिसरजेटशन एब्सट्रेक्ट्स इंटरनेशनल, 46(4) 1985, 854.
- गुप्ता, एस0पी0 (1980) ए स्टडी आफ जॉब-सैटिसफेक्शन एट थ्री लेवल आफ टीचिंग पी0एच0डी0 थिसिस, एजूकेशन, मेरठ यूनिवर्सिटी।
- गुप्ता एस0पी0 (1983) ए स्टडी आफ जॉब-सैटिसफेक्शन एट थ्री लेबल आफ टीचिंग इंडियन एजूकेशनल रिव्यू, 18(2), 75-78.

- गोयल, जे0सी0 (1981) ए स्टडी आफ द रिलेसनशिप एमंग एट्टीट्यूड, जॉब-सैटिसफेक्शन एडजेस्टमेन्ट एण्ड प्रोफेसनल इनटेरेस्ट आफ टीचर एडूकेटर्स इन इंडिया, इंडियन एजूकेशनल रिव्यू, 16(4) 55-60.
- चाइल्ड, सैली, जॉनस्टेन (1991) परसेप्सन आफ पार्टीसीपेंशन डिसीजन-मेकिंग, प्रोफेसन्लीज्म, एण्ड जॉब-सैटिसफेक्शन बाई सेन्ट्रल-हावर हाई-स्कूल फेकेल्डी इन कम्प्रीजन वीथ अदर अकरान सेकेन्ड्री टीचर्स, इडी0डी0 द यूनिवर्सिटी आफ अकरान, डिसरटशन एबस्ट्राक्ट इंटरनेशनल 52(4), 1991, 1142-ए.
- चित्तम, साराआस्टीम (1990) रिलेशनशिप बिटवीन सेकेन्ड्री टीचर्स जॉब-सैटिसफेक्शन एण्ड देयर परसेप्सन आफ स्कूल क्लाइमेट्स इडी0डी0 मीसीसीपी स्टेट यूनिवर्सिटी डिसरटेशन एब्सट्रेक्ट्स इंटरनेशनल, 51(11) 1991, 3568-ए.
- चेस एफ0एस0 (1951) फैक्टर फार सैटिसफेक्शन इन टीचिंग, फाई डेल्टा कष्पन 33, 127-132.
- चेरटोक, हेरीलेविस (1990) प्रोफेशनल ओरिएन्टेशन एण्ड आटोनामी एज प्रेडीकेटर्स आफ जॉब-सैटिसफेक्शन आफ इलेमेन्ट्री एण्ड सेकेन्ड्री स्कूल टीचर्स एडी0डी0 एस0टी0 जोन्स यूनिवर्सिटी, डिसरटेशन एब्सट्रेक्टस इंटरनेशनल, 52(2) 1997, 335-ए.

- चेरटेक, हेरीलेविस (1990) प्रोफेशनल ओरिऐन्शन एण्ड आटोनामी एज प्रेडीक्टर्स आफ जांब-सैटिसफेक्शन आफ इलेमेन्ट्री स्कूल टीचर्स इडी. एसटी. जोन्स यूनिवर्सिटी डिसरटेशन एब्सट्रेक्ट्स इंटरनेशनल, 52(2) 1991.
- चोपड़ा आर0 के0 (1986) इंस्टीट्यूशनल क्लाइमेट एण्ड टीचर जांब-सैटिसफेक्शन इंडियन एजूकेशनल रिव्यू 21(2) 33-45.
- चोपड़ा, आर0के0 (1982) आर्गनाइजेशनल क्लाइमेट इन रिलेशन टू टीचर्स जांब-सैटिसफेक्शन एण्ड स्टूडेन्टस, एचीवमेन्ट, पी0एच0डी0 थिसिस आगरा यूनिवर्सिटी, 1982 इंडियन एजूकेशनल रिव्यू 18 (4) 1983,
- जांनसन इडी0डी0 (1967) एन एनालीसिस आफ फैक्टर्स रिलेटेड टू टीचर्स सैटिसफेक्शन डिस सैटिसफेक्शन अनपब्लिसड् डाक्टरल थीसिस अर्बन यूनिवर्सिटी जांन्स, केविन रिजीनल्ड (1990) द रिलेशनशिप आफ टीचर्स परसीव्ड लेवल आफ मोरेल एसण्ड देअर परसेप्सन आफ द स्कूल क्लाइमेट, एडी0डी0 मिसिसिपी यूनिवर्सिटी डिसरटेशन एबस्ट्राक्ट इंटरनेशनल, 51 (11), 1991, 3578-ए,
- जेरपीनों, काथ्रीयन अन्न (1991) पार्टीसीपेट्री डीसीजन-मेकिंग एण्ड टीचर जांब-सैटिसफेक्शन एडी0डी0 स्टेट यूनिवर्सिटी न्यूयार्क, एट अलपनी डिसरटेशन एब्सट्रेक्ट्स इंटरनेशनल, 52 (6), 1991, 1962-ए.

- डिंकल शरन काय (1982) जांब-सैटिसफेक्शन एण्ड परसेप्सन आफ टीचिंग आफ हाईस्कूल टीचर/कोचेज इडी0डी0 द यूनिवर्सिटी आफ उटाह, डिसरटेशन एब्सट्रेक्ट्स इंटरनेशनल, 43 (8) 1983, 2595-95-ए,

- डिकाप्रियों, पी0आर0 (1974) ए स्टडी आफ द रिलेशनशिप आफ आर्गनाइजेशनल क्लाइमेट टू जांब-सैटिसफेक्शन आफ, टीचर्स इन सेलेक्टेड रूलर एण्ड सब अरबन सेकेन्ड्री स्कूल्स न्यूयार्क एट एलबनी,डिसरटेशन एब्सट्रेक्ट्स इंटरनेशनल 35 (6), 1974, 333-ए.

- द्विवेदी,नीरजा,एण्ड पेस्टन जी, डी0एम0 (1975) सोसियो-पर्सनल कोरीलेट्स आफ जांब-सैटिसफेक्शन साइक्लोजिकल स्टडीज 20 (2), 30-49.

- दीक्षित, मीना (1985) इफेक्ट आफ टीचिंग एक्सपिरियन्स आन द लेवल आफ जांब-सैटिसफेक्शन एमंग सेकेन्ड्री स्कूल टीचर्स साइक्लोजिकल रिसर्च, 8 (1), 43-46.

- धवन,जे0के0 (1963) सोसल रिफरेसेंज बेसीस आफ जांब-सैटिसफेक्शन-ए केस फार टीचर्स एण्ड एसिसटेंन्टस, एम0ए0 सोसियोलाजी डिसरटेशन,पंजाब यूनिवर्सिटी.

- धर,यू0एण्ड जैन,आर0 (1992) जांब-इन्वालमेन्ट, जांब-सैटिशफेक्शन एण्ड सम डीमोग्राफिक कोरीलेटसः ए स्टडी आफ एकाडमिसियन्स, इंडियन जनरल आफ साइकोलाजी, 67 (162) 5-10.

- नेशनल एजूकेशनल एसोसिएशन,"फर्स्टईयर टीचर्स इन 1954-1955", नी ई ए-रिसर्च बूलेटिन नं0 30.

- नैयर, रोडेन एच,सेनटोर (1990) द जांब-सैटिसफेक्शन,मोटीवेशनल नीड्स एण्ड परेसेप्सनस् रिर्गाडिंग देअर प्रिंसपल्स लीडरशिप स्टाइल फार टीचर्स एमपोवेयर्ड एज इन्सट्रक्शनल लीडर्स इन द इनीटेशन आफ ए मेन्टर टीचर प्रोग्राम इडी0डी0 यूनिवर्सिटी आफ ब्रीडजेपोर्ट, डिसरटेशन एब्सट्रेक्टस इंटरनेशनल,51 (12) 1991, 3980-ए.

- परकीज,बी0ए0 (1968) कोरीलेट्स आफ टीचर सैटिसफेक्शन जूनियर एण्ड सीनियर हाईस्कूल्स कैलिफोर्निया जनरल आफ एजूकेशनल रिसर्च,19, 222-225.

- पराशर ओ0डी0 (1963) एट्टीटंच्यूड आफ टीचर्स टूअईस टीचिंग,एम0एड0 डिसरटेशन, दिल्ली यूनिवर्सिटी।

- पालकीवाल, एन0ए0 (1959) ए स्टडी आफ वन हन्डरेड केसेज साफ सकेन्ड्री टीचर्स रीगार्डिग देअर जॉब-सैटिसफेक्शन, एम0एड0 डिसरटेशन, बाम्बे यूनिवर्सिटी.

- पाण्डंय यू0 (1958) ए स्टडी आफ ओमेन टीचर ट्रेनिंग एट्टीट्यूट टूअर्डस देअर प्रोफेसन, एम0एड0 डिसरटेशन, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी 1958.

- पोरवाल, एन0के0 (1980) पर्सनालिटी कोरीलेट्स आफ जॉब-सैटिसफेक्शन हायर सेकेन्ड्री स्कूल टीचर्स पी0एच0डी0 थिसिस साइकोलाजी आगरा यूनिवर्सिटी।

- फारसेला, थामस अन्नथोनी (1991) एन एक्जामिनेशन आफ जॉब-सैटिसफेक्शन रोल एम्बीयूटी, एण्ड रोल कानफ्लीक्ट वीथ टू कैरियर मोबाइल एण्ड कैरियर स्टेबल असिस्टेन्ट प्रिंसपल्स इन मासचूसेट्स पब्लिक हाईस्कूल, इडी0डी0 यूनिवर्सिटी आफ ब्रिजपोर्ट डिसरटेशन एबसट्रैक्ट इंटरनेशनल, 52 (4), 1991, 1146-ए.

- बटर, टी0एम0 (1961) सैटिसफेक्शन आफ बिगनिंग्स टीचर्स, क्लीयरिंग हाउस, 36, 11-13.

- बर्नाड एन0 एण्ड कुलडैवल (1976) ए स्टडी आफ जॉब-सैटिसफेक्शन एमंग ग्रेजुएट टीचर्स, इन कोयम्बटूर, जनरल आफ एजूकेशनल रिसर्च एण्ड एक्सटेनसन, 13(2); 120-124.

- बाकर आर0जे0 (1971) जॉब-सैटिसफेक्शन आफ फस्ट-ईअर टीचर्स ए स्टडी आफ डीक्रीपैसीज बीटवीन एक्सपैक्टेंशन एण्ड एक्सपिरिएन्स अनपब्लिस्ड डाक्ट्रल थिसिस, यूनिवर्सिटी आफ मिनिसोटा.

- बारबर, पत्रिसिया अन्न (1990) जॉब-सैटिसफैक्शन आफ इलेमेन्ट्री एण्ड सेकेन्ड्री स्कूल टीचर्स, ईडी0डी0 राजर्स यूनिवर्सिटी द स्टेट यू0 आफ न्यूजर्सी, डिसरटेशन एब्सट्रेक्ट्स इंटरनेशनल, 41 (4), 1980, 1291ए.

- बटेस, डी0एम0 (1954) द मोरल आफ टीचर्स इन पब्लिक हाईस्कूल अनपब्लिस्ड डाक्ट्रल डिजरटेशन, यूनिवर्सिटी आफ शिकांगो.

- बालटिटोरी जॉन एडर्वड (1990) द इफेक्ट आफ डिसिजनल पार्टीसिपेसन आन जॉब सैटिसफेक्शन आफ हाईस्कूल प्रिंसपल्स इडी0डी0 ओकलाहोमा स्टेट यूनिवर्सिटी, डिसरटेशन एब्सस्ट्रेक्ट्स इंटरनेशनल, 41 (05), 1980, 1852-ए.

- बावर्स, राबर्टन, जून0 (1986) रिलेसनशिप एमंग एजूकेशनल अपारचूनिटी, एण्ड जॉब सैटिसफेक्शन फार इंडियन सेकेन्ड्री इंगलिश टीचर्स, इडी0डी0 इंडियन यूनिवर्सिटी डिजरटेशन एब्सट्रेक्ट्स इंटरनेशनल, 47 (7), 1987, 2531ए.

- बाइनी, डेविड, जार्ज, (1984) ए रिलेसनशिप आफ एक्सपिरिएन्स वर्क मोटीवेशन, सेलेक्टेड सेचूवेशनल बैरीएबूल्स एण्ड लोकस आफ कन्ट्रोल टू टीचर जॉब-सैटिसफेक्शन इडी0डी0 यूनिवर्सिटी आफ फलोरिडा डिसरटेशन एब्सट्रेक्टस इंटरनेलशनल, 46 (06), 1985, 1450-ए.

- बीन्डवेल, सी0ई0 (1955) ए एडमीनिस्ट्रेशन एण्ड टीचिंग सैटिसफेक्शन फाइडेल्टर कप्पन 37, 285-288.

- बिशाप, टी0एस0 (1969) फैक्टरस अफैक्टिंग जॉब-सैटिसफेक्शन एण्ड जॉब डिससैटिसफेक्शन एमंग ओआ पब्लिक स्कूल टीचर्स अनपब्लिस्ड डाक्ट्रल थिसिस, यूनिवर्सिटी आफ ओझा.

- बेलास्को जे0ऐ0 एण्ड एलुटो, जे0ऐ0 (1972) डिसिजनल पार्टीसिपेसन एण्ड टीचर सैटिसफेक्शन एजूकेशनल एडमिनिस्ट्रेशन क्वाटरली, 8(1), 44-58.

- बेहरमैन, हेरी (1976) टीचर्स-स्टूडेन्ट रिलेशन एज प्रेडीकेटर आफ टीचर्स, जॉब-सैटिसफेक्शन इडी0 डी0 यूनिवर्सिटी आफ पेनसालवानिया, डिसरटेशन एब्सट्रेक्ट्स इंटरनेशनल, 37 (9) 1977, 5467-ए.

- भट्ट, डी0जे0 (1994) जॉब-सैटिसफेक्शन एज रिलेशन टू आर्गनाइजेशनल बैरीएबुल. इंडियन साइकोलाजिकल रिव्यू, 42 (162), 9-20.

- मरीन, रसल अनब्रे (1976) जॉब-सैटिसफेक्शन एण्ड कानफ्लीक्ट एमंग पब्लिक हाईस्कूल टीचर्स पी0एच0डी0 द यूनिवर्सिटी आफ नार्थ कारोलीना एट चैपल हिल डिसरटेशन एबस्ट्रक्ट इंटरनेशनल 37 (8), 1977.

- मरफी, जैनीस, इलेन (1990) कैरीटीरिक्टीस एण्ड जॉब–सैटिसफेक्शन आफ कैरीयर बाउन्ड एण्ड प्लेस–बाउन्ड इलेमेन्ट्री स्कूल प्रिंसपल पी0एच0डी0, यूनिवर्सिटी आफ नेशनल, 51 (9), 1991, 2949–ए.

- महेश विमला एण्ड सक्सेना, अलका (1983) इफेक्ट आफ प्रैक्टिस आन टीचिंग, इफेसीयेन्सी एण्ड टीचिंग एट्टीटूड आफ बी0एड0 स्टूडेन्टस, इंडियन एजूकेशनल रिव्यू 18(1), 109–115.

- मार्गन, जोहन सी (1990) एन एनालीसिस आफ द कानग्रूऐन्स एण्ड डीसपेरीटी वीटवीन टीचर्स एण्ड प्रिंसिपल्स आफ परसीवेट टीचर जॉब–सैटिसफेक्शन इडी0डी0 न्यूयार्क यूनिवर्सिटी डिसरटेशन एब्सट्रेक्टस इंटरनेशनल, 50 (8), 1991, 2589–ए.

- माइगोवन, जेम्स, मिकेल ब्रायन, जे0आर0 (1989) टीचर्स जॉब–सैटिसफेक्शन एण्ड टीचर्स रैर्पोट वीथ ए प्रिंसपल इन रिलेशनशिप टू प्रिंसपल लीडरशिप स्टाइल एण्ड स्कूल इनरोलमेन्ट साइज इन टेनेस पब्लिक सेकेन्ड्री स्कूल्स इडी0डी0 मेमफीस स्टेट यूनिवर्सिटी डिसरटेशन एब्सट्रेक्ट्स इंटरनेशनल, 50 (6) 1989, 1512–ए.

- मायादेव (1972) परसीवेड एमपारटेन्स आफ जॉब–सैटिसफेक्शन इन डिफरेन्ट स्टाइल ऑफ जॉब–साइकोलाजिकल स्टडीज, 17(2), 174.

- मिलर, मारवीन हेरी (1984) द रिलेशन्स आफ टीचर जॉब-सैटिसफेक्शन टू पाटीसीपेशन इन द डिसीजन-मेकिंग प्रासेस इन मिसिसिपी-डिसरटेशन एब्सट्रेक्टस इंटरनेशनल, 46(6), 1985, 1468-ए.
- मेंहदी, एस0जी0 एण्ड जे0एन0 (1971) ए स्टडी आफ रिलेशनशिप बीट्वीन न्यूरोसीजम एण्ड जॉब-सैटिसफेक्शन इन स्कूल टीचर्स, इंडियन जनरल आफ एप्लाइड साइकोलाजी, 8(1) 46-47.
- मैक-क्लीड़, आर0एन0 (1966) परसीसटेन्स इन टीचिंग एमंग मेल स्पेशल एरिया ग्रेजुएट इन एजूकेशन अनपब्लिसर्ड डाक्टरल थिसिस, यूनिवर्सिटी आफ मिनिसोटा.
- मैक-लेजीन, जे0 डब्लू सैटिसफेक्शन एण्ड शीआ, जे0टी0 (1960) कैलिफोर्निया टीचर्स जॉब डिससैटिसफेक्शन, कैलिफोर्निया जनरल आफ एजूकेशनल रिसर्च, 11, 216-224.
- यू0 झी0 चेन (1991) जॉब-सैटिसफेक्शन ऑफ इन्डस्ट्रीयल आर्ट्स टीचर्स इन सेकेन्ड्री स्कूल इन ताइवान, रिपब्लिक आफ चीना, पी0एच0डी0, लोआ स्टेट यूनिवर्सिटी डिजरटेशन एब्सट्रैक्ट इंटरनेशनल, 52 (4) 1991, 1234-ए.
- रच, लीनेईलीन (1990) द रिलेशनशिप बीटवीन पार्टीसीपेटिव डिसीजन-मेकिंग एण्ड जॉब-सैटिसफेक्शन आफ इलेमेन्ट्री, मिडिल एण्ड

सेकेन्ड्री पब्लिक स्कूल टीचर्स, इडी0 डी0 यूनिवर्सिटी आफ सानफ्रांसिको डिसरटेशन एब्सट्रेक्टस इंटरनेशनल, 51(4) 1990-1072-ए.

- रस्तोगी, आर0पी0 (1956) एनालीसिस आफ ए एट्टीटूव्डस आफ ट्रेनिंग कालेज स्टूडेन्टस टूअर्डस टीचिंग प्रोफेसन, एम0एड0 डिसरटेशन, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी.

- राईहल, पी0सी0 एण्ड सिंह के0 (1996) ए स्टडी आफ सरटेन कोरीलेट्स आफ जाब स्ट्रेस एमंग यूनिवर्सिटी फेकल्टी इंडियन साइकोलाजीकल रिव्यू 46 (162) 20-26.

- रार्बट, केरी ली (1983) इन एनालिसिस आफ द रिलेशनशिप आफ प्रिंसिपल्स लीडरशिप स्टाइल टू टीचर स्ट्रेस एण्ड जॉब रीलेटेड आउटकम : पी0एच0डी0 वाशिंगटन स्टेट यूनिवर्सिटी डिसरटेशन एबस्ट्रेक्ट इंटरनेशनल, 44 (07) 1994, 2002-ए.

- रिचार्ड, लारीऐलन (1990) रिलेशनशिप बीटवीन प्रेसीडेन्टीरियल लीडरशिप स्टाइल्स इन स्माल पब्लिक फोर-ईअर कालेजेज एण्ड जॉब-सैटिसफेक्शन जॉब-एनजाइटी, एण्ड जॉब परफारमेन्स एमंग ड्रीम्स आफ एकेडमिक एफेयरर्स, इडी0डी0 वेसट वरजीनिया यूनिवर्सिटी, डिसरटेशन एबस्ट्रेक्ट इंटरनेशनल 51 (11), 3586-3587.

- रीसो शीले ग्रीन (1985) टीचर जॉब-सैटिसफेक्शन एण्ड जॉब स्ट्रेस आफ अर्बन सेकेन्ड्री स्कूल फिजिकल एजूकेशन टीचर्स, पी0एच0डी0 द फ्लोरिडा स्टेट यूनिवर्सिटी डिसरटेशन एब्सट्रेक्टस इंटरनेशनल 47 (01) 1986, 120-ए.

- रूड, डब्लू0 जी0ए0 एण्ड वाइजमैन, एस0 (1962) सोर्स आफ डिस सैटिसफेक्शन एमंग ए ग्रुप आफ टीचर्स, ब्रिटिश जनरल आफ एजूकेशन्स साइकोलाजी, 32, 275-291.

- रूनी जैनिक मेक (1989) जॉब सैटिसफेक्शन आफ टीचर्स एण्ड एडमिनीस्ट्रेटर्स इन द कैथेलिक स्कूल्स आफ विचिता, इडी0, स्टेट यूनिवर्सिटी डिसरटेशन आन एब्सट्रेक्ट्स इंटरनेशनल 50 (11), 1990, 3437-38-ए.

- रूनी, जेनी में (1989) जॉब-सैटिसफेक्शन आफ टीचर्स एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन इन द कैथोलिक स्कूल्स आफ द डाइओसेस आफ विचित्तम इडी0डी0 अकोलाओमा स्टेस्ट यूनिवर्सिटी डिसरटेशन एब्सट्रेक्ट्स इंटरनेशनल 50 (11), 1990, 3437-38-ए.

- रेटिंग, एस0 एण्ड पसमनीक बी0 (1959) स्टेट्स एण्ड जॉब-सैटिसफेक्शन आफ पब्लिक स्कूल टीचर्स, एच0 एण्ड सो0 87, 113-116.

- रेयर्ड, ई0जे0 (1979) ए स्टडी आफ ए रिलेशनशिप बीवविन जॉब सेक्युरिटी, जॉब सैटिसफेक्शन एण्ड रोल इनवालमेन्ट आफ टीचर्स इन सेलेक्टेड पब्लिक सेकेन्ड्री स्कूल इन न्यूयार्क स्टेट, डिसरटेशन एब्स्ट्रेक्ट् इंटरनेशनल, 41 (1) 1980, 91-92-ए.

- रेड्डी, रामाकृष्णैया डी0 (1981) जॉब सैटिसफेक्शन आफ कालेज टीचर्स, जनरल आफ एजूकेशन एण्ड साइकोलाजी.

- रेड्डी ए0बी0आर0 एण्ड बब्जन ओ0 (1981) आर मैरिड टीचर्स मोर सैटिसफाइड वीथ देअर जॉब दैन अनमैरीड, इंडियन एजूकेशनल रिव्यू, 16(2), 15-18.

- रेड्डी के0के0 (1978) जॉब-सैटिसफेक्शन आफ टीचर्स अनपब्लिस्ड डिजरटेशन तिरूपति डीपारटमेंट आफ एजूकेशन, एस0वी0 यूनिवर्सिटी।

- रोड्स-आफ्ट एलिजाबेथ अन्न (1990) जॉब-सैटिसफेक्शन एमंग इयर्ली चाइल्डहूड एजूकेटर्स पी0एच0डी0, परियोजना स्टेट यूनिवर्सिटी डिसरटेशन एब्स्ट्रेक्ट इंटरनेशनल 50(7), 1991, 2262-ए.

- लाविगिया, के0यू0 (1974) ए स्टडी आफ जॉब-सैटिसफेक्शन एमंग स्कूल टीचर्स, पी0एच0डी0 अनपब्लिस्ड थिसिस इन एजूकेशन, गुजरात यूनिवर्सिटी.

- लोफलैण्ड, जी0डी0 (1985) द स्टडी आफ ए रिलेशनशिप वीटविन आर्गनाइजेशनल क्लाइमेट एण्ड जॉब-सैटिसफेक्शन आफ टीचर्स, इन सेलेक्टेड स्कूल्स इन द डिस्टिक आफ कोलम्बिया, इडी0 डी0 द जार्जवाशिंगटन यूनिवर्सिटी, डिसरटेशन एब्सट्रेक्ट्स इंटरनेशनल, 46(6), 1985, 1466-ए.

- वाली, एम0 नाथ (1984) ए फैक्टोरियल स्टडी आफ द कोरीलेट्स आफ टीचिंग इफेक्टीवनेंस, पी0एच0डी0 फेकल्डी आफ एजूकेशन, बी0एच0यू0

- वास्टन, लारी वाल्टर (1990) इन इनवेस्टीगेशन इटू द रिलेशनशिप वीटवीन जॉब सैटिसफेक्शन टेम्परामेन्ट टाइप एण्ड सेलेक्टेड डीमोग्राफिक वैरीएवल एमंग वेस्ट वरजिनिया, वोकेशनल एग्रीकलचर टीचर्स, इडी0 डी0 वरजिनिया पोलीटेकनिक इंस्टीट्यूट डिसरटेशन एब्सट्रेक्ट्स इंटरनेशनल, 52(1), 1991-58-59-ए.

- शांग, ग्रैस मेयजिंग (1990) एनएनालिसिस आफ द जॉब-सैटिसफेक्शन वैरीएबल्स एमंग स्टेट इंस्टीट्यूशनल स्पेशल एजूकेशन टीचर्स, पी0एच0डी0 यूनिवर्सिटी आफ साउथर्न मिसीसिपी डिसरटेशन एब्सट्रेक्ट् इंटरनेशनल 51(10), 1991-3386-ए.

- शेफर्ड, कैरलमैरी (1990) ए स्टडी आफ द रिलेशनशिप वीटवीन डिसीजन मेकिंग प्रोफेसनल जोन आफ एसेप्टेंन्स, जॉब-सैटिसफेक्शन एण्ड आर्गनाइजेशनल इफेक्टीवनेंस इन ए सेम्पल आफ न्यूजर्सी इलेमेन्ट्री टीचर्स,

इडी0डी0 सेटनहल यूनिवर्सिटी, स्कूल आफ एजूकेशन, डिसरटेशन एब्सस्ट्रेक्ट इंटरनेशनल, 51(7), 1991, 2227-ए.

- स्काट, चार्ल्स इडर्वाड (1978) टीचर्स परसेप्सन आफ लीडरशिप आफ प्रिंसिपल्स कम्पेयर्डस वीथ टीचर परसेप्सन आफ द लर्निंग क्लाइमेट इन सेलेक्टेड सेकेन्ड्री स्कूल्स : पी0एच0डी0, द लौसियाना स्टेट यूनिवर्सिटी एण्ड एग्रीकल्चर एण्ड मैकेनीकल कालेज, डिसरटेशन एब्सट्रेक्ट्स इंटरनेशनल 39(8) 1979, 4643-ए.
- सहाय, सरोज (1967) एन इनवेस्टीगेशन इन्टू द केसेज आफ डीससैटिसफेक्शन एमंग टीचर्स, एम0एड0 डिसरटेशन, दिल्ली यूनिवर्सिटी.
- सायदीन मेंहदी (1980) ए स्टडी आफ सैटीसफेक्शन एज मेजर्ड वाई द मिनिसोटा सैटिसफेक्शन क्वेसचननायर ऐज एप्लाइड टू सेलेक्टेड मेल एण्ड फिमेल वाकेशनल एण्ड टेक्निकल टीचर्स आफ इसफाहन, ईरान, डिसरटेशन आवस्ट्राक्ट्स इंटरनेशनल 41 (10), 1981, 4378-ए.
- साथ्यादास, डी0 (1979) ए कम्परेटिव स्टडी आफ द जॉब-सैटिसफेक्शन एण्ड टेम्परामेन्ट एप्लाइड साइकोलाजी, 16 (2), 8994.
- सिन्हा, वीना एण्ड प्रभात, आर0के0 (1993) जॉब-सैटिसफेक्शन ऐज ए फन्सन आफ एक्स्ट्रा वर्जन इन सेकेन्ड्री स्कूल टीचर्स, इंडियन जनरल आफ साइकोलाजी, 68 (384), 69-72.

- सिंह, हरभजन एल0 (1973) मेजरमेन्ट आफ टीचर बैलू एण्ड देअर रिलेशनशिप वीथ आट्टीच्यूड एण्ड जॉब-सैटिसफेक्शन, पी0एच0डी0 एजूकेशन वी0एच0यू0 वाराणसी.
- सिंह, बी0 (1986) टीचिंग काम्पीटेंस एण्ड एट्टीच्यूड टूअर्डस टीचिंग आफ प्रासपेक्टिव टीचर्स : इफेक्ट आफ टीचिंग माउल्स इंडियन एजूकेशनल रिव्यू0 21(4) 16-23.
- सोम्मरस, एन0एल0 (1986) फैक्टर्स, इनफलूऐनिसंग टीचर मोरल इन सेलेक्टेड सेकेन्ड्री स्कूल्स, अनपब्लिस्ड डाक्टरल थिसिस, केन्ट स्टेट यूनिवर्सिटी.
- हरऊड, विलियन (1986) द रिलेशनशिप वीटवीन्स जॉब-सैटिसफेक्शन एण्ड लाइफ सैटिसफेक्शन आफ एजूकेटर्स इन अर्बन पब्लिक स्कूल सिस्टम पी0एच0डी0, यूनिवर्सिटी आफ न्यू आरलेन्स, डिसरटेशन एब्सट्रैक्टस इंटरनेशनल, 47(7) 1987, 2378-ए.
- हर, डाइनलेसी (1990) टीचर जॉब सैटिसफेक्शन एण्ड इनवाल्वमेन्ट इन स्टाफ डेबलमेन्ट प्रोग्राम्स. (वैलूम 1 एण्ड 2) पी0एच0डी0, यूनिवर्सिटी आफ मिनोसोटा डिजरटेशन एब्सट्रैक्ट्स इंटरनेशनल, 51 (11), 1991, 3557-ए.

- हब्बासी मनौचर (1980) ए स्टडी आफ टीचर्स जॉब सैटिसफेक्शन इन इरान एण्ड टीचर्स एण्ड रिलेशनशिप आफ द डाइमेन्सन आफ द टीचर्स जॉब-सैटिसफेक्शन एण्ड द पैटर्न आफ प्रिंसपल्स मैनेजेरियल बीहैवियर एज परसीवेड बाई द टीचर्स, डिसरटेशन एब्सटेक्ट्स इंटरनेशनल, 1981, 41(10), 4233-ए.

- हटचर्सन शीर्ली जीन (1981) द रिलेशनशिप आफ द जॉब-सैटिसफेक्शन आफ क्लासरूम टीचर्स टू स्टूडेन्ट परसेप्सन आफ क्लासरूम सैटिसफेक्शन इडी0 द यूनिवर्सिटी आफ नेबारास्का लीकन, डिसरटेशन एब्सस्ट्रेक्ट इंटरनेशनल, 42 (19), 1982, 3826-ए.

- हॉलैण्ड आर0एम0 (1968) टीचर पर्सनालिटी आर्गनाइजेशनल क्लाइमेट एण्ड टीचर जॉब सैसिफेक्शन, डिसरटेशन एब्सट्रेक्ट्स इंटरनेशनल 29, 437-ए.

- हानसेन, ओ0 डब्लू0 एण्ड स्टेनले, जी0एम0 (1969) ए स्टडी आफ द मोटीवेशन आफ हाईस्कूल टीचर अनपब्लिस्ड डाक्टरल थिसिस, यूनिवर्सिटी आफ कैलीफोर्निया.

- हेऊड, जेराल्ड डोनाल्ड (1980) द रिलेशनशिप आफ जॉब-सैटिसफेक्शन एण्ड पर्सनल कैरेटीरिक्कस आफ सेकेन्ड्री स्कूल टीचर्स इन जर्जिया, इडी0डी0 यूनिवर्सिटी आफ जार्जिया डिसरटेशन एब्सट्रेक्ट्स इंटरनेशनल, 41(4) 1980, 1309-ए.

- हेवेन्स 1963 द रिलेशनशिप आफ आर्गनाइजेशनल एसपेक्ट एण्ड पर्सनल कैरेटीरिक्टर्स आफ टीचर जॉब-सैटीसफेक्शन अनपब्लिस्ड डाक्टरल थिसिस, स्टेनफार्ड यूनिवर्सिटी.
- हैमलिन, एम0ए0 (1967) रिलेशनशिप वीटवीन्स आर्गनाइजेशनल क्लाइमेट आफ इलेमेन्ट्री स्कूल्स एण्ड द डिग्री आफ जॉब-सैटिसफेक्शन आफ टीचर्स इन द स्कूल. डिसरटेशन एब्सट्रेक्ट्स इंटरनेशनल 38, 76-77-ए.
- होपॉक (1935) जॉब-सैटिसफेक्शन न्यूयार्क : हापर.

परिशिष्ट

'व्यवसाय–संतुष्टि मापनी'

निर्माणकर्त्री
डा० मीरा दीक्षित
(लखनऊ)

निर्देश :

इस प्रश्नावली का उद्देश्य आपके उन विचारों को प्राप्त करना है जो आप अपने व्यवसाय के सम्बन्ध में रखते है। आप अपने वर्तमान व्यवसाय से कितने संतुष्ट है, इस प्रश्नावली के द्वारा इस बात का पता लगाने का प्रयास किया गया है। इसमें अध्यापन कार्य में सम्बन्धित कुछ कथन है। कृपया इन्हें ध्यान से पढ़कर, भली–भाँति सोचकर अपनी सहमति या असहमति प्रकट कीजियेगा।

प्रत्येक कथन को पढ़कर आपको ऐसा लग सकता है कि आप इससे पूर्णतः सहमत हैं (SA) या केवल सहमत हैं (A) इससे आप पूर्णतः असहमत हों (SD) इसकी भी सम्भावना है कि आप तय न कर पायें कि इससे सहमत है या असहमत और इस परिस्थिति में आप अनिश्चित होगें (U)। उत्तर–पत्र में इन्हीं पाँचों में एक को चुनकर आपको (✓) सही चिन्ह लगाना है। सही चिन्ह लगाने के लिए खाने बने हुए है। प्रत्येक खाने के ऊपर SA, A, U, D और SD लिखा हुआ है। आपको अपने विचारों के अनुसार इन्हीं में से एक में सही (✓) का चिन्ह लगाना है।

आपके उत्तर पूर्णतः गोपनीय रखे जायेंगे। अतः निःसंकोच होकर उत्तर दें:–

S.A.	Strongly Agree	:	पूर्णतः सहमत
A	Agree	:	सहमत
D	Disagree	:	असहमत
SD	Strongly Disagree	:	पूर्णतः असहमत
U	Undecided	:	अनिश्चित

क्रमांक	कथन
1.	आप स्वभाव से अध्यापन के लिए उपयुक्त है।
2.	आपका विद्यालय अपने कार्य के लिए उचित स्थान रखता है।
3.	आपका वेतन आपके कार्य के अनुसार उचित है।
4.	आपकी संस्था शिक्षकोन्मुख है।
5.	आप अनुभव करते है कि आपकी संस्था के प्रधान अपने पद के लिए उपयुक्त है।
6.	आपकी संस्था के सभी शिक्षक/शिक्षिकाएं आपस में सहयोग की भावना से कार्य करते है।
7.	विद्यार्थी आपका आदर करते है।

8. इस व्यवसाय में होने के नाते आपका समाज में समुचित स्थान है।

9. आपका व्यवसाय आपके बच्चों या आपके आश्रितों को उचित शिक्षा दिलाने में सहायक है।

10. आपकी संस्था एक साफ सुथरा स्थान है, जहाँ कोई भी कार्य करना पसन्द करेगा।

11. आप अध्यापन में आनन्द का अनुभव करते हैं।

12. आपके व्यवसाय में पदोन्नति के अवसर है।

13. आपको अपनी संस्था की योजनाओं में सलाह दिये जाने के अवसर दिये जाते हैं।

14. आपकी संस्था का प्रधान एक निष्पक्ष व्यक्ति है।

15. आपकी कक्षा में पठन-पाठन का कार्यक्रम सुचारू रूप से चलता है।

16. आप अपने सह शिक्षकों के साथ अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने में सक्षम है और उनके साथ सुखद सामंजस्य अनुभव करते हैं।

17. आपके मित्र और सम्बन्धी आपके व्यवसाय को सम्मान देते है।

18. आपको अपने परिवार की देखभाल करने का पूरा अवसर मिलता है।

19. आपके व्यवसाय में नियमित अध्यापन कार्य के अतिरिक्त कार्य करने पर अतिरिक्त धन मिलने की व्यवस्था है।

20. आपकी संस्था की कार्य अवधि आपके लिए उपयुक्त है।

21. आपकी संस्था के प्रधान आपकी व अन्य लोगों की भलाई में रूचि लेते हैं।

22. एक शिक्षक होने के नाते आपके विद्यार्थी आपको पसन्द करते हैं।

23. आप अपनी आमदनी से जो रहन-सहन का स्तर बनाने में सक्षम हैं वह आपको सुविधाजनक लगता है।

24. आपकी कक्षाओं में प्रकाश व हवा की उपयुक्त व्यवस्था है।

25. आप अवकाश के समय में अधिक अपने कार्य में आनन्द का अनुभव करते हैं।

26. आपको अपना कार्य नियोजित करने में पूर्ण स्वतंत्रता है।

27. आप अपनी संस्था के प्रधान का अन्य शिक्षकों के साथ को पसन्द करते हैं।

28. आपकी संस्था की प्रयोगशाला में उचित उपकरण है।

29. अवसर मिलने पर इसी वेतन में आप दूसरे व्यवसाय में जाना पसन्द करेंगे।

30. आपके महाविद्यालय में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के बीच अच्छे सम्बन्ध है।

31. जब तक आप ठीक से कार्य करते हैं, आपका व्यवसाय सुरक्षित है।

32. आपको अपने बड़ों के द्वारा अच्छे कार्य की सराहना मिलती है।

33. आपके अपने छात्रों के अभिभावकों से सम्पर्क करने के उचित अवसर मिलते है।

34. छात्र व शिक्षक का अनुपात आपकी कक्षा में ऐसे नियम के अनुसार है कि आप पर अपने कार्य का अधिक बोझा नहीं पड़ता।

35. अध्यापन व्यवसाय का भविष्य उज्जवल है।

36. आपकी संस्था की पुस्तकालय में आपके लिए पुस्तकें सदैव उपलब्ध है।

37. आपके सहयोगी आवश्यकता पड़ने पर आपकी सहायता करने को सदैव तत्पर है।

38. आपका महाविद्यालय दूसरे के लिए अनुशासन एवं शैक्षिक उपलब्धियों का एक उदाहरण है।

39. आप अपने छात्रों के चरित्र-निर्माण व अध्ययन की अच्छी आदतें विकसित करने में वास्तव में सहायक सिद्ध होते है।

40. पढ़ायी के साथ-साथ आपके विद्यालय में खेल-कूद में भाग लेने के लिए आपको उचित अवसर मिलता है।

41. आप अपनी संस्था के प्रधान के द्वारा दूसरों की शिकायतें सुनने व उन पर निर्णय लेने के तरीकों को पसन्द करते हैं।

42. आपके सहयोगी आपको अपने समान समझते है।

43. आपकी कक्षाएं आवश्यकतानुसार सुसज्जित है।

44. आपके सहयोगी आपके महाविद्यालय के महत्वपूर्ण कार्यो का उत्तरदायित्व देना पसन्द करते हैं जिससे आप गौरव का अनुभव कर सकें।

45. यह अच्छा है कि आपके व्यवसाय में अक्सर स्थानान्तरण नहीं होते हैं।

46. आपको, अपनी व्यावसायिक योग्यता बढ़ाने के उचित अवसर दिये जाते हैं।

47. खेल-कूद के अतिरिक्त अन्य पाठ्यक्रम सह क्रियाओं में भी आपको भाग लेने के उचित अवसर मिलते हैं।

48. श्रव्य-दृश्य उपकरण आपके प्रयोग के लिए सदैव उपलब्ध हैं।

49. आपको अपने विद्यालय में पहुँचने में कोई असुविधा नहीं होती हैं।

50. अवकाश प्राप्त के पश्चात् मिलने वाली सुविधाएं उपयुक्त है।

51. आपकी संस्था की कक्षाओं में छात्रों की संख्या के अनुसार उपयुक्त जगह है।

52. आप अपने व्यवसाय में गरिमा का अनुभव करते है।

उत्तर-पत्र

अध्ययन में सम्मिलित शिक्षकों का विवरण

1. नाम .... 2. लिंग..

3. ज़ाति... 5. अवस्था......................................

5. संस्था का नाम............................ 6. आवासीय स्थिति–

शहरी/ग्रामीण...............................

S.A. = Strongly Agree : पूर्णतः सहमत

A = Agree : सहमत

U = Undecided : अनिश्चित

D = Disagree : असहमत

SD = Strongly Disagree : पूर्णतः असहमत

क्र.सं.	SA	A	U	D	SD
1.					
2.					
3.					
4.					
5.					
6.					
7.					
8.					
9.					

क्र.सं.	SA	A	U	D	SD
10.					
11.					
12.					
13.					
14.					
15.					
16.					
17.					
18.					